CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महामानव
महावीर

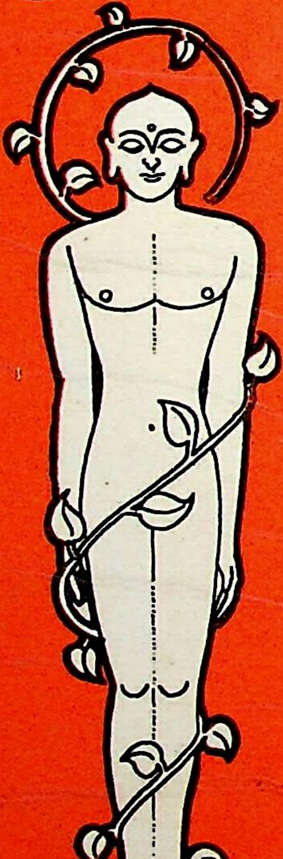

गुणवंत शाह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महामानव महावीर

डॉ० गुणवंत शाह
अनुवादक
डॉ० भानुशंकर मेहता

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

MAHAMANAV MAHAVIR

(Biographical Essay)

by

Shah Gunvant

© AVANTIKA G. Shah

11. Mangal moorti, Kadambapalli Road
Surat-395001

प्रथम संस्करण : १९८७ ई०

मूल्य : तीस रुपये

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

मुद्रक

शोला प्रिण्टर्स, लहरतारा, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्पण

आदरणीय मित्र

श्री रोहित मेहता

तथा

श्रीमती श्रीदेवी मेहता

को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आभार

—मेरे मित्र किरीटभाई चोकसी का तथा बुजुर्गवार श्रीकुसुमचन्द्र झवेरी का—मुझे महावीर की बावत लिखने के लिये प्रामाणिक सामग्री प्रदान करने हेतु।

—आकाशवाणी से, महावीर जयन्ती के अवसर पर प्रसारित तीन वार्ताओं को इस पुस्तक में समाहित कर लिया है। इसके अलावा मुम्बई जैन युवक संघ की ओर से आयोजित पर्युषण व्याख्यान माला में कही हुई कितनी ही बातों का भी समावेश किया है। आकाशवाणी और मुम्बई जैन युवक संघ का ऋणी हूँ। मेरे प्रिय पाठक श्री चीमनलाल जे० शाह का आभारी हूँ।

—डॉ० रमणलाल शाह का अत्यन्त उपकृत हूँ। मेरे इस प्रयास को प्रोत्साहन देने के हेतु।

—स्व० श्री रणछोड़ भाई पटेल का खास आभारी हूँ। उनकी सूचनाएँ मेरे लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं चाहती हूँ कि वे
युद्ध के बदले
शांति की घोषणा करें !

—ग्यारह वर्ष की एक बालिका
द्वारा लिखी कविता की पंक्तियाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महावीर के धर्मबोध का हृदयंगम आस्वाद

अपने मित्र डा. गुणवन्त शाह की इस पुस्तक 'महामानव महावीर' का स्वागत करते हुए मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है।

डा० गुणवन्त शाह हमारे मौलिक चिन्तकों में एक हैं। पूर्व और पश्चिम के साहित्य के व्यापक अध्ययन और मनन से उनकी प्रतिभा का निर्माण हुआ है। अपने विचारों को स्पष्ट और सचोट भाषा में अभिव्यक्त करने की उनके पास अनोखी शैली है। विभिन्न दैनिक पत्रों में उनके ताजगी भरे लेख हमें नियमित रूप से मिलते हैं।

डा० गुणवन्त भाई शाह ने भगवान बुद्ध के जीवन और कार्य के विषय में 'करुणा मूर्ति बुद्ध' नामक पुस्तक प्रदान की और अब उसके बाद भगवान महावीर और उनके सिद्धान्तों के बिषय में समय समय पर लिखे भिन्न भिन्न लेखों के संग्रह के रूप में हमें यह पुस्तक प्रदान की है। हमारे चिन्तन साहित्य में इस पुस्तक द्वारा मूल्यवान संवृद्धि हुई है।

जगत के सभी जीवों में विद्यमान आत्मा शुद्ध आत्मतत्त्व की दृष्टि से समान है, परन्तु धारण की हुई देह की दृष्टि से सभी जीव एक जैसे नहीं है। इन्द्रियों और मस्तिष्क के विकास की दृष्टि से जीवों का वर्गीकरण किया जाता है। समस्त जीव-सृष्टि में मनुष्य सबसे ऊपर है, पर सभी मनुष्य बाह्य और आन्तरिक जीवन की दृष्टि से एक जैसे नहीं है। पाले हुए पशुओं से भी बदतर जीवन जीते आदमी हमें संसार में देखने को मिलते हैं। दूसरी ओर आत्मा की अनुपम शक्ति को विकसित करके जीवन को उच्च आदर्श तक पहुँचाने वाले महात्मा भी दिखायी पड़ते हैं। शिक्षक, अर्थशास्त्री, समाजसेवी, खिलाड़ी, फिल्म अभिनेता, राजनीतिज्ञ पुरुष, धर्माचार्य के रूप में अर्थात् अपने अपने क्षेत्र की दृष्टि से अत्यन्त सफल जीवन कितने ही जीते हैं। कितनों की लौकिक सिद्धियाँ महान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होती हैं तो कितनों की आध्यात्मिक सिद्धियाँ। किसी विरले महात्मा की लौकिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की सिद्धियाँ महान होती हैं। उच्चतर या आध्यात्मिक सिद्धियाँ प्राप्त करनेवाले महामानवों के लिए भी संत, महंत, धर्माचार्य, आध्यात्म योगी, सिद्ध पुरुष, जगद्‌गुरू, अवतार, भगवान, तीर्थंकर जैसी भिन्न भिन्न श्रेणियाँ भिन्न भिन्न धर्मों की दृष्टि से की जा सकती हैं। जैन धर्म की मान्यता के अनुसार जीव का आध्यात्मिक दृष्टि से चरमकोटि का विकास अरिहंत का अर्थात् तीर्थंकर का हुआ है। संसार सागर में से जो स्वयं तैरकर पार जाता है और संसार के अनेक लोगों को तारता है ऐसे तीर्थंकर के विविध गुण-लक्षण 'अतिशय' दर्शाये जाते हैं। जैनों के चौबीस तीर्थंकरों में चरम तीर्थंकर हैं भगवान महावीर। ढाई हजार वर्ष से भी पहले उनको निर्वाण प्राप्त हुआ। भगवान बुद्ध से पूर्व-समकालीन भगवान महावीर ने मानवता के कल्याण के लिए जो बोध दिये हैं उनमें से बहुत कुछ जैन आगम ग्रन्थों में संचित हैं और हमें उपलब्ध है। आगम ग्रन्थों के दोहन से प्राप्त 'समण सुत्त' नामक ग्रन्थ को आधार बनाकर डा० गुणवन्त भाई शाह ने भगवान महावीर की अमर वाणी के कितने ही अनमोल तत्त्वों की वर्तमान सन्दर्भ में सुन्दर छानबीन इस ग्रन्थ के लेखों में मनोहर शैली में की है।

जैन मान्यता के अनुसार तीर्थंकर परमात्मा कोई ग्रन्थ नहीं लिखते, लेकिन वे जो उपदेश करते हैं उन्हें उनके गण, मुख्य शिष्य, शब्दबद्ध कर लेते हैं। लगभग साढ़े-बारह वर्ष के दौर में भगवान महावीर ने राजकुटुम्ब के वैभव को स्वेच्छा से त्याग कर, वस्त्र या पात्र तक छोड़कर, एक स्थान से दूसरे स्थान तक विचरण करते हुए, निःसंग बनकर अधिकतर मौन और ध्यान में रहकर सतत तपश्चर्या की। इसके फलस्वरूप जीव और जगत के कल्याण के वास्ते जो अमोघ सत्य उन्होंने प्राप्त किया वह उन्होंने जगत के चरण में अर्पित किया। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और परिग्रह इन पाँच महाव्रतों का जीवन में आचरण करने और अनेकांतवाद को जीवन में उतारने के लिए नयी दृष्टि प्रदान की। यदि कोई व्यक्ति प्रामाणिक रूप से निष्ठापूर्वक आत्मा की तमाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शक्तियों को पुष्पित करके जीवन में ये व्रत और दृष्टि उतार सके तो उसका जीवन धन्य और सफल हो जाय। उसका प्रभाव आसपास के जीवन पर पड़ेगा। परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में शान्ति और संवादिता स्थापित हो और समग्र जगत सुख का अनुभव करे। इन तत्त्वों में उन्होंने अहिंसा को सर्वोपरि स्थान प्रदान किया। वस्तुतः एकदम आरम्भ में भगवान ऋषभदेव के समय से ही अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया जा रहा है। लेकिन भगवान महावीर स्वामी के समय में यज्ञों में बड़ी संख्या में हो रही पशुहिंसा के कारण भगवान महावीर का उपदेश विशेष रूप से ध्यानाकर्षक बना था। अहिंसा की बात कहते हुए उन्होंने सरल लेकिन तुरन्त हृदय में बस जाय ऐसा एक तर्क प्रस्तुत किया कि सभी जीवों को जीना अच्छा लगता है, किसी को मरना अच्छा नहीं लगता, अस्तु किसी भी जीव की हत्या करना बड़े से भी बड़ा पाप है। भगवान महावीर ने अपने समय के लोगों और संसार के सामान्य कोटि के जीवों को ध्यान में रखकर 'प्रेम' या 'करुणा' शब्द का उपयोग न करके, सबको फौरन समझ में आजाय ऐसे निषेधात्मक शब्द अहिंसा का उपयोग किया।

डॉ० गुणवंत भाई शाह ने इस पुस्तक के प्रकरणों में जैनधर्म के अहिंसा, अपरिग्रह, कर्मवाद, स्याद्वाद, शाकाहार आदि विषयों की विशद, तर्कयुक्त, प्रमाण सहित छानबीन की है। इनमें जैसे 'समणसुत्त' में से उद्धरण लिये गये हैं वैसे ही पूर्व और पश्चिम के चिन्तकों और वैज्ञानिकों के अभिप्राय भी अंकित किये गये हैं। इससे जनसामान्य में फैले कितने ही मिथ्या प्रवादों का निरसन हो जायगा।

लेखक ने भगवान महावीर और जैनदर्शन के साथ-साथ हिन्दू-दर्शन और बौद्ध-दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन भी किया है और कितने ही पारिभाषिक शब्दों के परस्पर पर्याय भी दिये हैं।

इस पुस्तक के सभी प्रकरणों में अहिंसा धर्म की विशेष रूप से मीमांसा हुई है। प्राचीन सामाजिक और धार्मिक सन्दर्भ तथा अर्वाचीन सामाजिक और वैज्ञानिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन्दर्भ में अहिंसा की आवश्यकता वल्कि अनिवार्यता समझकर उन्होंने अहिंसा धर्म की परम महिमा प्रदर्शित की है। वे 'अहिंसा का नया विज्ञान' नाम प्रकरण में लिखते हैं :

'घड़ी भर को विज्ञान की ऐसी कठिन परिभाषा भूलकर भी इतना कहा जा सकता है कि अहिंसा को अत्यन्त सूक्ष्म, विश्वव्यापी और वैज्ञानिक सन्दर्भ में समझने के दिन आ रहे हैं।'

'ब्रह्माण्ड के दिव्य गुंजन' शीर्षक प्रकरण में गुणवंत भाई लिखते हैं :

'इसमें चींटी की चेतना का स्वीकार है और चींटी की चेतना के निमित्त से विश्वव्यापी चेतना का अभिवादन है। महावीर ने ऐसे स्थूल और सूक्ष्म, व्यापक और गहन, भौतिक और मानसिक अभिवादन की महिमा ढाई हजार वर्ष पहले कही थी। अहिंसा का ऐसा विज्ञान प्रचलित करने का, लोगों तक पहुँचाने का काम उन्होंने किया। अहिंसा को विज्ञान का दर्जा प्राप्त हुआ इसमें महावीर का अवदान अनन्य माना जाना चाहिए। अहिंसा को जैन-धर्म में 'परम धर्म' कहा है, उसे ऐसे व्यापक सन्दर्भ में न देखें तो अहिंसा की अवधारणा न समझने के बराबर है। आज भी जैन साधुओं का प्रयत्न इसी प्रकार जीने का होता है जिससे ब्रह्ममाण्ड में कम से कम व्यवधान हो और गुंजन की लय टूटे नहीं। प्रदूषण के कारण, शोरगुल के कारण, युद्ध के कारण और परिग्रह के कारण लय बिखरती है। सच्चा जैन ऐसा न हो इसकी सतत सावधानी रखकर जीने की चेष्टा करता है। जीवमात्र के जीने के हक का ऐसा स्वीकार यह जैन-दर्शन की मौलिकता है। संसार के किसी और धर्म में ऐसी स्वीकृति को 'परम धर्म' का दर्जा नहीं मिला है।

किसी भी धर्म को जब जीवन में उतारा जाता है तब उसके अनुयायियों या नेताओं में कितनी ही मर्यादाएँ एक या दूसरे दृष्टिकोण से तटस्थ अधिकारी समीक्षक को दिख ही जाती हैं। जैनों की भी कितनी ही मर्यादाएँ हो सकती हैं। लेखक ने इस बावत कहीं-कहीं बड़े मार्मिक ढंग से इंगित किया है। इसके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बावजूद जैन शासन किस प्रकार हमेशा विजयवान रहता है, इसकी उन्होंने अन्तिम प्रकरण में राज्य शासन और धर्म शासन की तुलना करके सुन्दर ढंग से चर्चा की है। वे लिखते हैं :

"जैनों का प्रिय सूत्र है 'जैनं जयति शासनम्', इसी प्रकार बौद्ध विचारधारा में बुद्ध का 'अनुशासन' सुख्यात है। सामान्यतः शासन के साथ भय, तनाव, हिंसा, बरजोरी और युद्ध अपने आप चले आते हैं। क्या महावीर और बुद्ध का शासन ऐसा भेड़चाल हो सकता है? तो फिर जिन-शासन के लक्षण क्या हो सकते हैं? इस शासन का अर्थ है प्रेम, करुणा और अहिंसा का शासन। ऐसा अनोखा शासन ही आज की दुनियाँ को रिझा सकता है और विदग्ध जीवों को चंदनलेप की शीतलता का अनुभव करा सकता है। ऐसे शासन में शासक कौन हो सकते हैं? ऐसा शासन करनेवाले यदि राजा, नेता या राजनीतिज्ञ हुए तो फिर गये काम से। प्रेम, करुणा और अहिंसा का शासन माने अर्हतों का, सिद्धों का, आचार्यों का, उपाध्यायों का और सभी साधुओं का शासन।"

जैन नित्यप्रति नवकार मन्त्र का जो पाठ करता है उसमें इन पाँचों परमेष्ठि को नमस्कार है। तीनों जगत के तीनों काल के उत्तम आत्माओं को किया जाता यह नमस्कार पापनाशक और सर्वमंगलों में प्रथम मंगलरूप माना जाता है।

ऐच्छिक और पारमार्थिक, लौकिक और पारलौकिक जीवन को सफल तथा सार्थक बनाने के लिए भगवान महावीर द्वारा उपदेशित धर्म, वर्ण और जातिभेदों को लाँघकर, स्थल और काल की मर्यादाएँ पारकर हम तक आ पहुँचा है, यह हमारा परम सद्भाग्य है। इस धर्म के कितने ही तत्त्वों की सुन्दर छानबीन करनेवाली इस पुस्तक का मैं अभिवादन करता हूँ और इस हेतु गुणवंत भाई को धन्यवाद देता हूँ।

मुंबई

–रमणलाल ची० शाह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रस्तावना

महामानव किसे कह सकते हैं ? मुझे कुछ ऐसा उत्तर मिलता है : मानव-कल्याण के प्रति जिसका बुनियादी दर्शन कभी अनद्यतन न बने उसे महामानव कह सकते हैं । तथ्य और वाह्याचार भले बदल जायँ पर बुनियादी बात कभी बासी नहीं होती । ऐसी बुनियादी बात के प्रत्यक्षीकरण को दर्शन कह सकते हैं । महावीर को, 'महामानव' कहने के पीछे यही आशय विद्यमान है ।

इस पुस्तक में जैन दर्शन की तात्त्विक छानबीन नहीं की गयी है । ऐसा करने का मुझे अधिकार भी नहीं है । ज्वालामुखी के दहाने पर बैठी मानव-जाति की आज की बेचैनी का समाधान अहिंसक समाजरचना की ओर कदम उठाने में है । इस समय तक परिस्थिति यह थी कि सशस्त्र सैनिकों के समक्ष जनता या तो निःशस्त्र होती या फिर उनसे हल्के शस्त्र धारण करती थी । अब सैनिकों के पास होती है ऐसी ही स्टेनगन, वायरलेस और हेलीकाप्टर आतंकवादियों और तस्करों के पास भी होते हैं । किसी देश के अनचाहे नेता को मार डालने का कॉन्ट्रैक्ट (ठेका) ले सके ऐसी माफिया टोलियाँ विश्व की राजनीति को पीस रही हैं । आज पन्द्रह बार समूची पृथ्वी का विनाश कर सके ऐसे करीब ६०,००० हाइड्रोजन बम तैयार हैं, यह हालत है । महासत्ताओं के बीच सत्ता के संतुलन के गन्दे समीकरण तैयार होते रहते हैं । एक छोटी सी भूल, समूची जीवन सृष्टि का अन्त कर सकती है ।

ऐसे समय महावीर का दर्शन कभी भी नहीं था इतना सार्थक बन जाता है । महावीर की विभूतिमत्ता इतनी तो गहन और विराट है कि वह केवल जैनों तक सीमित न रह कर विश्वव्यापी और मानवीय बन गयी है । मेरी पुस्तक का गुरुत्व मध्य-बिन्दु यही है । आइजेक ओसिमोव की बात एकदम सत्य है 'हिंसा कायर मनुष्य का अन्तिम आश्रय स्थल है ।'

एक लघुमानव की ओर से इस जगत के वन्दनीय महामानव को अर्पित अंजलि के रूप में यह पुस्तक पढ़ने की विनती के साथ मैं विश्राम लेता हूँ ।

—गुणवंत शाह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम

१. विश्व वाटिका का महमहाता मानव पुष्प	३
२. महावीर : २५०० वर्ष बाद	८
३. विश्वशान्ति की व्यूह रचना	१४
४. सच्ची विजय के लिये जीवन-साधना	२०
५. अमीबा से आदम तक	३१
६. अहिंसा का नया विज्ञान	३६
७. ब्रह्माण्ड का दिव्यगुंजन	४२
८. वैदिक, जैन और बौद्ध दर्शन के तत्त्व	४८
९. स्याद्वाद और अनेकान्त	५६
१०. महावीर और देहदमन	६३
११. जिनमार्ग में अपरिग्रह और कर्म	७०
१२. अहिंसक समाज रचना और शाकाहार	७६
१३. महावीर से महात्मा गांधी तक	९१
१४. जैनं जयति शासनम्	१०१
परिशिष्ट :	
१. महावीर की अंतर्यात्रा	१०५
२. पशु-पक्षी बोल पाते तो	११३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'द थर्ड मैन' नामक पुस्तक में हैरी लाइम ऊँची चरखी के सिरे पर से नीचे जमी भीड़ पर नजर डालता है। मानवी बूंदे हिलती हुई देखकर कहता है, 'इनमें से एकाध बूंद हिलने से रुक जाय तो क्या फर्क पड़ेगा।'

जवाब का आधार हमारी संवेदन-शीलता पर निर्भर है। आज से साढ़े-तीन सौ वर्ष पूर्व ज्हॉन डॉन ने कहा था—'किसी भी मनुष्य की मृत्यु मेरे (अस्तित्व) को घटाती है।' सम्भव है कि, ज्हॉन डॉन को जो अनुभूति मनुष्य की मृत्यु की बाबत हुई वैसी ही अनुभूति, संवेदन-शीलता की चरम सीमा पर पहुँचने के बाद महात्मा को, प्रत्येक जीव की हिंसा के प्रति हो। भगवान महावीर संवेदनशीलता की ऐसी चरम-सीमा पर पहुँचे होंगे, इसके बाद ही उन्हें अहिंसा के परम धर्म का साक्षात्कार हुआ होगा। आत्म-अनुभूत दर्शन को करुणापूर्वक सामान्य जनतक पहुँचाने के लिये इस महामानव के हम सब उपकृत हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विथ द स्प्लिटिंग ऑफ ऐटम, एवरीथिंग हैज चेंज्ड सेव अवर मोड ऑफ थिंकिग। दस वी हर्ल अवरसेल्वस् टुवर्ड्स अनपैरेलेल्ड कैटास्ट्राफी।

—अलबर्ट आइन्स्टीन

परमाणु विखण्डन के साथ ही सब कुछ बदल गया है, सिवा हमारे सोचने के ढंग के। इस प्रकार हमने अपने आपको अभूतपूर्व विनाश की ओर झोंक दिया है।

—अलबर्ट आइन्स्टीन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्ववाटिका का महमहाता मानव पुष्प

कभी-कभी आश्चर्य होता है। भारतवर्ष में ऐसा क्या है कि यहाँ महावीर जैसे मानवपुष्प खिल सकते हैं और सदियों को महकती रक्खें ऐसी सुगन्ध बिखेर जाते हैं ? एक उत्तर मिलता है। यह एक ऐसा देश है जहाँ आदमी विचार करता रहा है। बस विचार ही करता रहा है। विचार की इतनी गहरी जुताई, सतत् इतनी सारी सदियों तक, अन्य किसी भूमि में नहीं हुई है। अस्तित्व की जड़ें, उनका स्वभाव, उनका रसायन और उनका रहस्य पाने की प्रखर जिज्ञासा को यहाँ ब्रह्म-जिज्ञासा का दरजा प्राप्त हुआ है। ऐसी बुनियादी जिज्ञासा ही सभी धर्मों की गंगोत्री है और अनेक विचारधाराओं के समन्वय का संगम-तीर्थ है—प्रयाग। माल्कम मुगेरीज् ने तो भारत के बारे में कहा है कि इस देश में विचार करने को स्थगित करना संभव नहीं है। अमेरिका में रंगभेद के विरुद्ध गाँधी के ढब से सत्याग्रह करके मौत को भेंटने वाले मार्टिन ल्युथर किंग जूनियर जब भारत आये, तब उन्होंने कहा था, 'अन्य देशों में मैं प्रवासी (टूरिस्ट) के रूप में गया हूँ पर यहाँ तो मैं यात्री (पिलग्रिम) के रूप में आया हूँ।' महावीर इस देश में न प्रगटे होते तो फिर और कहाँ प्रगट होते ?

भारतीय संस्कृति किसी एक धर्म या जाति की उपज नहीं है। यह तो एक ऐसा गुलदस्ता है जिसने विविध रंग के, विविध रूप के और साथ ही विविध सुगन्ध के अनेक पुष्प-गुच्छों के कारण अनोखी रमणीयता प्राप्त की है। यहाँ धार्मिक संकुचितता और दलबन्दी बहुत है, परन्तु सभी धर्मों की विशिष्टताओं को अपने उदर में समेट कर सदियों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के संग बहती रही भारतीय संस्कृति के स्वभाव में तो उदारता ही रही है। हिन्दुओं ने बुद्ध को नौवें अवतार के रूप में स्वीकार किया और फिर शंकराचार्य को 'प्रच्छन्न बुद्ध' कहा। जिन धर्म का प्राणतत्त्व के समान 'अहिंसा परमो धर्मः' मन्त्रवाक्य, महाभारत में भी आता है। 'निर्वाण' शब्द जैन दर्शन में, बौद्ध दर्शन में और हिन्दू दर्शन में भी मिलता है। 'शीख' शब्द मूलतः 'शिष्य' में से निकला है। अमृतसर के सुवर्ण मन्दिर का भव्य दरवाज़ा वास्तव में गुजरात के सोमनाथ मन्दिर का दरवाजा है। सोमनाथ लुटा उसके बाद यह दरवाजा अफ़गानिस्तान पहुँचा। महाराज रणजीत सिंह ने उसे पुनः प्राप्त किया और सोमनाथ पहुँचाया पर पुजारियों ने उसे 'अपवित्र' बताकर वापस कर दिया। रणजीत सिंह ने अद्भुत कारीगरी वाले उस स्वर्ण मण्डित दरवाजे को अमृतसर के सुवर्ण मन्दिर के द्वार पर लगवा दिया। इस्लाम का नवनीत सूफीसन्तों ने निथार लिया और 'अनहलक' (अहं ब्रह्मास्मि) का उद्घोष किया। ऐसा कहने वाले मुस्लिम सन्त मंसूर को सूली पर लटकना पड़ा।

श्वेताश्वतर ऋषि ने हमें श्वेताश्वतर उपनिषद् दिया। 'श्वेताश्वतर' शब्द का अर्थ है 'सफेद खच्चर जुते हों ऐसी गाड़ी वाले आचार्य।' पश्चिम के लेखकों की मान्यता के अनुसार जरथुष्ट्र मूलतः बाह्लीक देश के निवासी थे। जैसा फिरदौसी ने बताया है, उनकी मृत्यु भी वहीं व्युशिताश्व राजा के राजकाल में हुई थी। इस देश में ऐसे खच्चर अथवा बड़े शरीर वाले गधे अधिक होते हैं। इस देश का राजा युधिष्ठिर को भेंट देने के लिए ऐसे खच्चर लाया था ऐसा महाभारत में उल्लेख है। पण्डित वासुदेवशरण अग्रवाल का विचार है कि जैसे गुप्त युग में 'अहुर्मजदा' का संस्कृत में 'हरिमेधस' हो गया उसी प्रकार 'जरथुष्ट्र' का 'श्वेताश्वतर' बना होगा ऐसा संभव है।

संक्षेप में यह देश एक समन्वय-तीर्थ है। यहाँ बुद्ध की करुणा, महावीर की अहिंसा, ईशु का प्रेम, इस्लाम की समानता, जरथुष्ट्र की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नीति, शंकराचार्य का अद्वैत, और तुलसी, कबीर, नानक, सूरदास, मीरा, रैदास, नरसिंह, तुकाराम, मंसूर और नज़ीर जैसों के अन्तर का ज्वार—यह सब सदियों से प्रसारित होता रहा है। यह है हमारी विरासत और वैभव। काका साहेब[1] कहते हैं इस प्रकार यह देश तो सभी जातियों का मैका है, और सभी धर्मों की ननिहाल है।

महावीर जैसी हस्ती को भारत की सीमा में बाँधना सम्भव है क्या ? सभी भेदभाव, सभी बन्धन, सभी सीमायें और समय के क्षितिज भर जाय तब जो रह जाय वह है **'महावीर'**। वे इस देश में हो गये इसका गौरव भी लेने का हक हमें तभी प्राप्त होता है जब हम उन्हें समझने की चेष्टा करें। हमें तो सदियों से महामानवों को भगवान, तीर्थंकर, महात्मा या प्रभु का अवतार घोषित करने के बाद उनके उपदेशों का जीवन में विनियोग करने से बच निकलने की आदत पड़ गयी है। जीवन में अधिक खलल न पहुँचे इस हेतु तीर्थंकरों को मन्दिरों में आसनस्थ करके हम चैन की साँस लेते हैं। अपरिग्रह की मूर्ति जैसे महावीर का जयजयकार करते रहकर हम परिग्रह बढ़ाते ही रहते हैं। हमारी पलायन वृत्ति (इस्केपिज्म) संगमरमर से मण्डित भव्य देवालयों की सीढ़ियाँ घिसती रहती है, पर जीवन की शुद्धि तो दूर की दूर ही रह जाती है। जीवन भर हम अपनी जात को ठगते रहते हैं। महावीर माने आज से २५०० वर्ष पूर्व खिला विश्ववाटिका का एक महमहाता मानव पुष्प, एक ऐसा पुष्प जिसकी सुवास आज भी विश्व में व्याप्त है।

१. काका साहेब कालेलकर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाभारत के युद्ध के समय गांडीव नीचे रखकर हृदय दौर्बल्य की शरण स्वीकारने वाले अर्जुन को कृष्ण ने स्वधर्म के नाम पर युद्ध के लिये प्रेरित किया था। आज दुनियाँ की महा-सत्ताएँ, गाण्डीव के मुकाबले कई गुना अधिक अवनाशक शस्त्र तैयार करके बैठी हैं। समूची परिस्थिति पलट गयी है। आज गाण्डीव नीचे रखना, यही स्वधर्म बना है। अब के युद्ध में केवल दुर्योधन ही मरे और अर्जुन या भीम बचे रह जायँ यह सम्भव नहीं रहा है। आज का अणु-गाण्डीव, गाण्डीवधारी को भी छोड़नेवाला नहीं है। सामूहिक अहिंसा के लिये तकाजा इतना नगद कभी नहीं था। 'अहिंसा परमो धर्म' यह सूत्र 'महाभारत' में आदर्श के रूप में प्रस्तुत हुआ, परन्तु अब यह सूत्र जीते रहने की व्यूह-रचना का सूत्र बन गया है।

दुनिया के पहले परमाणुबम का सांकेतिक नाम 'लिटिल ब्याय' था। अब यह अणुकुमार बड़ा हो गया है और उसने मानो मानवजाति को बौना बना डाला है। मेरी बिल्ली, मुझी से म्याऊँ !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहिंसा कोई कायरता को ढकने का बुर्का नहीं है, बल्कि वीर का श्रेष्ठ गुण है। अहिंसा के प्रयोग में शस्त्र प्रयोग की अपेक्षा अधिक बहादुरी चाहिये....

अहिंसा के अस्त्रों की धार जैसे दुर्गम मार्ग के सिवा आज की व्यथित दुनियां के लिए उबरने की अन्य कोई आशा नहीं है।

अवश्य ही जगत का इतिहास अविरल संग्रामों की कथा है, पर हम नया इतिहास रचने के लिए मन्थन कर रहे हैं और मैं ऐसा कहता हूं इसका कारण यह है कि अहिंसा की बाबत भारतवर्ष के राष्ट्रीय मानस का प्रतिनिधि मैं हूं।

—गांधी जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महावीर : २५०० वर्ष बाद

एक चीनी काव्य पंक्ति याद आती है। तोप के मुँह में घोंसला बना कर एक पक्षी अपने अण्डे से रहा था। एक तरह से देखें तो पक्षी जैसी ही अपनी स्थिति नहीं है क्या ? महावीर कहते हैं कि, जीवमात्र जीने की इच्छा करता है। किसी को मरना अच्छा नहीं लगता। जीने की अभिलाषा सबको होती है, अस्तु जीने का अधिकार सबको होना चाहिये। कुछ वर्षों पहले भगवान् बुद्ध की २५००वीं जयन्ती देश में मनायी गयी तब पण्डित नेहरू ने कहा कि हमें बुद्ध और युद्ध के बीच चयन करना है। स्थूल हिंसा की शुरुआत आदि-मानव ने शायद नाखून से शुरू की होगी। नख-शक्ति का विस्तार, उसने जब पहली बार दण्डा-बाजी की, तब हुआ होगा। छुरी और तलवार उसके नाखूनों का ही विस्तार माना जायेगा। बन्दूक भी नाखूनों का ही विस्तार है। मानव के नख के विकास के परिणाम स्वरूप अणु-बम तैयार हुआ है। इस प्रकार हिंसा के क्षेत्र में तकनीकी विकास-यात्रा बेरोकटोक बढ़ती जा रही है। विगत २५०० वर्षों में वह चरम सीमा पर पहुँची है। अहिंसा के क्षेत्र में ऐसी तकनीकी सम्भव है क्या ? ऐसी तकनीकी विकसित हो इसकी शर्त यह है कि अहिंसा एक धार्मिक सद्गुण मात्र न रहकर आदमी के अस्तित्व की व्यूहरचना (स्ट्रैटेजी) बने। अहिंसा के क्षेत्र में ऐसी तकनीक की शुरुआत 'इकोलॉजी' (जीव-सन्तुलन शास्त्र) से हो सकती है, ऐसा लगता है। हिंसा के क्षेत्र में या युद्ध के मैदान में आवश्यक ऐसी गणना या व्यूह रचना अहिंसा के क्षेत्र में भी हो सकती है, यह हमारे मन में आसानी से नहीं बैठता। आलबर्ट श्वाइट्ज़र जीवमात्र के प्रति आदर (रेवरेंस फॉर लाइफ) की बात करते हैं तब ऐसी किसी व्यूहरचना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की छोटी सी शुरुआत होती है। ऐसी किसी व्यूह रचना की आधारशिला धार्मिक ही नहीं वैज्ञानिक भी होनी चाहिये।

अश्वत्थ (पीपल) पवित्र है इसलिये उसे नहीं काटना चाहिए, ऐसा कोई कहे तो अब वह मान्य नहीं होगा। अब उसे न काटने के लिए और उसका रखरखाव करने के लिए वैज्ञानिक भूमिका उपलब्ध है। नाइट्रोजन साइकिल के नाम से, सिम्बियोसिस के नाम से, लॉ ऑफ रिटर्न के नाम से जमीन का क्षरण रोकने के लिए वृक्षों के बचाने की बात गले उतरे यह वांछनीय है। चीनियों ने फसल को नुकसान पहुँचाती गौरय्यों को मार डाला, इससे अकाल पड़ा, यह जब इकोलॉजी के नाम से कहा गया तो सबको मान्य हुआ और चीन ने गौरय्या मारना बन्द किया।

अमेरिका के विख्यात जीव-वैज्ञानिक रेचल कार्स ने 'मौन बसन्त' (सायलेंट स्प्रिंग) पुस्तक लिखी और डी० डी० टी० के प्रयोग के कारण फ्लोरिडा में बसन्त ऋतु पक्षियों के कलरव से विहीन आयी और जीव सृष्टि का सन्तुलन बिगड़ा इस बाबत चौंकानेवाली बात कही। इसी प्रकार बेरी कमाण्डर की 'द क्लोजिंग सर्कल' और ज्हॉन मॅडोक्ष की 'द डूम्सडे सिण्ड्रोम' जैसी पुस्तकें अहिंसा के धार्मिक समर्थन में नहीं लिखी गयी हैं। बाघ के शिकार पर लगा प्रतिबन्ध केवल जीवदया से प्रेरित होकर नहीं लगाया गया है। अब तक आदमी को बाघ से बचाना था, अब बाघ को कैसे बचायें यह प्रश्न है। जंगली प्राणियों का उन्मूलन रुकना चाहिये ऐसा फरमान सरकार ने जैनियों की ममता की रक्षा करने हेतु नहीं निकाला है। सभी प्राणियों की कुदरत के सन्तुलन में कोई न कोई भूमिका है, ऐसा अब वैज्ञानिक रीति से समझ में आया है। रूस में साइबेरिया के उत्तरी प्रदेशों में घास का उत्पादन घटा इसका कारण एक प्रकार की चींटियों का मार डाला जाना था, ऐसा समझ में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आया। अब इन चीटियों को बचाने के प्रयत्न आरम्भ हुए हैं, यह महावीर के प्रति भक्ति के कारण थोड़े ही हुए हैं!

औद्योगिक प्रगति के नाम पर हमने शेयर कैपिटल में से डिविडेण्ड वितरण करना शुरू किया है ऐसा लगता है। कोई सयाना आदमी शेयर कैपिटल में से भला हिस्सा बँटाता है क्या? जिस प्रकार पृथ्वी की जल-सम्पत्ति, जीवसम्पत्ति और वन सम्पत्ति हम फूँक रहे हैं और उसे देखते हुए कालान्तर में हमें यह सौदा मँहगा पड़ेगा ऐसा नहीं लगता क्या? डार्लिंगटन कहता है कि पृथ्वी पर अपनी शक्ति बढ़ाने हेतु आदमी द्वारा ढूँढ़ा गया प्रत्येक साधन उसके उत्तराधिकारियों के लिये धुँधला भविष्य देने के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। एलविन टॉफ्लर इसके लिये उत्तर-दायी तकनीकी की हिमायत करता है। सोने का अण्डा देनेवाला मुरगी को मारकर सभी अण्डे एक साथ प्राप्त करने की चेष्टा अब छोड़नी होगी, ऐसी परिस्थिति आ गयी है।

एक बार बहुत बड़ा युद्ध हुआ। एक बन्दर ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। युद्ध में बहुत आदमी मारे गये। युद्ध पूरा हुआ तब बन्दर पेड़ पर से उतरा। उसने भगवान् से प्रार्थना की 'हे भगवान, तू अब वानर से नर बनाने का काम बन्द कर तो अच्छा।' महावीर ने अपरिग्रह की बात कह कर एक आदर्श स्थापित किया है। तनिक गहराई से विचार करें तो ज्ञात होगा कि अहिंसा और परिग्रह में अधिक मैत्री नहीं है। कहा जाता है कि परिग्रह में से विग्रह पैदा होता है।

स्थूल अहिंसा विकसित हो इतना ही काफी नहीं है। मैं किसी पर क्रोध करता हूँ तब दूसरा दुखी हो यह तो ठीक, पर मेरा ही ब्लड प्रेशर नाहक बढ़ता है। ऐसा करने से मुझे ही असुख होता है। फादर वालेस कहते हैं कि ईर्ष्या करने से पित्त बढ़ता है। डाक्टर कहते हैं कि खूब टेन्शन या चिन्ता करने से 'पेप्टिक अल्सर' होता है। इसी प्रकार गुण-विकास की भूमिका भी वैज्ञानिक होनी चाहिए। महावीर सम्यक्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चरित्र की बात कहते हैं। वह इस दृष्टि से, आज के दौर में बहुत मौजूँ सिद्ध होती है। क्लेश और चिंता करने से क्रोध और कामना के अति सेवन से आयुष्य घटता है और रोग बढ़ते हैं, यह बात वैज्ञानिक ढंग से रख सकें तो आज के आदमी के गले उतरेगी। अब तक अहिंसा को एक धार्मिक आदर्श के रूप में मान्य करने की हमें आदत पड़ी है। अब उसे व्यावहारिक अनिवार्यता गिनना शुरू करना चाहिए यह जरूरी है। हिंसा-अहिंसा को पाप-पुण्य की तराजू पर नहीं, पर अस्तित्व की गिनती और सुख-शान्ति की त्रैराशिक पर तौलना होगा ऐसी स्थिति है। स्थूल और सूक्ष्म हिंसा को दूर रखना केवल स्वार्थ की दृष्टि से भी उपकारक है, यह बात समझने की जरूरत उपस्थित हुई है।

विख्यात वैज्ञानिक स्किनर, जिस आचरण की तकनीकी विकसित करने की बात करते हैं, वह इस अर्थ में बहुत ही सूचक है। वे कहते हैं कि 'आदमी पर्यावरण (इनवाइरनमेण्ट) अधिकाधिक समझता जा रहा है पर अपनी जात की बाबत की समझ उसी तेजी से नहीं बढ़ी है।' अब वह स्वार्थ (स्व का अर्थ) को समझे यह जरूरी है।

इस अर्थ में फिर स्वार्थी और श्रेयार्थी के बीच अधिक संघर्ष नहीं होगा। तोप के मुँह में बैठा पंछी यह बात कब समझेगा ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जड़बुद्धि के आदमी को ग्रामीण भाषा में लोग 'बूहा' (लंठ) कहते हैं। कोई थप्पड़ मारे तो जवाब में थप्पड़ मारना, कोई गाली दे तो प्रत्युत्तर में गाली देना और कोई युद्ध करने मैदान में आवे तो युद्ध में कूद पड़ना यह तो बूहे को भी समझ में आवे ऐसी रीति मानी जाती है। बल के सामने टिक सके ऐसी कोई भद्र प्रयुक्ति की शोध चलती ही रही है। इसकी शुरुआत व्यक्तिगत क्षेत्र में महावीर ने की।

कलिंग की विजय के बाद युद्ध के बारे में गहरा मंथन करने वाले अशोक ने प्रादेशिक स्तर पर एक सुन्दर शुरुआत की। गांधीजी ने अहिंसक सत्याग्रह द्वारा बल का राष्ट्रीय स्तर पर सामना किया जा सकता है इसकी झाँकी करायी। अब विश्वस्तर पर इस प्रयोग का विस्तार करना होगा। पूरे २५०० वर्ष बाद महावीर को प्रदत्त सबसे भव्य अंजलि माने गांधी का अहिंसक सत्याग्रह।

अहिंसा का विकास होता रहेगा तो एक दिन ऐसा आवेगा जब जीवहिंसा करना सामाजिक असभ्यता (बैड मैनर्स) माना जायगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

टु विन वन हंड्रेड विक्ट्रीज़्
इन वन हंड्रेड बैटल्स्
इज नॉट द एक्मी ऑफ स्किल
टु सबड्यू द एनिमी विदाउट
फाइटिंग इज़ द एक्मी ऑफ स्किल।

—सुन त्ज़ू

जीतना शत-विजय
शत-संग्रामों में
नहीं पराकाष्ठा कौशल की
वश में करना शत्रु को
बिना युद्ध के
चरम उपलब्धि कौशल की।

—सुन त्ज़ू

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्वशान्ति की व्यूह रचना

गीता के पहले अध्याय में प्रयुक्त 'आततायी' शब्द ठीक से समझ लेने लायक है। 'आततायी' माने 'आग लगाने वाला', 'जहर देने वाला', 'धन चुरा ले जाने वाला', 'जमीन हड़प लेने वाला' और 'स्त्री का हरण करने वाला'। ऐसे आततायियों के साथ काम पड़े तो दो रास्ते हैं, एक है महाभारत का रास्ता और दूसरा है महावीर का अर्थात् अहिंसा का रास्ता। आततायी को ठिकाने लगाने के लिए पहले रास्ते से जायँ तो आदमी को शत्रु का हनन करने वाला 'शत्रुघ्न' बनना पड़ेगा और दूसरे रास्ते पर प्रेम से उफनता 'अजातशत्रु' होना पड़ेगा। पहला रास्ता वीरों का मार्ग है, जब कि दूसरा रास्ता महावीर-मार्ग है। आततायी का यानी शत्रु का हनन करने के स्थान पर प्रेमपूर्वक स्वीकार करने में ज्यादा बड़े पराक्रम की जरूरत पड़ती है। कुमार वर्धमान 'महावीर' बने इसका वास्तविक रहस्य यही है।

'आततायी' शब्द का पहले तीन अर्थों–आग से, जहर से और हथियारों से—किसी को मारने से सम्बन्ध हैं। ऐसी एक मार्गी-हिंसा के समक्ष महावीर अहिंसा की ढाल लेकर खड़े हो जाते हैं। यह बात आज भी थोड़ी अव्यावहारिक प्रतीत होती हो ऐसा सम्भव है, तो फिर आज से २५०० वर्ष पहले कितनी अव्यावहारिक रही होगी इसकी कल्पना की जा सकती है। पर गहराई से विच.र करें तो समझ में आ जायगा कि बात सही नहीं है। विगत पाँच हजार वर्षों से आदमी ने आततायियों की सहायता से हिंसा और युद्ध द्वारा काम निकालने की प्रथा अपनायी है। हमारा इतिहास युद्धों का इतिहास है। शान्ति का या अहिंसा का इतिहास बहुत कम पन्नों को घेरता है। प्रश्न यह है कि युद्ध द्वारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथवा प्रतिहिंसा द्वारा आततायियों की समस्या कम हुई है क्या? यदि प्रतिहिंसा का मार्ग व्यावहारिक होता, तो अब तक तो दुनियाँ से आततायियों का खात्मा होगया होना चाहिए था। ऐसा नहीं हुआ है यह हकीकत है। किसी न किसी जगह, तनिक फेर-फार के साथ आज भी दुनियाँ में महाभारत का युद्ध चलता ही रहता है। शंख के स्थान पर बिगुल आ जाते हैं और तीर के स्थान पर बुलेट आ जाती है पर इससे बुनियादी बात में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

महात्मा गांधी को यह बात अच्छी तरह समझ में आ गयी थी। प्रतिहिंसा के बदले आततायी का सामना करने के लिए उन्होंने सत्याग्रह का, अहिंसा का शस्त्र प्रदान किया। याद रहे कि उन्होंने कायर की अहिंसा की टीका की थी। वीर कभी महावीर भी बन सकता है, पर यदि कायर आदमी अहिंसा का सहारा ले तो वह महाकायर बन जायगा इसको सम्भावना अधिक है। प्रतिहिंसा के स्थान पर हिंसा की बात वर्ण से क्षत्रिय महावीर ने वर्णाश्रम धर्म के उस जमाने में की, यह कोई मामूली बात नहीं है। 'समण-सुत्त' में कहा है, "अहिंसा तमाम आश्रमों का हृदय है, तमाम शास्त्रों का रहस्य और तमाम व्रतों और गुणों का पिण्डभूत सार है।"

'आततायी' शब्द के अन्तिम तीन अर्थों में धन, जमीन और स्त्री ले जाने की अर्थात् 'चोरी' की बात है। ऐसो चोरी के विरुद्ध भगवान महावीर ने अचौर्यव्रत के उपरान्त अपरिग्रह व्रत धारण किया। स्थूल अथवा सूक्ष्म चोरी (शोषण) की जड़ें परिग्रह में रहती हैं। चोर को मारने से, उसे सजा करने से या उसे मार डालने से यदि चोरी निर्मूल हो सकी होती, तो आज दुनियाँ में एक भी चोर जीवित न बचा होता। हजारों वर्षों से चोरों को अनेक प्रकार की सजाएँ समाज की ओर से दी जाती रही हैं। चाहे कितनी ही कठोर सजा क्यों न रक्खी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गयी हो पर चोरी तो कायम ही रही है। महावीर ने चोरी का सच्चा प्रतिकार अपरिग्रह में देखा। मोक्ष की इच्छा वाले के लिए 'शरीर भी अपरिग्रह है' ऐसा भगवान अरिहन्त देव ने कहा, फिर दूसरे अन्य परिग्रह की तो बात ही क्या करें। ऐसे अपरिग्रह के समक्ष चोरी किस तरह टिक सकती है। इतिहास एक बात की साक्षी देता है वह यह कि विग्रह की जड़े भी परिग्रह में रहती हैं। ऐसे वास्तव में देखें तो अहिंसा के महाव्रत में अपरिग्रह सहज रूप से समा जाता है। ऐसा अपरिग्रह केवल साधु ही पालें इतना पर्याप्त नहीं है, उसे समझदारी के साथ जन सामान्य तक पहुँचाना चाहिए। ऊर्जा की होड़ ठनी है कारण यह कि मालदार देश पृथ्वी की अधिकांश ऊर्जा खर्च कर डालते हैं। रूसी वैज्ञानिक तो कहते हैं कि, पृथ्वी की प्राणवायु का बड़ा भाग अमेरिका के उद्योग खर्च कर डालते हैं ऐसा ही छोटे पैमाने पर देशों, राज्यों और ग्रामों में होता है। ऐसा स्थूल और सूक्ष्म शोषण भी एक प्रकार की हिंसा है, यह ब त समझ लेने लायक है।

अनेक बार धर्म के विचार तत्त्व के स्थान पर मात्र बाह्याचार संयोजित होता देखा जाता है। फिर होता यह है कि यज्ञ के स्थान पर यज्ञोपवीत आ जाता है। और यज्ञ झर जाता है। फिर उपवास के स्थान पर उसकी प्रसिद्धि जम जाती है। 'समणसुत्त' में इस बाबत भी मीठी चोट की गयी है। उसमें कहा, 'माथा मूँड़ने मात्र से कोई श्रमण नहीं बन सकता। ॐ का जप करने से कोई ब्राह्मण नहीं बन सकता। अरण्य में रहने से कोई मुनि नहीं बन जाता। उसी प्रकार दर्भ के वस्त्र पहनने से कोई तपस्वी नहीं हो जाता। परन्तु आदमी समता से श्रमण बन सकता है, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण बन सकता है, ज्ञान से मुनि बन सकता है और तप से तपस्वी बन सकता है।' आज की प्रबल आवश्यकता प्रत्येक धर्म के मूल तत्त्व तक पहुँचने की है। बाह्याचार उसमें बाधक न बन जायँ यह ध्यान रखना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐसे जैन दर्शन का मूल अहिंसा है। जैन दृष्टि से आदमी दिखायी पड़ती हिंसा भले न कर रहा हो तो भी हिंसक हो सकता है और दृश्य-हिंसा करनेवाला हिंसक न हो ऐसा अहिंसा कर्त्ता के भाव पर आधारित होता है, स्थूल क्रिया पर नहीं। शोषण, युद्ध और गरीबी से विदग्ध आज की दुनियाँ को ठंडी करने के लिए अहिंसा का ऐसा भाव भी चन्दन के लेप का काम करे ऐसा हो सकता है। आततायी पहले भी थे और आज भी हैं। युद्ध पहले भी थे, आज भी हैं। विज्ञान ने आततायियों की क्षमता और युद्ध की विनाशकता इतनी ज्यादा बढ़ा दी है कि इनके विरुद्ध प्रतिहिंसा के लिये कोई गुंजाइश ही न रहे। परमाणु बम के समक्ष प्रतिहिंसा द्वारा दूसरा परमाणु बम रख देने से सर्वनाश का भुगतान होगा इतना ही। परमाणु बम केवल आततायियों का ही हनन करेगा ऐसी शक्यता नहीं रही है। ऐसी विस्फोटक परिस्थिति में भगवान महावीर का जीवन-दर्शन केवल वैज्ञानिक ही नहीं, परन्तु व्यावहारिक भी प्रतीत होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वियतनाम युद्ध के दरमियान अमेरिकन सेना ने बेन ट्रे नामक नगर पर बममारी की। बाद में अमेरिकन मेजर ने कहा, 'इस नगर को बचाने के लिये इसका नाश करना जरूरी हो गया था।' शायद कल उठकर महासत्ताएँ दुनियाँ को बचा लेने के लिये दुनियाँ का विनाश नहीं करेंगी क्या? एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसका विचित्र नाम है 'द मिसाइल एन्वी', रूसी मिसाइल की अपेक्षा अमेरिकी मिसाइल अधिक विनाशक होने की चेष्टा करता है। इस प्रकार दो मिसाइल आपसी प्रतिस्पर्धा में अधिक शक्तिशाली बनते जा रहे हैं। एक कार्टून चित्र में दो बमों के बीच छोटे से, निःसहाय आदमी को खड़ा दिखाया है। एक बम पर अमेरिकी राष्ट्रध्वज और दूसरे पर (रूसी) साम्यवाद के हसिया-हथौड़ा का प्रतीक अंकित है। अमेरिकन बम पर लिखा है—'यह सिद्धान्त प्रिय, पवित्र, स्वच्छ, प्रभु के आशीष प्राप्त, भजन गाने-वाला, गिरजाघर में जानेवाला, शान्तिप्रिय ख्रिस्ती परमाणु बम है' रूसी बम पर लिखा है, 'यह अनिष्टकारक, अश्रद्धालु, दुष्ट, युद्धप्रिय, साम्यवादी और नास्तिक बम है।

है कोई पसंदगी? आत्महत्या तेरहवी मंजिल से करें या सत्तरवीं मंजिल से, इसका निर्णय लेने की सम्पूर्ण स्वतन्त्रता आदमी के पास बची है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हू इज ए हीरो
ही
हू कन्वर्टस्
हिज एनिमी
इंटू हिज फ्रेण्ड

—एबाट द रब्बी नातान

कौन हैं नायक ?
वह
जो बदल देता है
अपने शत्रु को
अपने मित्र में !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सच्ची विजय के लिये जीवन-साधना

एक आदमी दूसरे आदमी के साथ सज्जनतापूर्ण व्यवहार रक्खे, ऐसी सीधी सादी अपेक्षा रखनेवाले इस दुनियाँ में बड़ी संख्या में विद्यमान हैं। शायद दुनियाँ ऐसी बुनियादी अपेक्षा करते हुए जीते, बहुसंख्यक मनुष्यों के कारण ही अभी तक टिकी हुई है। प्रश्न यह उठता है कि आदमी-आदमी के बीच की सज्जनता की नींव में क्या कुछ हो सकता है। ऐसी सज्जनता की नींव में हिंसा हो सकती है क्या ? ऐसी सज्जनता की आधारशिला बैर हो सकती है क्या ? परिग्रहवृत्ति ऐसी सज्जनता का आधार-बिन्दु बन सकती है क्या ? घड़ी भर को सभी धर्मों को एक ओर रक्खे, तो भी इतना कहना पड़ेगा कि आदमी-आदमी के बीच सुजनता भरे सुमेल के लिये अहिंसा, निर्वैर और अपरिग्रह को जीवन में योग्य स्थान देना होगा।

दो आदमियों के बीच की तकरार का समाधान बलप्रयोग से ही करने की बात हो तो समझ लेना चाहिये कि पशुओं में भी यह तरीका प्रचलित है। यदि बैर भूलने या बैर-वृत्ति को ठण्डी रखने का कोई मूल्य न हो तो इतना स्वीकार कर लें कि ऐसी वृत्ति मानव-मानव के बीच सुमेल का पोषण करनेवाली नहीं है। जमा कर कर के सब कुछ पचा डालने की खुली छूट मिले तो समाज में सुमेल टिक ही नहीं सकता। जिस समाज में हिंसा, वैर और परिग्रह का ही बोलबाला हो उस समाज के सदस्यों के बीच मारकाट; द्वेष और लूटखसोट का ही व्यवहार हो सकता है, सुजनता का नहीं। ऐसे समाज में अवांछित, या फिर गैर-जरूरी आदमी को खत्म कर देने या घायल कर देने का रिवाज़ हो सकता है। ऐसे समाज में कोई मुझे नुकसान पहुँचाये तो उसे नुकसान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहुँचाने के अलावा हिसाब चुकाने का दूसरा कोई मार्ग ही न रहे। ऐसे समाज में दस आम खाने के लिये पन्द्रह आदमी हों तो प्रत्येक मनुष्य अधिक से अधिक आम हासिल कर लेने की ही कोशिश करेगा और कभी तो एकाध परिग्रह-सम्राट दस के दस आम छीन ले यह भी हो सकता है।

कहने का तात्पर्य इतना ही कि अहिंसा, अवैर और अपरिग्रह के आदर्शों को समग्रतापूर्वक अमल में न लानेवाले समाज को भी मूल्य के रूप में तो इन्हीं आदर्शों को सम्मानित स्थान देना पड़ा। मूल्य हिंसा का, वैर या परिग्रह का नहीं हो सकता। मूल्य मारकाट, हत्या, विद्वेष, ईर्ष्या, बदला लेने की वृत्ति या लूटखसोट कर छीन लेने या जमाखोरी करने का नहीं हो सकता। आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा, अवैर और अपरिग्रह को बुनियादी मूल्यों के रूप में प्रतिष्ठित करके लोक-संस्कृति का, लोक क्रान्ति का और मूल्य परिवर्तन का महान कार्य किया।

कुछ समय पूर्व एक उपन्यास प्रकाशित हुआ है, जिसका नाम है; 'वर्डली गुड्स', इसके लेखक हैं माइकेल कोरडा। उपन्यास हिटलर के जीवन पर आधारित है और उसमें हिटलर को शाकाहार का हिमायती बताया गया है। इस उपन्यास में पोल फोस्टर नामक पात्र के मुख में लेखक ने दो सुन्दर वाक्य रक्खे हैं।

१. बैर के बदले की बानगी ठण्डी होने के बाद ही खाने का मजा है। (द डिश ऑफ रिवेंज इज बेस्ट ईटन कोल्ड)

२. सुन्दर ढंग से जीना बैर का सर्वोत्तम बदला है। (लिविंग वेल इज द बेस्ट रिवेंज)।

किसी महात्मा के मुख में शोभा दें ऐसे ये वाक्य अब आजकी दुनियाँ की वास्तविकता में सामान्य आदमी को भी समझ कर आत्मसात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करने पड़ेंगे। भगवान महावीर की एक मौलिक देन का स्मरण कर लें। 'विजय' शब्द के साथ हमेशा दूसरा आदमी, (द अदर पर्सन), दूसरा पक्ष, दूसरा समाज, दूसरा राज्य अपने आप जुड़ जाता है। कोई अन्य न हो तो विजय के लिये कोई भी गुंजाइश नहीं रहती। कोई विजेता बने इसके लिए दूसरा कोई पराजित हो, यह अनिवार्य माना जाता है। कोई भी हारे नहीं तब तक कोई जीत कैसे सकता है ? संक्षेप में विजय भी पराजय की आश्रित ही गिनी जायगी। जहाँ विजय-पराजय का द्वंद्व (डाइकोटोमी) हो वहाँ, हिंसा, बैर, राग, द्वेष, परिग्रह, पूर्वग्रह, दुश्मनी और असूया जैसे दूषण अपने आप चले आते हैं। महावीर स्वामी ने 'विजय' शब्द को एक नया ही आयाम (डाइमेन्शन) दिया। 'जीतना अपने आप को अच्छा, औरों को जीतने से'। इस पंक्ति में विजय की अन्यता से छुटकारा मिलता दिखाई पड़ता है। विजय किसी पर नहीं, अपने आप पर प्राप्त करनी है। विजय अपनी ही वृत्तियों पर, अपर्याप्त-ताओं पर और इन्द्रियों पर प्राप्त करने की बात महावीर ने कही।

सिकन्दर की विजय में और महावीर की विजय में बुनियादी अन्तर है। सच्ची विजय दूसरे राज्य या देश या समाज पर प्राप्त करने की नहीं है। विजय तो कभी-कभी हिटलर जैसे बौने मनुष्य भी प्राप्त कर सकते हैं। अपनी वृत्तियों पर विजय प्राप्त करना कई गुना कठिन है, यह बात महावीर ने हमें समझायी। हमारे जीवन में होता यह है कि हम अधिकतर इन्द्रियों के वश में होते हैं, इन्द्रियाँ हमारे अनुशासन में नहीं होतीं। इस अर्थ में हम इन्द्रियों के दास होते हैं। ऐसा गुलाम आदमी किसी दूसरे आदमी या प्रदेश पर कब्जा कर ले तो भी अन्दर से तो गुलाम ही रह जाता है। तथाकथित सम्राट भी इस अर्थ में 'समृद्ध-गुलाम' ही थे न ! महावीर ने ऐसी अन्दर की गुलामी से छूटने का मार्ग बताया।

कोई मुझे गाली दे जाय और मैं घण्टों विह्वल बना रहूँ तो मैं स्वतंत्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माना जाऊँगा क्या ? यदि एक जून खाने को न मिले तो इतने में आदमियों को व्याकुल हो जाते हम नहीं देखते क्या ? एक अप्रिय घटना हमारा सारा दिन कड़ुवा बना देती है। यह सब यही इंगित करता है कि हम अन्दर से गुलाम हैं। आदमी को ऐसी तो कितनी ही बातें सताती हैं। गुलामों की भाँति ऐसी वेदनाएँ वह जीवन भर सहन करता रहता है। ऐसी सच्ची विजय के लिये चिन्तन करना यही है जीवन-साधना। यह ऐसी विजय है जिसमें दूसरे किसी की पराजय नहीं होती। ऐसी जीवन-साधना का मर्म समझने वाले भगवान महावीर ने जगत को अहिंसा का सन्देश दिया। अणु-युद्ध की विभीषिका के नीचे जीती आज की त्रस्त, ग्रस्त, अस्वस्थ प्रजा के लिये महावीर के संदेश की संगति बहुत है। उनके अहिंसा के संदेश की अवमानना, हम सर्वनाश को आमन्त्रित करके ही कर सकते हैं। जो स्वामित्व छोड़े वही सच्चा स्वामी है। इस अर्थ में महावीर औदार्य के स्वामी थे।

'अहिंसा परमो धर्मः' यह केवल बोलने का सूत्र नहीं है, परन्तु विश्वशांति के हित झंखती प्रजा का जीवन सूत्र बन जाय ऐसी परि-स्थिति विज्ञान ने पैदा की है। हमारे लिये अब अपनी रस्मों को बदलने के सिवा कोई चारा नहीं है।

सन् १९८१ की १४वीं जनवरी को अमेरिका के राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने अपने बिदाई भाषण में एक, अत्यन्त गम्भीर कही जा सके, ऐसी बात कही थी। उन्होंने कहा था कि यदि पृथ्वी पर परमाणु युद्ध छिड़ जाय तो दूसरे विश्वयुद्ध में कुल जितना विनाश हुआ था उतना विनाश प्रत्येक सेकेण्ड में होगा। इस तरह प्रत्येक क्षण 'सेकेण्ड वर्ल्डवार' जितनी बरबादी होगी और मानव इतिहास में हुए तमाम युद्धों में कुल जितने लोग मरे थे उससे कहीं अधिक लोग केवल एक ही घण्टे में मरेंगे।

हिरोशिमा पर प्रथम परमाणु बम गिरा उसके बाद पृथ्वी पर बसते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोग निरन्तर परमाणु युद्ध की भीषण छाया में जी रहे हैं। आज की सांसारिक परिस्थिति में महावीर के उपदेश का स्मरण केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं परन्तु वैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि से भी करना होगा। सदियों से बल का सम्बन्ध हिंसा, क्रोध और बाहुबल के साथ रहा है। महावीर की मौलिकता इस सम्बन्ध को बुनियाद से तोड़ने में विद्यमान है। उन्होंने हिंसा, के स्थान पर अहिंसा की, क्रोध के स्थान पर अक्रोध की, और बाहुवल के स्थान पर आत्मबल की प्रतिष्ठा की। हिंसा, क्रोध और बाहुबल के स्थान पर वीरता के साथ अहिंसा, अक्रोध और आत्मबल, संसार के इतिहास में पहली बार जुड़े। वर्धमान के विभूति-मत्त्व में, उनके जीवन में अहिंसा, अक्रोध और आत्मबल इतनी मात्रा में प्रगट हुए कि वे 'महावीर' कहलाये।

वर्णाश्रम धर्म में क्षात्रधर्म विकसित हुआ जिसमें हिंसा का बोल-बाला था। क्षत्रिय के लिये माने राजा के लिये हिंसा एक मूल्य बन गयी और हिंसा के सहोदर जैसा युद्ध 'धर्मयुद्ध' बन गया। युद्ध की कथा 'रम्य' मानी जाने लगी और आज भी मानी जाती है। महावीर ने हिंसा के बदले अहिंसा की महिमा स्थापित करके जबरदस्त मूल्य-परिवर्तन किया। यह एक ऐसी वैचारिक क्रांति थी, जो विधायक थी और आदमीयत की मात्रा बढ़ाने वाली थी। अभी आज भी दो देशों के बीच युद्ध होता है तब लोग दो टीमों के बीच खेले जाते क्रिकेट मैच में जैसे रन, विकेट और बॉलिंग का विश्लेषण करते हैं, वैसे ही उभय पक्ष की कितनी जनहानि हुई या कितने विमान नष्ट हुए और कितने टैंक टूटे इसकी तुलनात्मक विवेचना करते होते हैं। युद्ध की व्यथा कितनी दारुण होती है इसका ख्याल ऐसी चर्चा करने वाली को नहीं आता।

घायल पक्षी को देखकर या लहू के घूँट पीते आदमी को देखकर हमारा हृदय द्रवित हो उठता है, पर हमारी करुणा इतने पर ही अटक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाय यह अब नहीं चल सकता। स्टालिन ने कही कहा था कि रास्ते पर दुर्घटना में एक आदमी मरता है तो उसे 'ट्रेजेडी मानते है पर युद्ध में हजारों आदमी मरते हैं तो उसे 'स्टेटिस्टिक्स' कहते हैं। अब केवल युद्ध का ही नहीं बल्कि युद्ध को जन्म देने वाली भौतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक सभी शक्तियों का सामना करना पड़ेगा। दूसरे विश्वयुद्ध पर आधारित पुस्तक 'ए मैन कॉल्ड इण्ट्रेपिड' में ज्हान बिशप को इसी प्रकार अंकित किया गया है। कहते हैं 'युद्ध, आदमी मरते हैं इसीलिये ही करुण है, ऐसा नहीं है, वह करुण है, इस कारण कि इसमें तो आदमी मरते हैं इस विषय की हाय-तोबा ही खत्म होती है।' अमर्यादित परिग्रह, सूक्ष्म बैर भाव, उन्मादी राष्ट्रवाद, निर्दय शोषण और संकीर्ण धार्मिकता दीर्घ अवधि में युद्ध को जन्म देते हैं। युद्ध आखिर है क्या ? आदमी में वर्तमान छोटी-मोटी हिंसा, बर्बरता और असूया का वीभत्स आविर्भाव माने युद्ध। अहिंसा (नॉन-वायलेंसं) केवल अहत्या (नॉन-किलिंग) नही है। आज की तनावयुक्त, विस्फोटक परिस्थिति में अहिंसा एक मूल्य के रूप में स्वीकृत हो यह बहुत जरूरी हो गया है। आज के विश्वव्यापी संघर्ष में अहिंसा का धार्मिक मूल्य तो है ही, पर इससे उसका सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मानवीय और व्यावहारिक मूल्य तनिक भी कम नहीं है। अहिंसा की इतनी व्यापक मूल्य प्रतिष्ठा न हो तो पृथ्वी पर का समग्र जीवन खत्म हो जाय ऐसी कम्पित कर देने वाली संभावना विज्ञान ने आदमी के सामने रख दी है। यों अहिंसा केवल साधुओं के पालन करने की धार्मिक बात न रहकर जनसामान्य में संक्रांत हो सके, ऐसा मूल्य बन जाय यह आज की परि-स्थिति का तकाजा है। २५०० वर्ष पहले महावीर द्वारा लायी गयी विचार-क्रांति आज की त्रस्त दुनियाँ की समस्याओं के समाधान के हित व्यूहरचना बन सके ऐसा है। हिंसा कोई समर्थ व्यक्ति का लक्षण नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। एसिमोव का एक वाक्य अत्यन्त सारगर्भित माना जाता है। वह कहता है, 'हिंसा असमर्थ आदमी का अन्तिम आश्रय स्थल है।'

समर्थ आदमी किसे कहते हैं ? 'समणसुत्त' में जवाब मिलता है— 'जिसे मोह नहीं है, उसने दुख का नाश कर डाला। जिसे तृष्णा नहीं है, उसने मोह का नाश कर डाला। जिसे लोभ नहीं है, उसने तृष्णा का नाश कर डाला और जिसके पास कुछ नहीं है, उसने लोभ का नाश कर डाला।''

इस प्रकार लोभ को जीते वह सच्चा समर्थ मानव माना जाता है। इसी प्रकार जिन मार्ग में 'विजय' शब्द की व्याख्या ही बदल जाती है। 'समणसुत्त' में कहा है—''अपने ऊपर विजय प्राप्त करना ही कठिन है। ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे। इतना जानना ही पर्याप्त होगा कि अहिंसामूलक समता ही धर्म है अथवा यही अहिंसा का विज्ञान है।'' परमाणु युद्ध के दुःस्वप्न के आतंक की छाया में जी रही दुनिया के लिए महावीर का सन्देश जेठ की दोपहर में वृक्ष के नीचे पौसरे के पानी सा शीतल तो है ही, पर इसके साथ ही दुनिया में शान्ति का स्वर्ग रच सके, इतना प्राणवंत भी है।

'शान्ति युद्ध का अभाव नहीं है', साथ ही मानव की स्वस्थता का संरक्षण हो सके इसकी पहली शर्त भी है। एक अशान्त आदमी सारे विश्व को अशान्त बनाने में छोटी सी ही सही पर ठोस भूमिका अदा करता है। विज्ञान ने विश्व को इतना छोटा बना डाला है कि किसी भी देश या राज्य की अशान्ति की चेप सारे विश्व को लग जाती है। दो छोटे देशों का युद्ध भी अन्तरराष्ट्रीय समस्या बन जाता है। इस प्रकार कोई भी युद्ध स्थानीय न रहकर व्यापक बन जाता है। विश्व जब इस तरह संकुचित हो रहा है तब हमारे हृदय विशाल बनें यह जरूरी है। विज्ञान और तकनीकी का तकाजा है कि विभिन्न देशों को विश्व-ग्राम के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आँगन में सँभाल के चलना होगा। आज तो ऐसा हुआ है कि फैशने और इण्टर-काण्टिनेण्टल होटल अन्तरराष्ट्रीय बन रहे हैं, पर हमारी मनोदशा संकुचित और कूपमण्डूक ही बनी हुई है। फलतः कभी राष्ट्रवाद, तो कभी कुछेक राष्ट्रों का गुटवाद इतना बहकता है कि सारी दुनिया पर तनाव का लेप हो जाता है। 'इस्लाम' का तो अर्थ ही 'शान्ति' है, पर तिसपर भी 'इस्लामिक बम' की बात सुनने को मिलती है। हिंसा कभी भी शान्ति की जननी नहीं हो सकती। विश्वशान्ति की गरज इस दुनिया में जी रहे हर आदमी को रहेगी और अहिंसा को स्वीकार किये बिना विश्वशान्ति का सपना अधूरा ही रहेगा।

एक ओर शान्त और समृद्ध जीवन का सपना है तो दूसरी ओर सर्वनाश का दुःस्वप्न है। पसन्दगी तो स्पष्ट है, पर अहिंसा के मार्ग पर जाने के लिये अभी हम पूरी तरह से तैयार हैं क्या? दुनिया के तमाम लोगों को किसी भी प्रकार के रंगभेद, वर्गभेद, राष्ट्रभेद और धर्मभेद के बिना स्वस्थ और आनन्दमय जीवन की दीक्षा मिल सके, इसके लिए महावीर को समझने की सख्त जरूरत है। उन्होंने अहिंसा के तत्त्व का बहुत महीन सूतं काता है। विज्ञान में पृथक्करण का स्थान महत्त्वपूर्ण है। महावीर ने अहिंसा का विज्ञान दुनिया को दिया ऐसा कह सकते हैं। अहिंसा की इतनी सूक्ष्म और सार्वदेशिक समीक्षा अन्य किसी महामानव ने नहीं की है। जैनधर्म में अहिंसा को जैसी केन्द्रीयता (सेंट्रालिटी) प्राप्त हुई है वैसी किसी धर्म में प्राप्त होती नहीं दिखती। मांसाहार के त्याग को किसी अन्य धर्म ने इतना महत्त्व नहीं दिया है। गुजरात में बाहर के बहुसंख्य हिन्दू (ब्राह्मण सहित) मांसाहारी होते हैं। ऐसा ही बौद्धों, ईसाइयों, मुसलमानों, पारसियों और सिक्खों के लिए भी कहा जा सकता है। संक्षेप में मांसाहार के त्याग की जैनधर्मियों ने जैसी उत्कटता दूसरे किसी धर्म के लोगों ने प्रकट नहीं की है। रास्ते में भटकती चींटी-चींटों को भी जीने का मूलभूत अधिकार बख्शने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में और जीवमात्र को आदरपूर्वक देखने में जैनधर्म की तुलना में अन्य कोई धर्म नहीं आ सकता। आदमी दूसरे प्राणियों के जीने का हक (राइट टु लिव) स्वीकार करे तो इसमें वह कोई उपकार नहीं करता। ऐसा करने में उसका आभिजात्य बना रहता है और उसका स्वार्थ भी सुरक्षित रहता है। जीवनसृष्टि में रहने वाला परस्परावलम्बन अब विज्ञानियों को भी सुरक्षित रखने लायक, जतन करने लायक प्रतीत हुआ है। दूसरे शब्दों में कहें तो अहिंसा, जीवदया में संन्निहित संकल्पना (कॉनसेप्ट) मात्र न रहकर व्यापक कल्याण की, दीर्घकालीन स्वार्थ की और विश्वशान्ति की व्यावहारिक जीवन शैली बन जाय ऐसे संयोगों का निर्माण हुआ है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आइजेक एसीमोव अपनी पुस्तक 'एक्स-प्लोरिंग द अर्थ एण्ड द कास्मास' में एक सुन्दर बात कहते हैं, "अब हम सभी दिशाओं से इतना सारा विपुल ज्ञान प्राप्त करते रहते हैं कि कभी-कभी हम व्यक्ति के रूप में कितने सीमित हैं यह भूल जाते हैं। हमारी आँखें मुश्किल से कुछ किलोमीटर तक देख सकती हैं। हम कितने ऊँचे चढ़ सकते हैं। हम कितनी गहरी डुबकी लगा सकते हैं। हम कितना याद रख सकते हैं। इस प्रकार हर तरह से हम सीमाओं से घिरे हैं और तो भी हममें अशेष जिज्ञासा और अपार शोध-वृत्ति विद्यमान रहती है।"

यह अशेष जिज्ञासा ही ब्रह्मजिज्ञासा है और हमारी शोधवृत्ति का छोर निर्वाण है। निर्वाण माने हमारी सीमित (लिमिटेड) हस्ती की असीम (अनलिमिटेड) की ओर यात्रा की परिसमाप्ति। मुद्दे की बात तो इतनी है कि हमें जितनी श्रद्धा लिमिटेड कम्पनी पर होती है उसकी आधी भी 'अनलिमिटेड' अस्तित्व पर नहीं होती।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माई ग्रेटेस्ट वेपन
इज़्
म्यूट प्रेयर

—महात्मा गांधी

मेरा सबसे बड़ा हथियार
है
मूक प्रार्थना

—महात्मा गांधी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अमीबा से आदम तक

सन् १८५९ में डार्विन की पुस्तक 'ओरिजिन ऑफ स्पीसीज' प्रकाशित हुई। डार्विन ने एक कोषी अमीबा से एकदम आदम तक पहुँची जन्मान्तर (ट्रान्स-माइग्रेशन) की प्रक्रिया की बात प्रस्तुत करके जैव सृष्टि में सतत चल रही विकास-प्रक्रिया की जानकारी वैज्ञानिक आधार पर दी। डार्विन का यह सिद्धान्त अत्यन्त सन्देहास्पद था। विकासवाद के सिद्धान्त का असर विज्ञान की अन्य शाखाओं पर भी पड़ा। डार्विन ने विकास की बात छेड़ कर अमीबा से आदम तक की अटूट सूत्रता को सिद्ध किया। लाखों वर्षों से चली आ रही इस विकास-यात्रा के फरजंद जैसे आदमी के पूर्वज बन्दर थे, ऐसा कहकर उसने एक सनसनी फैला दी। विकासवाद के सिद्धान्त द्वारा डार्विन ने मानव और मानवेतर प्राणियों के बीच गहरी खाई पर मानो सेतु बाँध दिया। आदमी के अन्दर एकदम गहराई में स्थित जन्मजात वृत्तियाँ (इन्सटिक्टस्) आवश्यकताएँ (नीडस्) और प्रेरकों (ड्राइव्स्) तथा मर्यादाओं को समझने में इस सेतु ने बड़ी मदद की है और जीव-विज्ञान, चिकित्सा-विज्ञान तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में आदमी को समझने हेतु प्रयोग चूहों, बिल्ली, कबूतर, चिम्पान्जी, कुत्ते तथा मेढक पर होने लगे। मानव की विज्ञान-यात्रा के इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोड़ पर जो नया उद्घाटन हुआ वह सभी विषय के विज्ञानियों के लिए बहुत उपकारक हुआ।

पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं को देखने की दृष्टि ही बदल गयी। इस नये दर्शन ने आदमी और जीवसृष्टि के बीच अटूट और सूक्ष्म सम्बन्ध सिद्ध किया, परन्तु इसमें अहिंसा की बुद्धि प्रकट नहीं हो पायी। यहाँ महावीर के दर्शन की मौलिकता तथा विशिष्टता प्रकट होती है। ढाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हजार वर्ष पहले जीवसृष्टि के तमाम सदस्यों के प्रति आदर भाव अहिंसा के दर्शन द्वारा व्यक्त हुआ। ऐसे व्यापक आदर की आलबर्ट श्वाइट्जर ने वर्षों बाद महिमा गायी। महात्मा गांधी ने मानवेतर जीवसृष्टि की प्रतिनिधि जैसी गाय को 'करुणा का काव्य' (पोइम ऑफ पिटी) कहकर गौहत्या का विरोध किया। विनोबा जी ने भी जीवन के अन्तिम वर्षों में गौहत्या के विरुद्ध सत्याग्रह के रूप में आमरण अनशन भी किया। महावीर ने जीवन-सृष्टि के तमाम सदस्यों के 'जीने के हक' का स्वीकार आज से ढ़ाई हजार वर्ष पहले किया, यह कोई मामूली बात नहीं है। अभी आज भी अनेक संस्थाएँ, विचारक और महामानव इस हक को स्वीकार करने की बात सभी मानव बन्धुओं को नही समझा सके हैं। अभी तो ऐसा हक सभी मानव बन्धुओं को भी सच्चे माने में प्राप्त नही हुआ है। ग्वाटेमाला में, कम्पूचिया में, निकारागुआ में, लेबनान में और ईरान-इराक में आदमी इतनी बड़ी मंख्या में मारे गये, मानो मानव-जीवन का कोई मूल्य ही न हो। एकही आश्वासन है, इजरायेल ने जब लेबनान पर हमला किया तब इजरायेल के लोगों को यह कदम पसन्द नही आया और कितने ही सैनिक अधिकारियों ने युद्ध में भाग लेने से इन्कार करके कैद माँग ली थी।

मानवजाति एक नयी समाज-रचना की ओर धीमें कदमों से बढ़ रही है, इसकी प्रतीति भौतिक शास्त्र का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले वैज्ञानिक और रेडियो–एस्ट्रोन।मी के विद्वान् मार्टिन राइल के एक पत्र में व्यक्त विचारों से संप्राप्त होती है। इस वैज्ञानिक के जीवन का अंतिम दशक परमाणु शस्त्रों के साथ ही परमाणु शोधों के विरुद्ध संघर्षों में बीता। मृत्यु से डेढ़ वर्ष पहले अपने मित्र को लिखे एक पत्र में वे कहते हैं :—

"दूसरा विश्वयुद्ध पूरा हुआ तब मैंने यह तय किया था कि अब कभी भी अपने वैज्ञानिक ज्ञान का मैं फौजी कार्यों के लिए कदापि उपयोग नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करूँगा। उसके बाद हम लोगों ने अत्यन्त शक्तिशाली रेडियो टेलिस्कोप बनाने के लिए नई नई तकनीकों का विकास किया। पर मैं आज देखता हूँ कि इन तकनीकों का विकृत उपयोग (फौजी कार्यों के लिए) राडार और सोनार पद्धतियों को विकसित करने में हो रहा है। परिणामतः अपने वैज्ञानिक कार्यकाल के अंत में मैं ऐसा अनुभव किये बगैर नहीं रह सकता कि १९४७ में मैं किसान बन गया होता तो ज्यादा अच्छा होता।"

●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहिंसा पक्ष के चिंतन की शुरुआत सूक्ष्म स्तर (माइक्रो लेवल) पर हुई। इसमें सूक्ष्माति-सूक्ष्म जीव–सृष्टि का ध्यान रक्खा जाय ऐसी जीवनचर्या आरम्भ हुई। जैन साधु ऐसी जीवन-चर्या का अनुसरण करते हैं।

अहिंसा पक्ष के महत् स्तर (मैक्रो लेवल) पर भी विचार करना पड़ेगा। व्यक्तिगत पाप, पुण्य और कर्म श्रृंखला की दृष्टि से विचार करने के बाद अब सामाजिक स्तर पर तथा सांसारिक स्तर पर भी अहिंसा की महिमा स्थापित करनी है। संक्षेप में सूक्ष्म और महत् (माइक्रो एण्ड मैक्रो) इन दोनों स्तरों पर अहिंसा को स्वीकार करने के युग की शुरुआत हो चुकी है। अब केवल साधु ही अहिंसा का पालन करें, यह नहीं चलेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आज के युग में निम्नलिखित मूल्यों की स्थापना के संदर्भ में भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित इन सिद्धांतों की पहले जो महत्ता और सार्थकता थी वह आज उससे भी अधिक है :—

१. अहिंसा और निःशस्त्रीकरण द्वारा विश्व मैत्री और विश्वशांति की स्थापना,

२. शोषण-हिंसा रहित समाज-व्यवस्था,

३. जमाखोरी उन्मूलन पर आधारित यथार्थ समाजवाद,

४. अनेकान्तवाद या सह-अस्तित्व के सिद्धांतों के आधार पर विभिन्न धर्म, संप्रदायों, राजनीतिक दलों और कौमी दलों के बीच एकरागिता की स्थापना।

५. रागद्वेष रहित समानता की साधना पर आधारित आध्यात्मिक विकास द्वारा मानसिक शांति की प्राप्ति।

'महावीर वाणी' की प्रस्तावना में
—शांतिप्रसाद जैन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६. अहिंसा का नया विज्ञान

आज के जीवविज्ञानी जीवन की सूक्ष्मता को समझने के लिये मंथन कर रहे हैं। ऐसा करते समय जो परिवर्ती या चलन (वेरियेबल्स) उन्हें समझ में नहीं आते उनके लिये वे 'रहस्यपूर्ण परिवर्ती' (हिडेन वेरियेबल्स) जैसे शब्द का प्रयोग करते हैं। जीवन में गूढ़ रहस्यों का पार पाने के लिये वे प्रयोग शाला में खूब मन्थन करते हैं, परन्तु उनकी शोध किसी एक बिन्दु पर आकर अटक जाती है। पदार्थ के कण (पार्टिकल) को अणु-विज्ञान द्वारा और जीव के कोष को गुणाणुविद्या (जेनेटिक्स) द्वारा समझने में वे ठीक-ठीक आगे बढ़ सके हैं और तब भी बहुत कुछ अनखुला और अनगिना बाकी रह जाता है। सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम जीवसृष्टि की लीला का पार पाने के लिये वे मन्थन करते हैं ओर नयी परिकल्पना (हाइपोथीसिस) रचते हैं, पुरानी स्थापनाओं को छोड़ते हैं और नयी सम्भावनाओं का खुलासा पाते हैं।

ऐसी अनेक सम्भावनाओं और धारणाओं को, जीवविज्ञान के प्रयोग-लक्षी-शोध-अनुसन्धान की बुनियाद पर व्यापक सन्दर्भ में प्रस्तुत करती, रूपर्ट शेल्ड्रेक की पुस्तक 'ए न्यू साइन्स आफ लाइफ' पढ़ने की मैं सिफारिश करता हूँ। उसमें की सभी बातें समझ में न आवें तो भी जो समझ में आवे उसमें से सार ग्रहण करने का मन्थन करने योग्य है। ऐसे मन्थन के अन्त में मुझे जो समझ में आया वह संक्षेप में देखलें।

चूहों पर किये गये एक प्रयोग की चर्चा से बात शुरू करें। लंदन की प्रयोगशाला में यदि जातिविशेष के चूहों को कोई नये प्रकार का आचरण सिखाया जाय तो उसी योनि या उसी जाति और ठीक से पोषित हुई बाद की पीढ़ी के वंशजों को नया आचरण सीखने में कम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समय लगता है। जैसे-जैसे नया आचरण सीखने वाले चूहों की संख्या बढ़ती है वैसे-वैसे यह सीखना उस जाति के दूसरे चूहों के लिये अधिक आसान होता जाता है। उदाहरण के लिये हजारों चूहों को किसी नये वर्तन की तालीम लंदन के प्रयोगशाला में दी जाय तो दूसरे स्थानों पर भी उस जाति के चूहे यह नयी बात जल्दी सीख लेते हैं। इस प्रकार यदि लंदन की प्रयोगशाला में चूहे कार्य-विशेष सीखते हैं तो न्यूयार्क की प्रयोगशाला के चूहों को वही कार्य सीखने में कम समय लगता है। लंदन और न्यूयार्क की प्रयोगशालाओं के बीच कोई संप्रेषण या भौतिक संबंध न हो तो भी ऐसा असर पढ़ता है। इस घटना को अस्वीकार करना जीवविज्ञानियों के लिये थोड़ा मुश्किल होता है। शेल्ड्रेक ने इस घटना पर नया प्रकाश डाला है। मेकडूगल ने श्वेतचूहों की बत्तीस पीढ़ी पर लगातार पन्द्रह वर्ष तक प्रयोग करके विशेष कार्य क्षमता चूहों को सिखाने के बाद यह बात साबित की कि उनके वंशज यह काम तेजी से सीख लेते हैं। इस प्रयोग में वंशजों की बात थी अस्तु अनुवंश (हेरेडिटी) का तत्त्व था जबकि ऊपर जिसका उल्लेख किया उस प्रयोग में चूहे बहुत दूर थे और फिर समकालीन थे।

संक्षेप में इतना कह सकते हैं कि केवल भौतिकशास्त्र, जीवविज्ञान, गुणाणुविज्ञान या परामनोविज्ञान अलग ढंग से समझा न सकें ऐसे कुछ सूक्ष्मातिसूक्ष्म परिवर्त या परिबल द्वारा इस संसार के सभी जीव जुड़े हुए हैं। शेल्ड्रेक इसके लिए एक शब्द का प्रयोग करता है, 'मार्फोजेनेटिक रेजोनेन्स' (रूप—गुणाणुजन्य अनुनाद)। जीवसृष्टि के आंतरक्रियात्मक व्यवहारों के लिए 'क्षेत्र' (फील्ड) शब्द प्रचलित हुआ है। अब पदार्थ के कण के बदले क्षेत्र को समझना जरूरी हो गया है। द्रव्यवादी धारणाओं में भी परिवर्तन आ रहा है। द्रव्यवादी मानते हैं कि प्रत्येक वस्तु द्रव्य की आभारी है। आधुनिक भौतिकशास्त्र में यह मान्यता टिक नहीं सकती, कारण यह कि द्रव्य को क्षेत्र (फील्ड) के संदर्भ में और कण को शक्ति के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरूप की तरह देखा जाता है। नयी द्रव्यवादी विचारधारा के अनुसार तो सृष्टि, पदार्थ और शक्ति से बनी हैं ऐसा माना जाता है। इस प्रकार हमारी जागृत चेतना और विकासशील सर्जनात्मकता को देखने की दृष्टि ही बदल जाती है। हेनरी बर्गसां ने सर्जनात्मक विकास का विचार वर्षों पूर्व प्रस्तुत किया था और जीवनशक्ति (इलानवाइटल) की परिकल्पना पेश की थी। इन सब बातों का सार इतना ही है कि जीवसृष्टि की सूक्ष्म प्रक्रियाओं और आंतरक्रियाओं तथा अनेक बाबतों में विद्यमान परस्परावलंबन को समझने के लिए वैज्ञानिक मंथन कर रहे हैं। किसी व्यक्ति, जीव या योनि का अस्तित्व एकदम पृथक नहीं है, पर किसी सूक्ष्म तंतु से जुड़ा है ऐसा धीरे धीरे समझ में आ रहा है। पुराना द्रव्यवाद भी शक्ति (एनर्जी), क्षेत्र (फील्ड), और चैतन्य युक्त स्व (कांशस सेल्फ), सर्जनात्मक सृष्टि (क्रियेटिव यूनिवर्स), और भावातीत वास्तविकता (ट्रांसेडेंटल रियेलिटी) जैसी बावतों से जुड़कर नया आयाम प्राप्त कर रहा है। आनेवाले दिनों में अहिंसा को ऐसा वैज्ञानिक समर्थन मिलेगा ऐसा संकेत शेल्ड्रेन की स्मरणीय पुस्तक से मिल रहा है। ऐसा होगा तब अहिंसा केवल धार्मिक परिकल्पना न रह कर विज्ञान सम्मत व्यवहार बन जायगी, यह संभव है। संतुलनशास्त्र (इकोलाजी) द्वारा अहिंसा को ऐसी व्यावहारिक भूमिका सौपी भी गयी है।

घड़ी भर को विज्ञान की ऐसी कठिन परिभाषा भूलकर भी इतना कह सकते हैं कि अहिंसा को अत्यन्त सूक्ष्म, विश्वव्यापी और वैज्ञानिक संदर्भ में समझने के दिन आ रहे हैं। आदमी की जीवनशैली पर अहिंसा की ऐसी व्यापक और गहरी समझ का असर नहीं होगा ऐसा सम्भव है क्या ?

आचार्य युवाप्रज्ञ कहते हैं : "आज की दुनिया भयग्रस्त है। आदमी सोचता है कि तीसरा विश्वयुद्ध होगा उसके बाद कुछ भी नहीं बचेगा। आज के वैज्ञानिकों ने ऐसे रसायन और गैसें खोजी हैं कि एक भी आदमी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं बचेगा, पर चीजें बच जायँगी, मकान बचेंगे, अनाज बचेगा, सोना-चाँदी बचेगा, सब पदार्थ बचेंगे, बस आदमी एक भी नही बचेगा।"

आज के आदमी में, फिर वह वैज्ञानिक भी हो सकता है, पदार्थ की चेतना काम कर रही है। इसी से उसे पदार्थ की चिन्ता होती रहती है।

कानपुर में एक व्यक्ति ने आचार्य तुलसी से कहा, "मैं एक महत्त्वपूर्ण काम करना चाहता हूँ। विश्वयुद्ध के बाद जब दुनियाँ नष्ट हो जाय तब भी गीता जैसे सर्वोच्च ग्रंथ बच जायँ इस हेतु मजबूत लोहे की पेटी में पाँच प्रतियाँ रखकर जमीन में गाड़ देना चाहता हूँ।" आचार्य श्री ने कहा, "आपकी भावना तो सुन्दर है, पर उसे पढ़ेगा कौन ?" ●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैन धर्म का प्राण तत्त्व अहिंसा है। दुनियाँ बचे ऐसी आशा का समूचा आधार, मानव जाति कितने अंश में अहिंसा को जीवन पथ के रूप में स्वीकार करती है, इस पर निर्भर है। 'द फोर्थ वाइजमैन' नामक वार्ता में लेखक हेनरी फॉन डाइक पात्र के मुख में एक वाक्य रखकर कहता है कि :—

"आशा बिना का धर्म—
अग्नि बिना की यज्ञवेदी
जैसा है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु ने शिष्य से पूछा : कौन देखता है ?

शिष्य : आँख ।

गुरु : क्या अँधेरे में आँख देख सकती है ?

शिष्य : प्रकाश और आंख दोनों मिलकर देखते हैं ।

गुरु : प्रकाश हो और आँख हो पर कोई व्यक्ति अचेत हो तो क्या वह देख सकता है ?

शिष्य : आँख, प्रकाश और मन तीनों मिलकर देखते हैं ?

गुरु : एक बालक आग देखता है और उसमें हाथ डालता है। क्या उसने आग 'देखी' नहीं ?

शिष्य : बालक में बुद्धि का विकास नहीं हुआ है। सच तो यह है कि आँख, प्रकाश, मन और बुद्धि एकसाथ मिलें तभी कुछ देखा जा सकता है।

गुरु : एक बुद्धिशाली व्यक्ति को मैंने जुआ खेलते देखा। वह 'देख' रहा है ऐसा कह सकते हैं क्या ?

शिष्य : सच्चे अर्थ में वही आदमी देख सकता है जिस पर अस्तित्व की कृपा होती है।

व्यक्ति के दो रूप होते हैं, व्यक्तिगत और अस्तित्व। अस्तित्व का अर्थ है 'होना' और व्यक्तित्व का अर्थ है 'कोई होना'। महावीर का अस्तित्व उनके व्यक्तित्व पर छाया था। वे 'होने' के बाद दूसरा कुछ भी नहीं थे।

मुनि नथमल : 'श्रमण महावीर' में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७. ब्रह्माण्ड का दिव्यगुंजन

जीवन के रहस्य को समझने के प्रयत्नों में आज वैज्ञानिक किसी ऋषि को शोभा दे ऐसी साधना कर रहे हैं। डार्विन और लामार्क के बाद जीव वैज्ञानिकों ने गुणाणु-विद्या के क्षेत्र में अनेक मंजिलें तय की हैं और न्यूटन, मैक्सवेल तथा आइनस्टीन के बाद के पदार्थ-वैज्ञानिक भी परमाणु का और साथ ही ब्रह्माण्ड का ओर-छोर जानने की चेष्टा कर रहे हैं। इस दिशा में हो रही खोजों में सभी विषयों के विशेषज्ञ एक साथ मिलकर मन्थन कर रहे हैं, कारण यह है कि रहस्य को समझने में विषयों की घेराबन्दी निष्फल होती दिखायी पड़ती है। ऐसे सहकारी प्रयत्न में पदार्थ विज्ञान, जीवविज्ञान के साथ मनोविज्ञान, परामनो-विज्ञान (पैरासाइकोलाजी) और फिर आध्यात्म-विद्या भी जुड़ रहे हैं। संक्षेप में रहस्य को समझने के लिए वैज्ञानिक सर्वदेशीय और सहकारी प्रयास कर रहे हैं।

यहाँ वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महामुनि कणाद की याद आती है। ईसापूर्व छठीं सदी के ये ऋषि फसल कट जाने के बाद खेतों में से अनाज के कण बीनकर ही अपना पेट भरते थे। उनका मत था कि यह जगत परमाणु (परम + अणु) से बना है। आज के वैज्ञानिकों की भाँति वे भी कहते थे, जिसका विभाजन न हो सके, उसे परमाणु कहते हैं। कहा जाता है कि जब वे मरणासन्न थे तब लोगों ने उनसे भगवान् का स्मरण करने को कहा, पर ऋषि तो 'पीलवः', 'पीलवः', 'पीलवः' कहते रहे और 'पीलु' अर्थात् 'अणु' का स्मरण करते रहे।

वैज्ञानिक क्षेत्र (फील्ड) और गुंजन (रेजोनेन्स) इन दो शब्दों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वारा अपनी बात प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं। पदार्थ-विज्ञान का विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र तो था ही, पर जीव विज्ञान में भी आकार या रूप के कारण वैसा ही गुणाणुशास्त्रीय क्षेत्र (माइक्रोजेनेटिक फील्ड) प्रचलित हुआ है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में कर्ट ल्युई ने क्षेत्रसिद्धान्त (फील्ड थ्योरी) प्रस्तुत किया है और जीवनावकाश (लाइफ स्पेस) की अवधारणा विकसित की है। एक अत्यन्त भिन्न सन्दर्भ में गीता के तेरहवें अध्याय में भी क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ की चर्चा हुई है। यह क्षेत्र जड़ नहीं है बल्कि गतिशील (डाइनेमिक) है। तथाकथित निर्जीव या जड़ पदार्थ भी हम समझते हैं, उस अर्थ में जड़ नहीं है। हेनरीबर्गसां 'सृजनात्मक विकास' की अवधारणा में जिसकी चेतना अवरुद्ध हुई है, ऐसे पदार्थ को 'जड़' कहता है। संक्षेप में जड़ता को अब निम्नतम चेतना माना जा रहा है और जड़ पदार्थों में डी० एन० ए० और आर० एन० ए० की सम्भावनाओं की बाबत खोज की जा रही है। गुंजन (रेजोनेन्स) की अर्थछायाएँ अनेक हैं। रेजोनेन्स माने 'खनक', 'अनुध्वनि', 'प्रतिध्वनि', अंग्रेजी कोशों में रेजोनेन्स माने 'सिम्पेथैटिक वाइब्रेशन' (समभावयुक्त स्पंदन या आन्दोलन) जैसा अर्थ होता है। यह ब्रह्माण्ड स्पंदनों से, आन्दोलनों से भरा हुआ है और उसके किसी भी कोनें में उठा छोटा-सा स्पन्दन भी भुवनव्यापी असर पैदा करता है। तालाब में फेंकी छोटी सी कंकरी जैसे जल की कुंडलियाँ पैदा करती है और यें कुण्डल समग्र तालाब में व्याप्त हो जाते हैं वैसे ही इन स्पन्दनों के बारे में भी कल्पना की जा सकती है। यही बात विचार या चिन्तन पर भी लागू हो सकती है।

अहिंसा की बात करें तो, ऐसा कह सकते हैं कि हमारा अस्तित्व अत्यन्त सूक्ष्म स्वरूप में समग्र सृष्टि के आन्तरक्रिया (इण्टर-एक्शन) के नाते जुड़ा हुआ है और समग्र चेतना में परस्परावलम्बन की अर्थात् मूलभूत एकता की सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। ऐसी सम्भावनाओं की भनक हमें संतुलनशास्त्र (इकोलाजी) में, परामनोविज्ञान में और रहस्य-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वादी विचारधाराओं में मिलती रहती है। इस समय तो हम मानों कोने-अतरे ढूंढ रहे हैं, अँधेरे में टटोल रहे हैं, ऐसी स्थिति है। ऐसा करते हुए आध्यात्म और विज्ञान आस-पास आ गये हैं ऐसी परिस्थिति बन गयी है।

ब्रह्माण्ड (कॉस्मास) के ऐसे दिव्य गुंजन में अहिंसा का क्या स्थान है। यहाँ 'हिंसा' माने 'व्यवधान' जैसा अर्थ बनता है। ब्रह्माण्ड के दिव्य-गुंजन में मेरे द्वारा ब्रह्माण्ड के दिव्यगुंजन में कम से कम व्यवधान हो यह देखना मेरा कर्तव्य है। (यही बात कबीर कहते हैं 'दास कबीर जतन सों ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया'–अनुवादक) मैं किसी को मार डालूँ तव ऐसा व्यवधान होता है। फिर पीड़ा दूँ, शोषण करूँ, ठगूँ, झूठ बोलूँ या चोरी करूँ तब भी वह दिव्यगुन्जन बिखरता है, क्षीण होता है। पीड़ा, चोरी, असत्य, शोषण, धोखादेही स्थूल भी होते हैं, सूक्ष्म भी होते हैं। इस प्रकार किसी से झूठ बोलकर उसे धोखा देना भी हिंसा है। अपने आप को ठगना भी हिंसा है। अपने शरीर को पीड़ा देना भी हिंसा है और किसी का अहित सोचना भी हिंसा है।

एक चींटी घर के तहखाने में आराम से चल रही है। उस पर मेरा पैर न पड़े इसको सावधानी रखने में मैं उस दिव्यगुञ्जन के प्रति आदर प्रदर्शित करता हूँ और इसी में आदमी के रूप में मेरी कुलीनता है। इसमें चींटी की चेतना का स्वीकार है और चींटी की चेतना के निमित्त से विश्वव्यापक चेतना का अभिवादन है। महावीर ने ऐसे स्थूल और सूक्ष्म, व्यापक और गहन, भौतिक और मानसिक अभिवादन की महिमा अढ़ाई हजार वर्ष पहले कही थी। अहिंसा का ऐसा विज्ञान प्रचलित करने का, लोगों तक पहुँचाने का काम उन्होंने किया। अहिंसा को विज्ञान का दर्जा प्राप्त हुआ इसमें महावीर का अवदान अनन्य माना जाना चाहिये। अहिंसा को जैन धर्म में 'परमधर्म' कहा है उसे ऐसे विशाल संदर्भ में न देखें तो अहिंसा की अवधारणा न समझने के समान है। आज भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैन साधुओं का प्रयत्न इस प्रकार जीने का होता है, जिससे ब्रह्माण्ड में कम व्यवधान हो और गुञ्जन की लय टूटे नहीं। प्रदूषण के कारण, शोर-गुल के कारण, युद्ध के कारण और परिग्रह के कारण लय बिखरती है। सच्चा जैन सतत ऐसा न हो इसकी सावधानी रखकर जीने की चेष्टा करता है। जीवमात्र के जीने के हक का ऐसा स्वीकार, यह जैन दर्शन की मौलिकता है। संसार के किसी और धर्म में ऐसी स्वीकृति को 'परमधर्म' का दर्जा नहीं दिया गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फ्रिटजाफ काप्रा कहता है, 'जब मन अशान्त होता है तब पदार्थों की अनेकता (मल्टी-प्लिसिटी) पैदा होती है। परन्तु जब मन शान्त हो जाता है तब पदार्थों की अनेकता नष्ट होती है और एकता सिद्ध होती है।'

सभी धर्मों की बुनियाद में, अस्तित्व में विद्यमान मूलभूत एकता का प्रतिपादन होता देखने को मिलता है। इस बुनियादी एकता का विस्मरण न हो तब तक बड़े सम्प्रदायों और गौण सम्प्रदायों के बीच झगड़े हो ही नहीं सकते। जहाँ ऐसे झगड़े हो, वहाँ धर्म नहीं, धर्म का शव होता है। बारम्बार हमें अपने आप से पूछते रहना चाहिए 'हम धर्मयात्रा में हैं कि शव की स्मशान यात्रा में।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सड़क कोचड़ से लथपथ थी ।

एक मोटर दौड़ती हुई आयी और उसमें फँस गयी ।

मोटर चालक ने इधर उधर देखा ।

एक आदमी मदद करने आया और दोनो ने मिलकर गाड़ी कीचड़ से बाहर निकाली ।

मोटर चालक ने उस आदमी को पाँच रुपया दिया । और पूछा,

'तुम्हे इस प्रकार अच्छी कमाई होती होगी ?'

'नहीं साहब । रात को कोई आमदनी नहीं होती, दिन में ही होती है ।'

'ऐसा क्यों । रात में तो ज्यादा मोटर गाड़ियाँ आती होंगी ?'

'साहब । रात में तो मैं मेहनत करता हूँ । सड़क पर पानी गिराता हूँ,

फिर मिट्टी डालता हूँ । सबेरे तक कीचड़ तैयार हो जाता है ।

मोटर गाड़ियाँ फँस जाती है, तब मेरी कमाई शुरू हो जाती है ।'

हम ऐसा ही करते हैं ।

हम स्वयं विषमता खड़ी करते हैं,

और स्वयं ही समता के लिये प्रयत्न करते हैं ।

साधना के क्षेत्र में

सबसे ज्यादा मूल्य समता का है ।

—मुनि नथमल

'महावीर की साधना का रहस्य' से साभार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८. वैदिक, जैन और बौद्ध दर्शन के तत्व

महावीर और बुद्ध जन्मना हिन्दू थे, क्षत्रिय थे। यह दोनों सम-कालीन महामानवों ने उस समय के वैदिक धर्म में पैठी सड़न की बाबत ऊहापोह[1] करके एक जबरदस्त वैचारिक क्रान्ति का आरम्भ किया। कालक्रम से किसी भी धर्म में विचार-जड़ता और सड़न घुस ही आती है। धर्म को मथकर उससे पैठे दोषों को दूर करने का काम महामानवों द्वारा होता रहना चाहिये। ऐसा न हो तो प्रवाह रुक जाता है और धर्म में पाखण्ड बढ़ जाता है। वैदिक परम्परा के उत्तम तत्त्वों को भुला दिया गया और उनके स्थान पर हिंसा, कर्मकाण्ड, अन्धश्रद्धा, शोषण, पक्की वर्णव्यवस्था, अस्पृश्यता और पाखण्ड का बोलबाला हो गया। महावीर तथा बुद्ध ने लोगों के सामने नया जीवनदर्शन प्रस्तुत करके क्रान्ति की शुरूआत की। उस समय की ब्राह्मण परम्परा के निहित स्वार्थों के सामने खड़ा होना तनिक भी आसान नहीं था, परन्तु महावीर और बुद्ध में विद्यमान जन्मजात क्षात्र-तेज उपकारक सिद्ध हुआ। ब्राह्मणों ने उन्हें हैरान परेशान करने में कुछ भी उठा न रक्खा होगा, परन्तु निर्भय और निर्वैर रहकर दोनों महानुभाव अपनी बात लोगों के सामने रखते रहे। लोगों को समझ में आये इसके लिए संस्कृत के बदले प्राकृत (अर्ध-मागधी और पाली) भाषा प्रचलित करके दोनों महामानवों ने अपनी उपलब्धियाँ लोकोपयोगी ढंग से प्रस्तुत कीं। दोनों

---

१. 'ऊहापोह' शब्द चालू अर्थ में न लें। 'ऊह' माने 'तर्क', 'परीक्षण' और 'अपोह' माने 'प्रतितर्क' या 'शंका निवारण'। इस प्रकार ऊहापोह में खण्डन और मण्डन दोनों प्रस्थापनाओं के मेल से होती चर्चा का भाव है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निरीश्वरवादी थे इस कारण भी तथाकथित धार्मिक लोगों ने उनका भारी विरोध किया। दोनों महानुभावों ने चाण्डाल को नीचा मानकर उसे अलग नहीं रक्खा और दीक्षा देने में भेदभाव नहीं किया। पुनः पहले महावीर ने और फिर बुद्ध ने स्त्रियों को मोक्ष का अधिकार दिया और संघ में स्थान दिया। उस जमाने में स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था, पुराण या भागवत पढ़ने की छूट थी।

महावीर और बुद्ध ने जिस परम्परा के विरुद्ध ऐसी बड़ी क्रान्ति की उसके मूल (रूट्स) उसी परम्परा में थे। पुनः उस परम्परा के अच्छे तत्त्वों को स्वीकार न करने का कोई कारण नहीं था। दोनों महानुभावों ने खुले हृदय से यह कार्य किया। सच बात तो यह है कि महावीर आज के रूढ़ अर्थ में 'जैन' नहीं थे और बुद्ध 'बौद्ध' नहीं थे। दोनों ही ने आदमी को बन्धनमुक्त होने का रास्ता बताया। जीवन भर वे यही काम करते रहे और परमपद प्राप्त किया। भारत की धर्मवल्लभ संस्कृति को अपने अवदान द्वारा इन्होंने गरिमा और स्वच्छता प्रदान की। जीवदया की अवधारणा को महावीर ने अहिंसा के और बुद्ध ने करुणा के व्यापक सन्दर्भ में रखकर जीवन की मूलभूत एकता को स्वीकार किया। महावीर ने तो जीवमात्र के प्रति आदर को सूक्ष्म-अर्थ में समझाया और अहिंसायुक्त जीवनदृष्टि की भेंट संसार को दी। ऐसा करके उन्होंने अहिंसा को 'परमधर्म' की ऊँचाई पर प्रतिष्ठित किया। मानव इतिहास में महावीर के ऐसे उत्कृष्ट अवदान का जोड़ा मिलना मुश्किल है।

वैदिक, जैन और बौद्ध विचारधाराएँ विगत अढ़ाई हजार वर्षों से समानान्तर बहती आ रही है। नदी का मूल्य उसमें कितनी मछलियाँ तैर रहीं है इससे नहीं आँका जाता। जैनों की संख्या भले ही प्रमाण में कम हो पर इससे जैन दर्शन की मौलिकता का महत्त्व किसी भी तरह से घटता नहीं है। इन तीनों परम्पराओं में विद्यमान समान तत्त्वों में नीचे दी गयी बुनियादी संकल्पनाएं विद्यमान हैं :—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१. कर्म का सिद्धांत (कर्मवाद)
२. पुनर्जन्म
३. मोक्ष (ब्रह्मनिर्वाण, निर्वाण, णिव्वाणं)

वैदिक (हिन्दू) दर्शन ईश्वरवादी है, जबकि जैन और बौद्ध दर्शन निरीश्वरवादी हैं। जैन और वैदिक दर्शन में आत्मा का और परमात्मा का स्वीकार है जबकि बौद्ध दर्शन आत्मा को स्वीकार नहीं करता। वैदिक दर्शन में अहिंसा का आदर्श दैवी-संपदा के रूप में स्वीकार किया गया है पर उसे केन्द्रीयता (सेन्ट्रालिटी) नहीं दी गयी है। गीता में 'अहिंसा' शब्द चार वार प्रयुक्त हुआ है, पर समग्र रूप से हिन्दूधर्म में अहिंसा को उच्च आसन नहीं दिया गया है। हिंसा के तांडव के बीच घिरकर महाभारत में (गीता में) अहिंसा मुश्किल से खड़ी रह सकी है, परन्तु व्यवहार में अहिंसा का विनियोग किस प्रकार हो सकता है इसकी रूपरेखा कहीं भी नहीं मिलती। वह वास्तव में मिलती है जैन दर्शन में।

नीचे तीनों दर्शनों में उपयुक्त समान अवधारणाओं की सूची दी गयी है। इससे तीनों में विद्यमान समान तत्त्वों का थोड़ा ध्यान आ सकेगा। सच तो यह है कि यह एक गहरी शोध का विषय है, परन्तु तीनों के गुरुतम-साधारण अवयवों का अन्दाज हो सके इस आशय से यह विनम्र प्रयास किया गया है।

कुछेक समान अवधारणाएँ

वैदिक दर्शन	जैन दर्शन	बौद्ध दर्शन
कर्म सिद्धान्त	कर्म सिद्धान्त	कर्म सिद्धान्त
कर्म	कर्म (परमाणु समूह)	कर्म (संस्कार समूह)
पुनर्जन्म	पुनर्जन्म	पुनर्जन्म
अपरिग्रह	अपरिग्रह (अकिंचनता)	अकिंचनता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोक्ष, निर्वाण	मोक्ष, निर्वाण (कर्मक्षय)	निर्वाण
ब्रह्म निर्वाण	णिव्वाणं	अमृत-पद
ध्यान	ध्यान	ध्यान
स्थित-प्रज्ञता	केवलज्ञान, अर्हत्व	सम्यक् समाधि
ब्राह्मि स्थिति	अयोगी-केवली, जिनत्व	सम्बोधि, बुद्धत्व
	विराग-चरित्र, निर्वेद, वीतराग चारित्र	वैराग्य
समाधि	समाधि	समाधि
सिद्ध	सिद्ध	बुद्ध
समत्व	समता, मध्यस्थभाव	समता
संयम	संयम (संवर)	संयम, संवर
—	संघ	संघ
ब्राह्मण	श्रमण	श्रमण
आत्मा	आत्मा, जीव	—
परमात्मा	परमात्मा, जिन	—
तप	तप	तप
आसन	आसन	आसन
गुरू	गुरू, आचार्य	गुरू, कल्याणमित्र
असंग	असंग	असंग
बन्ध	बन्ध	संयोजन, संयोग
मार्ग	मार्ग	मार्ग, प्रतिपदा
परलोक	परलोक	परलोक
योनि	योनि	योनि
मोह	मोह	मोह
वैतरणी	वैतरणी	—
व्रत	व्रत	व्रत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संसार	संसार	संसार
निवृत्ति, सन्यास	श्रामण्य	परिव्रज्या
अहिंसा	अहिंसा	अहिंसा, करुणा
प्रज्ञा	प्रज्ञा (निश्चयनय)	अचित्य प्रज्ञा
धर्म	धर्म	धर्म (धम्म)
दर्शन	दर्शन	दर्शन
दीक्षा	दीक्षा	दीक्षा
योग	योग	योग
साधु	अनगार, साधु	भिक्खु, साधु
मूढ़ता	मूढ़ता (लोक मूढ़ता, देवमूढ़ता, गुरुमूढ़ता)	मूढ़ता
समचित्तत्त्व	समता	उपेक्षा
त्याग	त्याग	त्याग
आर्जव	आर्जव	ऋजुकता

यह सूची सम्पूर्ण नहीं है, लेकिन इस पर से कुछ ख्याल आ सकते हैं। जैन और वैदिक परम्परा की रिश्तेदारी ऐतिहासिक है। एक उदाहरण यह है। 'पार्श्वनाथ से पहले बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमी हुए थे, ये शलाका पुरुष श्री कृष्ण के चाचा के पुत्र थे। श्री कृष्ण ने गो सेवा और गोरस (दूध आदि) का जो प्रचार किया वह ठीक से देखें तो अहिंसक समाज रचना के लिये प्रयुक्त हुआ मंगल प्रयास था। राजर्षि निमि मिथिला के थे और राजा जनक के वंशज थे। उनकी आध्यात्मिक वृत्ति का जैन आगम में सुंदर चित्रण आता है। इतिहास में समय-समय पर नाम बदलते रहते होंगे, पर इस धर्म परम्परा और संस्कृति का मूल, सिद्धान्तबीज तो जैसा आज है वैसा का वैसा ही था–आत्मवाद और अनेकान्तवाद। इसी आत्मवाद की भूमि पर जैन धर्म–परपरा का कल्प-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृक्ष बढ़ता गया है। जैनधर्मी साधु आज भी श्रमण कहलाते हैं। श्रमण शब्द श्रम, समता और विकार-शमन का सूचक है।[1]

भारत की भूमि स्वभावतः समन्वय भूमि है। दुनियाँ के तमाम धर्मों की प्रयोगशाला माने भारत। भारतीय दर्शन के तीन महानद है—वैदिक (हिन्दू) दर्शन, जैन दर्शन, और बौद्ध दर्शन। अन्ततोगत्वा कोई भी दर्शन जीवन में संक्रान्त होना चाहिये। इन तीनों दर्शनों में मौलिकता, गहरापन और सूक्ष्मता विद्यमान है।

१. 'समणसुत्तं' यज्ञ प्रकाशन समिति, भूमिपुत्र, हुजरातपागा, वडोदरा, पृ० ११।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अत्यधिक तिरस्कार पाया, शक्तिशाली शत्रु भी उतना नुकसान नहीं पहुँचाता, जितना निग्रह विहीन राग-द्वेष पहुँचाते हैं।

यदि सोने और चांदी के कैलाश जैसे असंख्य पर्वत हो जाय तो भी लोभी आदमी को संतोष नहीं होगा क्योंकि इच्छा आकाश जैसी अनन्त है।

तीन बनिये मूलपूंजी लेकर निकले। इनमें से एक नफा करके, दूसरा मूल रकम के साथ और तीसरा मूल रकम भी गंवाकर वापस लौटता है। यह व्यापार की उपमा हुई। ऐसा ही धर्म की बाबत भी है।

जीव को मारना, अपने को मारने के बराबर है। जीव पर दया करना यह अपने पर दया करने के बराबर है।

—समण सुत्तं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक भारतीय युवक अमेरिका गया।

वह मित्र के आफिस में बैठा था।

मित्र हर आध घण्टे बाद पत्नी को फोन करता था। 'तुम्हें तो पत्नी से खूब प्रेम है, तो फिर बार-बार फोन किस लिये।' युवक ने पूछा।

'सच कहूँ। प्रेम तनिक भी नहीं है। मुझे विश्वास नहीं है कि वह घर में है या किसी के साथ भाग गयी है। थोड़ी-थोड़ी देर बाद फोन करके जान लेता हूँ कि स्थिति कैसी है।' मित्र ने सूचित किया। जिसे पत्नी पर इतना भी भरोसा न हो वह व्यक्ति कभी भी समाधि प्राप्त कर सकता है क्या ?

कभी भी नहीं।

समाधि के लिये विश्वास और आस्था बहुत आवश्यक है।

आदमी ध्यान करने बैठा है, परन्तु उससे प्रश्न होता है, 'मैं सफल होऊँगा क्या ?'

पहले कदम पर ही वह स्खलित होता है।

ऐसा आदमी

लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता।

—मुनि नथमल

'महावीर की साधना का रहस्य'

से साभार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्याद्वाद और अनेकान्त

सत्य अपने पास है, केवल अपने ही पास है और जो अपनी समझ में आया वही सत्य है ऐसा मान लेना आदमी को अच्छा लगता है। श्री अरविन्द ने कहीं कहा था कि आदमी ऐसा विचित्र है कि जो चीज थोड़ी भी अच्छी लगती है उसे धर्म बना डालता है। हमारा पन्थ-प्रेम और हमारी विभाजन की प्रीति अद्भुत है सरदार पटेल ने एकबार कहा था कि इस देश में ८२ जाति के ब्राह्मण और ८३ जाति के समाजवादी हैं। सितार बजाते समय अंगूठा सितार को छुवे या अलग रहे इस विषय पर संगीतज्ञों के खानदान और नाखानदान जैसे भेद एक जमाने में बने थे। अपनी बात ही सच्ची है ऐसी मान्यता युद्ध के मूल में विद्यमान है। 'युद्ध' का पर्याय है 'मम सत्यम'।

बर्ट्रांड रसेल कहते हैं : "जिन विषयों के लिये प्रमाण नहीं होते वे बातें विशेष उन्माद के साथ मानी जाती हैं। गुणाकारके कोष्ठक के बारे में या कन्याकुमारी अन्तरीप के अस्तित्व के बारे में किसी को आवेश में नहीं आना होता क्योंकि ये विषय शंकास्पद नहीं होते। पर धर्मशास्त्र या राजनीति के सिद्धान्तों के बारे में जहाँ बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा मानते हैं कि अधिक से अधिक सम्भावना का निष्कर्ष इधर या उधर सहज रूप से ढलता है वहाँ लोग उन्माद से भरकर विवाद करते हैं और सैन्यबल से प्राप्त शारीरिक गुलामी या शिक्षा संस्थाओं द्वारा उपलब्ध हुई मानसिक गुलामी से वे अपने मन्तव्यों का समर्थन कराते है।"[१]

---

१. बर्ट्रांड रसेल के १९६२ में प्रकाशित लेख 'ह्वाट इज फ्रीडम' में से। 'शिक्षण नी वर्तमान फिलसूफियों' लेखक गुणवन्त शाह, घनवन्त देसाई, अनग बुक डीपो, अहमदाबाद १९८२, पृ० ४०।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीवन रेल की पटरी पर दौड़ती रेलगाड़ी जैसा नियतमार्गी नहीं होता, तब उसका रहस्य एकदम स्थूल, तुरन्त समझा जा सके ऐसा कैसे हो सकता है? परमसत्य की जिसे प्राप्ति होती है वह तो शान्त हो जाता है, परन्तु जिन्हें सत्य का एकाध अंश मुश्किल से प्राप्त हुआ होता है वे तो ऐसा जुट जाते हैं मानों परमसत्य का इजारा उन्हें ही मिल गया हो। ऐसे लोगों को अनुयायी भी जल्दी मिल जाते हैं। कभी-कभी तो अपने पास सत्य का एक कण भी न हो तो भी अनुयायी ज्यादा जुनून से मतविशेष का प्रतिपादन करने लगते हैं। रेत सूरज से भी ज्यादा तपती है और चाय की अपेक्षा चाय का प्याला ज्यादा गरम होता है ऐसी स्थिति होती है। दुनियाँ आज भी अनुयायियों के दुराग्रह से पीड़ित होती है। अनुयायी वह है जो विचार करने का कान्ट्रैक्ट किसी और को देकर या अपनी स्वतन्त्र विचार-शक्ति पर ताला बंद कर चाभी किसी और को दे देता है। सदियों से अनुयायियों के हत्थे चढ़ा सापेक्ष (रिलेटिव) सत्य धर्मों की, पक्षों की, पन्थो की, अनुपन्थों की, राष्ट्रवादियों की और ग्रन्थों की कैद में पड़ा सड़ता रहा है।

जैन दर्शन की एक अत्यन्त मौलिक देन है स्याद्वाद। सत्य की प्राप्ति की इच्छा करने वाले को अपने मन को खुला रखना पड़ेगा और किसी भी विषय को केवल एक ही दृष्टिकोण से न देखकर सभी दिशाओं से देखना पड़ेगा। ऐसा करने के बाद अपने को सब कुछ समझ में आ गया है ऐसा सत्यशोधक या जीवनशोधक के लिये मानलेना उचित नहीं हैं।

इस प्रकार स्याद्वाद की बुनियाद में तीन मूलभूत विकल्प है :

१. हो भी सकता है। (स्यादस्ति)

२. नहीं भी हो सकता है। (स्यान्नास्ति)

३. वर्णन न किया जा सके ऐसा हो सकता है (स्यादवक्तव्य)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन तीनों विकल्पों के मेल से उत्पन्न सात विकल्प 'सप्तभंगी' कहे जाते हैं। ये सात विकल्प इस प्रकार है :

१. हो भी सकता है
२. नहीं भी हो सकता
३. हो भी और न भी हो
४. वर्णन न किया जा सके ऐसा
५. हो पर अवर्णनीय हो
६. न हो और अवर्णनीय भी हो
७. हो या न हो और साथ ही अवर्णनीय भी।

रहस्य को समझने के लिये चिंतन करनेवाले के पास खुला मन और नम्रता न हो तो अनेक उपद्रव हो सकते हैं, ऐसा सम्भव है। सेव पेड़ से नीचे गिरे, इस घटना के विषय में नीचे दिये प्रश्न उठ सकते हैं :

१. क्या सेव पक गया था, इसलिये गिरा।
२. क्या सेव गुरुत्वाकर्षण के कारण गिरा।
३. क्या उसकी ढेपी सड़ गयी थी, इस कारण गिरा।
४. क्या सूरज की धूप में सूख गया था, इस कारण गिरा।
५. क्या पवन के झोंको के कारण गिरा।
६. पेड़ के नीचे खड़े भूखे लड़के के लिये गिरा होगा।

इस सृष्टि में रहस्यों का पार नहीं है। विज्ञान ने अनेक रहस्यों का भेदन किया है तो भी अभी सभी रहस्यों का भेद नहीं खुला है। सबसे ज्यादा ज्ञानो व्यक्ति का ज्ञान भी कूप के मेढक के ज्ञान जितना सिद्ध हो ऐसी स्थिति है। प्रसिद्ध ब्रिटिश खगोलशास्त्री बर्नार्ड लोवेल ने कहा कि, 'आज की दृष्टि से देखें तो आदमी की ब्रह्माण्ड विषयक जानकारी एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरब वर्ष जितनी आउट आफ डेट हैं'। आदमी ने पहली बार चन्द्र पर पैर रक्खा तब उसे विजय बतानेवाले अमेरिकन सिनेटर के भाषण को ध्यान में रखकर लोरेंन इसिले ने कहा कि ऐसा कहना घास में भटकते भुनगे को यूनो का महामन्त्री बताने जैसा हास्यास्पद माना जायगा। शरीर में विद्यमान रक्त का श्वेतकोश शरीर के बारे में जितना 'जानता' है, उतना ही हम इस ब्रह्माण्ड के बारे में जानते हैं।

शायद ऐसे बोध के कारण वैज्ञानिक दिन प्रतिदिन नम्र बनते जा रहे हैं। वे जैसे-जैसे रहस्य के प्रदेश का छोर पाने की चेष्टा करते हैं वैसे-वैसे उन्हें अपनी अल्पता और अल्पज्ञता का अहसास होता जाता है। इसीसे तो 'इनसाइक्लोपीडिया आफ इग्नोरेंस' जैसी पुस्तक प्रकाशित हुई है। सत्यान्वेषी के पक्ष में उत्पन्न ऐसी सत्यनिष्ठ नम्रता में से अनेकान्त का उदय हुआ है। 'सत्य' मान लें इतना सरल नहीं है, बल्कि संकुल है, गूढ़ है। पुनः अमुक विषय में देखते ही पक्का मन्तव्य दे देने में मूर्खता ही सिद्ध होती है। सर्वदेशीय अवलोकन और परीक्षण के बाद भी उतावले होकर निर्णय ले लेने में भी अपरिपक्वता ही होती है। पृथ्वी सपाट नहीं है बल्कि गोल है, ऐसी बात कहने के अपराध में इटली के ब्रूनो को जिंदा जला दिया गया। पृथ्वी और सूर्य की गति के बारे में गेलिलियो का मत उस समय के पादरियों के मत से भिन्न था इसलिये मौत से बचने के लिये उसने माफी मांग ली। संक्षेप में वैचारिक असहिष्णुता ने अनेक महामानवों को मौत के घाट उतार दिया है।

स्याद्वाद और अनेकान्त अन्योन्यपूरक हैं। स्याद्वाद में तमाम संभावनाओं का तर्कपूर्ण स्वीकार है, जबकि अनेकांत में खुले मन और सर्वदेशीय पृथक्करण की महिमा है। दोनों ही सत्य की शोध के लिये आवश्यक नम्रता की प्रतिष्ठा करते हैं।

आइन्स्टाइन द्वारा प्रबोधित सापेक्षता (रिलेटिविटी) के साथ स्याद्वाद और अनेकान्त का अनुबन्ध स्थापित होता दिखायी पड़ता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। आइन्स्टाइन ने अवकाश (स्पेस) और समय (टाइम) के बीच समन्वय को स्पष्ट किया और समय की चौथे आयाम के रूप में पहिचान करायी। वैज्ञानिक समय को 'इनविजिवुल स्पेस' (अदृश्य अवकाश) के रूप में देखते हैं। महावीर ने आत्मा के लिये 'समय' शब्द का प्रयोग किया है। जो सनातन अविनाशी आत्मतत्त्व है उसके लिये 'समय' शब्द का प्रयोग बड़ा ही मौलिक है। ऐसे 'समय' को समझने के लिये सभी लाग लपेट छोड़कर अन्दर गहरे उतरने की क्रिया को 'सामयिक' कहते हैं। जैन दर्शन की अनेक अवधारणाओं में ऐसी मौलिकता देखने को मिलती है।

निरपेक्ष (एबसोल्यूट) सत्य प्राप्त करने में आदमी को अपनी मर्यादाएँ तो आड़े आती ही हैं, साथ ही जो मूलत : अनिर्वचनीय है उसे शब्दों में कहना अशक्य हो जाता है। शब्द की सीमा में सत्य को समोना वह, जैसा नामदेव कहते हैं उस प्रकार, आकाश को गिलाफ चढ़ाने जैसा है। आदमी को जो हाथ आता है वह तो बहुत कुछ सापेक्ष सत्य (रिलेटिव ट्रूथ) होता है। ऐसे सत्य को प्राप्त करने वाले को स्याद्वाद और अनेकान्त की भाषा ही इस्तेमाल करनी होगी। एक कली कैसे पुष्प में परिवर्तित होती है इसका रहस्य हम नहीं जानते। ऐसी परिस्थिति में जो कुछ मिला उसे अन्तिम सत्य मान लेना, नादानी है। जैन धर्म की बुनियाद में अहिंसा है और उसके भव्य हिमालय के शिखर पर स्याद्वाद सुशोभित हैं। स्याद्वाद और अनेकान्त में मन की, अभिप्राय की और वृत्ति की अहिंसा का संकेत है। अहिंसा की ऐसी सर्वतोमुखी परिकल्पना दूसरे किसी धर्म में नहीं की गयी है। इसके लिये दुनियाँ के समस्त विचारशील लोग जैन दर्शन के ऋणी रहेंगे। ●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक परमाणु पर
क्या क्या बीतता होगा
तब
बम बनता होगा।
और
सयाना आदमी
पागल बने
उससे पहले
उस पर क्या नहीं बीता होगा !

—लेखक के काव्य संग्रह
'विस्मय नुं परोढ़' से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यू थिंक यू कैन स्टैम्प आन दैट कैटर-पिलर
आल राइट, यू हैव डन इट
एण्ड नाऊ,
मेक द कैटर-पिलर अगेन !
[तुम सोचते हो तुम उस इल्ले को पैरों से रौंद
सकते हो
चलो ठीक है, तुमने यही किया
और अब
इल्ली को फिर से बना दो !]

—लाजां देल वास्तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महावीर और देहदमन

महावीर और जिनमार्ग के साथ देहदमन इस तरह जुड़ गया है मानो जैनदर्शन का सार आत्मपीड़न ही हो। इससे बड़ी कोई दूसरी भूल हो ही नहीं सकती। महावीर ने तप का कार्यक्रम नहीं बनाया था। उनसे सहजरूप से जो हो गया वही तप बन गया। उन्होंने वस्त्र का त्याग नहीं किया था, उनके वस्त्र गिर गये। एक ग्वाले ने महावीर के कान में घास की शलाका खोंस दी थी तो भी वे स्वस्थ रहे। यह 'स्वस्थता' 'स्व में स्थिर' हुई चेतना की स्वस्थता थी। उसमें आयास या असहजता नहीं थी। हमारे शरीर के किसी भाग पर डाक्टर नश्तर लगाये और हम जी कड़ा करके सहलें, **उंकार**[1] भी न करें, उसमें और महावीर की स्वस्थता में गुणात्मक अन्तर है। नश्तर लगे तब होनेवाली पीड़ा को सहकर आदमी कभी-कभी अपने स्टेटस का ख्याल करके रोना टाल देता है। महावीर की स्वस्थता पीड़ा का स्वीकार नहीं करती। वे तो देहातीत बनकर पीड़ा को साक्षीभाव से देखते रहे होंगे। जिसका देहभाव नष्ट हो गया है उसे पीड़ा की वेदना होसकती है वह हमें होती वेदना जैसी निजी कैसे हो सकती है? कहते हैं कि महावीर ने उस ग्वाले को क्षमा कर दिया। यहाँ बहुत बड़ा घोटाला होता है। जब हम किसी को क्षमा करते हैं तब हमारे मन पर क्षमा देने का बोझ रहता है। क्षमा से हमारे 'मन' में 'देने' की बात बनती है। महावीर के पास 'देने' को कुछ भी नहीं बचा था–क्षमा भी नहीं। ग्वाले ने उन्हें जो पीड़ा पहुँचायी वह

---

१. 'उंकार' का सम्बन्ध हमारे अहंकार (हुंकार) के साथ है। अहंकार का आधार है, देहभाव। देहभाव हो, तब पीड़ा न हो ऐसा हो सकता है क्या?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन तक पहुँची हो तब न क्षमा को ग्वाले तक पहुँचाने का प्रश्न उठेगा। महावीर की क्षमा अनोखी थी।

यहाँ 'क्षमा' शब्द समझ लेना जरूरी है। वह 'क्षम' मूल से आया है और उसका अर्थ है 'सामर्थ्य'। दूसरे शब्दों में कहें तो जो 'शक्तिमान' है वह 'क्षमावान' है। महावीर की क्षमता का सम्बन्ध 'सामर्थ्य' से है। हमारी सामर्थ्य कम पड़ती है, इससे किसी को माफी 'देने' की क्रिया बोझिल बनती है और साथ ही असहज बनती है। ज्योतीन्द्र दवे को दारा सिंह मुक्का मारें और वे जमीन पर गिरे तब ज्योतीन्द्र दारा सिंह को क्षमाकर दें ऐसा कभी हमारी नाजुक क्षमा (क्षांति) के बारे में होता है ? संक्षेप में सामर्थ्य बिना की क्षमा माने निष्पर्ण वृक्ष की छाँव। कायर की अहिंसा की, कुँवारे के ब्रह्मचर्य की और निर्जल एकादशी के अपरिग्रह की महिमा नहीं होती। महावीर की क्षमा परम सामर्थ्य में प्रगटे निर्वेद या विराग चरित्र से सहज भाव से उत्पन्न क्षमा थी। किसी हाथी की पूँछ पर चींटी काटे तो हाथीं चींटी को क्षमा नहीं कर देता, चींटी के काटे को हाथी स्वीकार करता है, तभी क्षमा 'देने' का प्रश्न उठता है। महावीर के देहदमन को भी ऐसे सूक्ष्म संदर्भ में देखना होगा।

जीभ के अनुपयोग को हम मौन मानते हैं। प्रजनन इन्द्रिय के अनुपयोग को अर्थात् संभोग से दूर रहने के व्रत को हम 'ब्रह्मचर्य' कहते हैं। युद्ध की अनुपस्थिति को हम 'शाँति' कहते हैं और रोग के अभाव को 'आरोग्य'। इसी प्रकार मुख से आहार लेना बन्द हो तो उसे 'उपवास' कहा जाता है। 'उपवास' का सही अर्थ है 'नजदीक होना'। उपवास तो परम सत्ता के सामीप्य की भनक मिले इस हेतु अपने अस्तित्व को तैयार रखने की चेष्टा है। दूसरे शब्दों में कहें तो उपवास चित्त की एक अत्यन्त प्रार्थनामय, निर्वेद पूर्ण और मस्ती से भरी अवस्था है। सन् १९३३ की ११ वीं फरवरी को 'हरिजन' के प्रथम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंक में एक व्यक्ति ने 'उपवास क्या जोर दबाव नहीं हैं ?' ऐसा प्रश्न गांधीजी द्वारा किये उपवास के सन्दर्भ में पूछा था। गाँधीजी ने उत्तर में लिखा :

'मैं विश्वास करता हूँ कि विना उपवास के कोई प्रार्थना नहीं होती और बिना प्रार्थना के कोई सच्चा उपवास नहीं होता। मेरा उपवास एक पीड़ित आत्मा की प्रार्थना थी।'

इस प्रकार दुनियादारी के सिलसिले में किये गये उपवास का महत्त्व नहीं है।;महावीर ने उपवास के संकल्प नहीं किये थे। उनके सहज निर्वेद के कारण देहभाव छूट गया और ऐसी अवस्था अनेक दिनों तक रही होगी और ऐसे समय 'आहार' एकदम विस्मृत हो जाय ऐसा हुआ होगा। उनकी ऐसी मस्ती की दशा की हम साधारण मानव तो केवल कल्पना ही कर सकते हैं। आदमी के उपवास के साथ कामना जुड़ जाती है। राजनीतिक लोगों का उपवास तो कभी-कभी निराहार से भी नीचे दर्जे का होता है। अस्तु उस बात को तो एक ओर रखदें। 'उपवास' शब्द की इससे बड़ी अक्षम्य विडम्बना दूसरी कोई हो नहीं सकती। धार्मिक उपवास के साथ भी जब अमुक दिनों की गिनती और ध्येय-लक्षिता जुड़ जाती है तब वह व्रत का दर्जा प्राप्त करता है। व्रत का महत्त्व मन की संस्कारिता के लिये स्वीकार करें तो उसके साथ जब कृत्रिमता, कष्ट, दिखावा, धूम-धड़क्का और प्रसिद्धि जुड़ जाते हैं तब उपवास का हार्द्र नष्ट हो जाता है। आध्यात्म मूलतः अत्यन्त व्यक्तिगत विषय है। साधना की यात्रा तो सच पूछिये एकल यात्रा है।

उपवास साधक और परमसाध्य के बीच संवादिता (कम्युनिकेशन) का सेतु बाँधने की प्रार्थनामय चेष्टा है। इस संवादिता की निष्पत्ति माने साधक को होती प्रतीति, ऐसी प्रतीति कभी आधी अधूरी, थोड़ी संदिग्ध और साथ ही एकदम क्षणिक हो तो भी उसका बहुत मूल्य है। महावीर के उपवास में कष्ट तो ढूँढ़े नहीं मिलेगा। परम आनन्द की वह अवस्था

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होनी चाहिए। परमवैराग्ययुक्त साक्षीभाव में संभव ऐसे निर्विषयी मन का वह आनन्द होगा, ऐसा कह सकते हैं। मन हट गया हो ऐसी अलौकिक और प्रसादयुक्त अवस्था की चरमसीमा पर महावीर पहुँचे होंगे इसका संकेत उनके एकदम अनायास ढंग से कई दिनों तक चलते उपवास परसे मिलता है। कोई उपवास नियमानुसार या किसी निश्चित रीति से (कंसिस्टेंटली) नहीं चले थे। अन्दर की मस्ती नियमानुसार कैसे हो सकती है ?

मन के संस्कार के लिये व्रत-उपवास की जरूरत होती है, परन्तु अन्त में तो यह बैसाखी छोड़नी ही चाहिए। साधना अन्त में तो सहज बननी चाहिए। तप, तितिक्षा, कष्ट प्रयोग, अनशन, और यमनियम के साथ जुड़े दमन के कारण बहुत सी प्रतिक्रियाएँ और कभी-कभी दंभ भी पैदा होता है। फ्रायड ने अचेतन मन की गहरी गवेषणा करके दमन की मर्यादाएँ दुनियाँ के सामने प्रगट की। जिनमार्गी ऐसी विज्ञान-प्रदत्त जानकारी का अनादर अपनी प्रमाणिकता की उपेक्षा करके ही कर सकते हैं। नीचे दिया अवतरण इस बात को समझने में सहायक हो सकता है :

महावीर की साधना, दमन की साधना नहीं थी। नग्न रहना, तप करना, दूर एकान्त वन में पड़े रहना यह सब उनके लिए सहज था, अन्तःस्फूर्त था, बाहर से आरोपित हठ नहीं था। वस्तुतः यह साधना नहीं, साधना के लिए योग्य वातावरण तैयार करने की प्रक्रिया थी।

महावीर का योग दमन का योग नहीं था। सत्यतः दमन तो साधना है ही नहीं। वृत्तियों का विवेकहीन अन्धनिग्रह करके वृत्तियों को शुद्ध बनाना रेत की रस्सी बँटने जैसा है। दमन द्वारा निगृहीत वृत्तियाँ पिंजरे में बन्द भूखे बाघ जैसी होती हैं। वे हाहाकार मचा देती हैं।

महावीर का मार्ग दमन या शमन का नहीं है बल्कि विवेक का है, चेतना का है। उचित निवृत्ति और उचित प्रवृत्ति इन दोनों को स्पर्श

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करता मध्य मार्ग वे लेते हैं। बाह्य विधिनिषेध अमुक सीमा तक मान्य है, पर उनका मुख्य साधना पथ बाहर नहीं अन्दर है, वृत्तियों का दमन या शमन नहीं है, बल्कि क्षपण उनकी गति है। शास्त्र की शुद्ध भाषा में इसे 'क्षायिक-मार्ग' कहते हैं। क्षायिक प्रणाली में प्रवृत्तियों के बीजों को देखना, जानना और समझना है। प्रवृत्तियों के मूल के पास जाना है। जागृति के प्रकाश में ये वृत्तियाँ जड़ से उन्मूलित हो जाती है।"[1]

गीता में कहा है कि उस प्रकार निराहारी मनुष्य के विषय टल तो जाते हैं, पर रस रह जाता है और उसे टालने के लिए तो चिंतन करना ही पड़ता है। इसी प्रकार उपवास और निराहार के बीच बहुत बड़ा अन्तर है। दमन की प्रतिक्रियाओं से बचने के लिए विवेकपूर्वक, सम्भव हो सके उतनी सहज रीति से साधना होती रहे यह आवश्यक है। जो कुछ भी पीड़ाकारक हो, कष्टप्रद हो या सुखावरोधी हो वह अपने आप तप नहीं बन जाता। फिर तप में अनुकरण, दिखावा या प्रसिद्धि तो हो ही नहीं सकती। अपनी जीवन लय सँजोकर साधना करनी है। यह लय जब दमन से टूटती है तब साधना नष्ट हो जाती है।

---

१. 'महावीर दर्शन' रणछोड़भाई पटेल, आत्मजागृति ट्रस्ट, मामा नी पोल, वडोदरा, १९८२, पृ० ११-१२।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदमी को गरीब बन जाने का भय हमेशा सताता रहता है। इसमें से परिग्रह पैदा होता है। भय के साये में होते कर्म विनष्ट होते हैं। ईसा ने पड़ोसी से प्रेम करने को कहा। पड़ोसी हमारे आसपास के समाज का प्रतिनिधि है। अपने कर्मों को अच्छा रक्खें और परिग्रह को टालें तभी हम उसे सच्चा प्रेम दे सकते हैं।

हमारे अन्दर विद्यमान दोषों की सच्ची खबर तो हमीं को हो सकती है। इतने सारे दोष होने के बावजूद हम अपने आप से तो प्रेम करते ही हैं। पड़ोसी में चाहे कितने भी दोष दिखायी दें तो भी उससे प्रेम करना चाहिए क्योंकि यदि हम अपने दोषों के प्रति उदार बन सकते हैं, तो उसके दोषों के प्रति क्यों नहीं ?

ऐसी उदारता में से अपरिग्रह सहजरूप से जन्म लेता है। अपरिग्रह के कारण बहुत से दोष कर्म में आदत बन कर नहीं घुस आते। यही सच्ची खानदाननियत कही जायगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इजराइल में एक यन्त्र बनाया गया है जिसका नाम है "माइक्रोवेव रेस्पीरेशन मानीटर"। यह यन्त्र आधे मील की दूरी से जान सकता है कि आदमी सच बोलता है या झूठ। यदि व्यक्ति झूठ बोलता है तो उसकी साँस के कम्पन में अन्तर पड़ जाता है। इस पर से हम अनुमान कर सकते हैं कि आदमी के भाव का सम्बन्ध श्वास के साथ है। इस प्रकार श्वास और भाव एक दूसरे के साथ लिपटे हैं।

ध्यान का अर्थ है—जीवन में जागरूकता का विकास। ध्यान के कारण चेतना इतनी निर्मल बन जाती है कि प्रत्येक प्रवृत्ति में समता का आविर्भाव होता है। जागरूकता का सबसे बड़ा सूत्र है "श्वास-दर्शन"। श्वास दर्शन माने वर्तमान में जीने का प्रयत्न और भाव। श्वास का प्रयोग समता के विकास का प्रयोग है। उसके साथ प्रिय या अप्रिय का भाव जुड़ता नहीं। जिस क्षण हम श्वास का अनुभव करते हैं उसी क्षण दोनों भाव छूट जाते है। प्रेक्षा-ध्यान की प्रक्रिया का हार्द है—समता, सामायिक।

—युवाचार्य महाप्रज्ञ

'अवचेतन मन से सम्पर्क' नामक पुस्तक से साभार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जिनमार्ग में अपरिग्रह और कर्म

अपरिग्रह की महिमा सभी धर्मों में देखने को मिलती है परन्तु जैन दर्शन में इसकी जो बारीकी है वह वास्तव में मौलिक है। द्रव्यवादी इस सृष्टि को द्रव्य की बनी मानते हैं और जो अद्रव्य (नॉन मैटर) है उसे स्वीकार नहीं करते। यद्यपि अब द्रव्यवाद में भी परिमार्जन होता जा रहा है। जैन दर्शन में 'पुद्गल' शब्द महत्त्वपूर्ण है। 'पुद्गल' माने 'परमाणु' जो भौतिक द्रव्य है वह पूर्ण गलन के स्वभाववाला है। आदमी किसी न किसी प्रकार इस द्रव्य के मोह में फँसते हैं। यह द्रव्य अनेक स्वरूप में आदमी को भ्रम में डालता है। धन भी अंततः पुद्गल का ही प्रतीक है। आदमी को अधिक पानी, पेट्रोल, अनाज, सिक्का, फर्निचर, कमरे, चीजें और साधन प्राप्त हो यह अच्छा लगता है। उसका पुद्गल प्रेम सदियों पुराना है। द्रव्य के संदर्भ में तो सभी धर्म असंग्रह या अपरिग्रह का महत्त्व बताते हैं। जैन दर्शन यहीं नहीं रुकता। इसमें 'अपरिग्रह' के वास्ते अनोखा शब्द प्रयुक्त हुआ है—'आकिञ्चन्य'। 'समण सुत्त' में कहा है :—

'मैं शुद्ध, दर्शन-ज्ञानमय, नित्य और अरूप हूँ। इसके अलावा, अन्य सभी परमाणु मेरे नहीं है—जिस प्रकार जल में उत्पन्न कमल जल से लिप्त नहीं होता, उसी प्रकार काम भोग के वातावरण में पाला गया जो मनुष्य उससे लिप्त नहीं है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं।'

(समण सुत्त, सूत्र १०६ और १०९)

जैन दर्शन में आत्मा को धारण करने वाले देह को भी परिग्रह मानते हैं। जैन दर्शन में जिसे 'आकिञ्चन्य धर्म' कहते हैं उसमें ऐसी ही गहराई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। जीने के लिए आवश्यक हो उससे अधिक परमाणु रखना परिग्रह है। मोटा उदर, चर्बी युक्त शरीर, जरूरत से ज्यादा आवश्यकताएँ या सुविधाएँ भी एक प्रकार से परिग्रह है। आज का ऊर्जा संकट (एनर्जी क्राइसिस) भी परिग्रह का परिणाम है। दुनियाँ की छः प्रतिशत आबादी धारण करता अमेरिका दुनियाँ की कुल ऊर्जा का छत्तीस प्रतिशत खर्च कर डालता है। यह भी परिग्रह है, क्योंकि ऊर्जा अंतः पुद्गल से ही पैदा होती है। द्रव्य और ऊर्जा के बीच अद्वैत वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि 'द्रव्य' माने 'सुषुप्त ऊर्जा'। संक्षेप में ऊर्जा का भी परिग्रह हो सकता है। कोई व्यक्ति अपने पास कुछ भी न रक्खे और केवल विद्युत शक्ति खर्च करता रहे तो भी वह परिग्रही माना जायगा।

'मेरे द्वारा इस सृष्टि में कम से कम व्यवधान हो' ऐसी वृत्ति के साथ जैन साधु जीते हैं। सूक्ष्म अर्थ में देखें तो परिग्रह या जमाखोरी एक प्रकार की खलबली या प्रक्षोभ पैदा करती है। शठ हुए बिना शेठ नहीं बना जाता। कहीं गड्ढा न बने तब तक ढूहा नहीं बनता। ढूहा और गड्ढा, पर्वत और खाई, संग्रह और चोरी, वैभव और गरीबी जुड़ ही जाते हैं। इसी में से कर्म शृंखला पैदा होती है और आदमी उसमें जकड़ा रहता है। जैन दर्शन में इसके लिये अनूठा शब्द है—'कर्म–पुद्गल'। कर्म का निर्जर तो दूर रह जाता है। आस्रव (इनटेक) थमें या घटे तो संवर (समपूर्वक वृ अर्थात् रोकना) संभव बनेगा। जैन दर्शन में तो कर्म पुद्गल के भी घातक और अघातक दो प्रकार करके कुल आठ प्रकार बताये हैं। इस प्रकार अपरिग्रह का सीधा सम्बन्ध निर्जर के साथ रहा है। और निर्जर माने मोक्ष की ओर गति। अपरिग्रह के बिना अहिंसा अधूरी ही कही जायगी। अन्य शब्दों में कह सकते हैं कि अहिंसा की अवधारणा में अपरिग्रह अपने आप आजाता है। जमाखोर कभी अहिंसा का दावा नहीं कर सकता। देहधारी संपूर्ण अहिंसक नहीं बन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकता यह सही है, पर अपरिग्रह की मंजिल पार किये बिना वह अहिंसा के ध्येय की ओर आगे तो नहीं ही बढ़ सकता।

कर्म के नियमों के प्रति हिन्दू परम्परा, जैन परम्परा और बौद्ध परम्परा समान श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं, तथापि तीनों का दृष्टिकोण एक जैसा नहीं है। जैन दर्शन में कर्म की अवधारणा अनूठी है। कर्म के साथ फल का निरपवाद सम्बन्ध है, इस बाबत तीनों परम्पराएँ एक मत हैं। बौद्ध दर्शन में आत्मा का स्वीकार नहीं है, जबकि जैन और हिन्दू दर्शन आत्मा को स्वीकार करते हैं। हिन्दू दर्शन की सांख्यनिष्ठा, आत्मा को अच्छेद्य, अदाह्य, जल से न भींजे और पवन से न सूखे ऐसी, नित्य, सर्वव्यापी, स्थिर, अचल, सनातन, अव्यक्त, अचिन्त्य, अविकारी, अजन्मा, अव्यय, अप्रमेय और अविनाशी बताती हैं। हिन्दू दर्शन के अनुसार परिशुद्ध आत्म तत्त्व किसी से लिप्त नहीं होता। शंकराचार्य तो कहते हैं कि आत्मा अकर्ता है अस्तु अभोक्ता है। इससे वह असंग है, आनन्द-स्वरूप है और शिव-स्वरूप है। इस प्रकार चिदानन्द में रमण करती आत्मा को कोई भी कर्म स्पर्श नहीं करता। जैन दर्शन के अनुसार जीव तीन प्रकार के हैं :—बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा। इन्द्रिय समूह को आत्मा मानने वाले बहिरात्मा है। देह से भिन्न आत्मा को स्वीकार करनेवाले अन्तरात्मा है और कर्म कलंक से विमुक्त आत्मा परमात्मा है। केवल ज्ञान द्वारा तमाम पदार्थों को जानने वाला शरीरधारी जीव अर्हंत कहलाता है, जबकि मोक्ष प्राप्त ज्ञानशरीरधारी जीव को सिद्ध कहते हैं। कर्म, ब्रह्माण्ड (कास्मास) की लीला है और यह लीला स्वतः संचालित है। इसमें भगवान् कहीं भी बीच में नहीं आते। कर्म एक प्रकार का द्रव्य है। जीव से कर्म जुड़ा है और यही संसार के बन्धन का कारण है। मोक्ष का अर्थ ही यह है कि सभी कर्म समाप्त हो जायँ। जैन दर्शन के अनुसार अनेक प्रकार के कर्म-पुद्गल की हेरफेर सतत् चलती रहती है और पुद्गल परमाणु जीवात्मा से रागद्वेष की चिपचिपाहट के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुताबिक चिपटते हैं और छूटते हैं। आत्मा के कर्मस्थल का छूटना ही 'निर्जरा' है। मोक्ष अर्थात् सभी कर्मों की पूर्ण निर्जरा। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा का विशिष्ट गुण है सम्यक दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र। मोक्ष आत्मा का कोई विशिष्ट स्थान नहीं है बल्कि यह एक अवस्था है, स्थिति विशेष है। जैन साधनापथ में दो मुख्य तत्त्व हैं—सँवर और निर्जरा। सँवर माने नये कर्मों के आस्रव के आगमन को रोकने की चेष्टा। कर्म बन्धन करे ऐसा काम है आस्रव। कर्म शुभ हो तो वह बँधता है, और अशुभ हो तो भी बँधता है। जब साधक कर्म को जमा होने से रोकता है तब उसके सामने केवल भूतकाल में जमा हुए संचित कर्मों के क्षय की ही समस्या रहती है। इस प्रकार टंकी में जिसके द्वारा पानी आता है उस नल को सँवर द्वारा बन्द करके और जिस नल द्वारा पानी टंकी से बाहर बह जाय वह नल खोलकर टंकी खाली करनी है। टंकी में गिरता पानी रोकने की क्रिया है सँवर और टँकी में से पानी निकालने की क्रिया है निर्जरा।

निर्जरा मोक्ष के ओर की गति है। निर्जरा की परिसमाप्ति ही निर्वाण है। यह मोक्ष ही बौद्ध दर्शन का निर्वाण और गीता ने दूसरे अध्याय के अन्त में जिसका प्रबोध किया है वह ब्रह्म-निर्वाण। निर्वाण प्राप्ति में ईश्वर की, गुरू की या महात्मा की कृपा पर आधारित नहीं रहना है। अपने कर्मों को सीधा रखकर और उनकी निर्जरा द्वारा स्वप्रयत्न से मोक्ष प्राप्त करना है, ऐसा जैन दर्शन का मत है।

लड्डू से चिपके खसखस की भाँति जीव से चिपके कर्मपुद्गल खर जायं इसके लिये राग और द्वेष से छूटना है। वैराग्य भाव द्वारा नये कर्मों के संचय को रोकना है और संचित कर्मों का क्षय करना है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बांग्ला देश के प्लानिंग कमीशन में काम करते डॉ० चौधरी मेरे बंगाली मुस्लिम मित्र हैं। जीवन के आरम्भ में वे मांसाहारी थे। वर्षों तक इंग्लैंड में रहे। उन्होंने मुझे एक अनुभव की बात बतायी। लंदन में प्राणियों के प्रति प्रदर्शित क्रूरता के विषय में एक फिल्म देखकर उनके मन पर इतना असर हुआ कि पूरे छः मास तक वे मांसाहार न कर सके। अब वे पुनः मांसाहारी बने हैं, परन्तु उन्हें एक बात का विश्वास हो चुका हैं और वह यह कि मांसाहार भारी क्रूरता पूर्ण बात है। ढाका के एक भोजन समारोह में मुझे आधा भू ा रहते देखकर उन्होंने यह बात मुझसे कही थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदमी प्राणियों को मारे बिना तथा मांसाहार किये बिना जी सकता है और तन्दुरुस्त रह सकता है। तब यदि वह केवल भूख शान्त करने के लिये मांस खाता है और जीव हिंसा में भाग लेता है तो ऐसा करना अनैतिक माना जायगा।

–लियो तोल्सतोय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अहिंसक समाज रचना और शाकाहार

क्या सारी दुनिया शाकाहारी बन सकती है ? यह बात जितनी लगती है उतनी असम्भव नहीं है। यदि ऐसा हो जाय तो कत्लखानों बिना दुनिया का निर्माण हो सकता है। जीवमात्र के प्रति आदर की दिशा में यह कदम बड़ा महत्त्वपूर्ण हो सकता है। कत्लखाने बन्द हों इतना ही काफी नहीं है। दुनियाँ में से शिकार खेलना भी बन्द होना चाहिये। आदि मानव ने उदर भरने के हित मजबूरी में जीव हत्या की। शिकार मनोरंजन है—राक्षसी मनोरंजन। दुष्यन्त या दशरथ के शिकार में और आदि मानव के शिकार में जमीन आसमान का अन्तर है। राजा क्रीड़ा के लिए शिकार (मृगया) करते थे ओर निर्दोष जीवों को बींघ डालते थे। शेर का शिकार शेर को खाने के लिए नहीं होता। मनोरंजन के अलावा कभी-कभो बहादुरी का भ्रम पोषण हेतु ऐसा किया जाता है। दो समान वीर भिड़ें यह तो समझ में आता है पर कोई पहलवान दंगल में बालक को हराकर फूला फिरे यह हास्यास्पद ही होगा। शेर के पास तो बालक जितनी बुद्धि भी नहीं होती। ऐसे कम अक्ल जानवर को सही सलामत ऊँचाई पर बैठकर बन्दूक की गोली से छेद डालने में कौन-सी बहादुरी है ? ऐसा करने में किसका पराक्रम आदमी का या बन्दूक का ? फिर किसी जानवर को फिजूल ही मार डालने में पराक्रम कैसा ? सोचने विचारने की आदत को देश-निकाला दिये बिना अकारण किसी प्राणी की हत्या की जा सकती है। इतनी सीधी सी वात समझने में आदमी को कितनी सदियों की जरूरत होगी ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाकाहार की बात करें। रूसो ने कहा था : बालक को मांसाहार अच्छा नहीं लगता, पर माँ बाप आदत डालते हैं अतः उसे स्वाद लगने लगता है। ज्यार्ज बर्नार्ड शॉ तो कहते थे, "मेरा पेट कोई कब्रिस्तान नहीं है कि मैं माँस खाऊँ।" शाकाहार की फिलासाफी पर आवें उससे पहले लोकप्रिय भ्रमों की बात कर लें। ये ऐसे भ्रम हैं जो झूठे सिद्ध हो चुके हैं और मांसाहार करनेवाले भी अब इन पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। कुछेक भ्रम इस प्रकार हैं :

भ्रम–१ : मांसाहार से ताकत बढ़ती है (गांधीजी को भी बचपन में ऐसा भ्रम था)

भ्रम–२ : मांसाहार के कारण दुनियाँ में अनाज की कमी की समस्या हल होती है।

भ्रम–३ : मांसाहार शरीर के पोषण की दृष्टि से पूर्णाहार है, जबकि शाकाहार में कमी रह जाती है।

भ्रम–४ : ठंडे प्रदेश में मांसाहार बिना जीना या रहना मुश्किल है।

भ्रम–५ : मांसाहार फैशन के रूप में अपनाया जा रहा है जबकि शाकाहार पुरातनपंथियों में खपता है ऐसी स्थिति है।

भ्रम–६ : शाकाहार केवल धार्मिक विषय है।

ये भ्रम जितने प्रचलित हैं उतने ही बेबुनियाद भी हैं। आइये, क्रम से इन भ्रमों की चर्चा करें।

मांसाहार से ताकत आती हैं इससे बढ़कर वाहियात मान्यता दूसरी कोई हो नहीं सकती। प्राणिजगत में हाथी, गैंडा, हिप्पोपोटेमस, ऊँट, घोड़ा, बैल, जिराफ और हिरन शाकाहारी है। इन प्राणियों की ताकत अनुपात में कम नहीं कही जा सकती। नाजुक कहलाता हिरन, हाथी, घोड़े, बैल की भाँति भार-वहन नहीं कर सकता, पर छलांग मारकर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मीलों दौड़ सकता है। शेर, बाघ, सिंह या चीते में ताकत अवश्य होती है पर उनकी ताकत आदमी के लिये कभी उपयोगी नहीं बन सकी। उपयोग की बात छोड़ दें तो भी इतना कह सकते हैं कि ताकत और क्रूरता का हिसाब न करें और विचार करें तो मांसाहार और ताकत का समीकरण टिक नहीं सकता।

आदमी की बात करें तो असली यूनानवासी अधिकतर शाकाहारी थे। वास्तविक रोमन लोग कभी-कदाच् मांस खाते थे। ये लोग कभी भी ताकत में घटिया नहीं गिने गये। जानने लायक हकीकत ये है कि युद्ध के समय आहार की राशनिंग शुरू होती है और शाकाहार पर ही आहार रखने की परिस्थिति पैदा हो तब लोगों का स्वास्थ्य अच्छा होता है ऐसा ज्ञात हुआ है। डेनमार्क में १९१४–१८ की लड़ाई के दौरान डॉ० हिन्ढेडे जैसे आहार विज्ञानी को यह समझ में आया। ऐसा ही दूसरे महायुद्ध के समय इंग्लैंड में हुआ। वहाँ की मिनिस्ट्री ऑफ हेल्थ के आंकड़े इस बात का समर्थन करते हैं। ऐसा ही दूसरे महायुद्ध के समय स्विट्जरलैंड में हुआ, जहाँ डॉ० फ्लीस्क देश के आहार की योजना चला रहे थे। हमारे देश की उत्तर पश्चिम सरहद के उस पार स्थिर पहाड़ी प्रदेश की हुँझा जाति के लोग दुनियाँ के सबसे ज्यादा तन्दुरुस्त लोग माने जाते हैं। ये लोग खेती करते हैं और मेहनत की जिन्दगी जीते हैं। पहाड़ी ढलानों पर पीठ पर सामान लादे ये लोग ७५ किलोमीटर की दूरी हँसते खेलते तय कर लेते हैं। ये लोग सुन्दर होते हैं, पौरुष से भरे होते हैं और रोग किसे कहते हैं इसकी इन्हें खबर ही नहीं है। फिर ये जीते भी दीर्घकाल तक हैं। वे भी असली रोमन या ग्रीक लोगों की भाँति करीब करीब शाका-हारी होते हैं।

मांसाहार के कारण अनाज की कमी का प्रश्न हल होता है यह बात भी एकदम असत्य है। तथाकथित मांसाहारी जिन्हें खाता है वे प्राणी जमीन में पैदा हुई वनस्पति ही खाते है। इस तरह बकरी का मांस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खानेवाले भी अंततोगत्वा द्रविड़मार्ग से तो वनस्पति आहारी ही माने जायंगे। ऐसा ज्ञात हुआ है कि एक शाकाहारी को आहार के लिए या जीने के लिए जितनी जमीन चाहिए उसकी अपेक्षा एक मांसाहारी को ज्यादा जमीन चाहिए। फिर मांसाहार और शाकाहार में युक्ताहार का आयोजन तो अनिवार्य है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यदि संतुलित आहार न लें तो शरीर को पूरा पोषण नहीं मिलेगा। संक्षेप से संपूर्ण आहार का आयोजन से सम्बन्ध है—शाकाहार या मांसाहार से नहीं। मांसाहार ठंढे प्रदेशों में अनिवार्य है यह बात तनिक भी सच नहीं है। दुनियाँ के लगभग सभी देशों में शाकाहारियों की संस्थाएँ हैं और इन संस्थाओं के सदस्य शाकाहारी बने रहकर शाकाहार का प्रचार करते हैं। मांसाहार किसी को करना हो तो भले करे, परन्तु इसके लिए ऐसी लचर दलील का सहारा लेने की क्या जरूरत है? अत्यन्त ठंडे प्रदेश के चुस्त शाकाहारियों से मैं मिला हूँ। इनमें से कितने ही तो मांस ही नहीं, दूध, दही, मक्खन जैसे पदार्थों को भी वर्जित मानते हैं। मांसाहार को फैशन के रूप में या देखा-देखी में अपनाने वाले हमारे देश के युवकों से तो सिर्फ इतना ही कहना है कि दुनियाँ के लोग धीमी पर निश्चित गति से आरोग्य, जीव-दया तथा शरीर सौन्दर्य बनाये रखने के विविध विचारों के कारण शाकाहार की ओर मुड़ रहे हैं। मांसाहार की सीमाएँ लोग अब समझने लगे हैं। अन्त में यहीं कहूँगा कि शाकाहार कोई धार्मिक विषय नहीं है, परन्तु एक जीवन दृष्टि है और अहिंसक समाज रचना की दिशा में उठाया गया पहला कदम है। मुझे तो यह कहने का मन होता है कि शाकाहार अपनाने के बाद ही दुनियाँ पर से युद्ध नाबूद किया जा सकता है। दूर की बात है तो भी इतना कह सकते हैं कि संपूर्ण शाकाहारी दुनियाँ में, युद्ध अतीत की घटना बन जाय यह संभव है। बकरी, गाय या सूअर को न मारनेवाले समाज में आदमी को मारना बहुत आसान नहीं होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शाकाहारियों की संख्या की दृष्टि से गुजरात दुनियाँ में पहले नम्बर पर आता है। गांधी गुजरात में पैदा हुए यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है। इस सदी में और आने वाली सदी में अहिंसक समाज रचना की विश्वव्यापी शक्तियों को सम्प्रेरित करने में गुजरात दो क़दम आगे बढ़कर कुछ कर सके ऐसा संभव है। पर दुर्भाग्य यह है कि महावीर को भगवान मानकर उनकी पूजा करनेवाले जैन लोगों को भी शाकाहार के वैज्ञानिक पक्ष और उसके व्यापक सूचितार्थों का ख्याल नहीं होता। उन्हें तो शाकाहार का प्रचार करने में दुनियाँ का नेतृत्व करना चाहिए। अब शाकाहार मात्र धार्मिक आदत बना रहे यह नहीं चलेगा। याद रहे कि महावीर का समकालीन पायथागोरस (सुख्यात ग्रीक दार्शनिक और गणितज्ञ) शाकाहार के लिये लोगों को उपदेश देता था। सेनेका और प्लूटार्क ने भी यही किया। फिर सिकन्दरिया और टेरटुलियन के चर्च के असली धर्म-गुरुओं ने भी लोगों को शाकाहार का उपदेश दिया था। वर्तमान सदी में आवें तो स्वेडनबर्ग और ज्हान वेल्से तो शाकाहार के प्रबल समर्थक थें। पर्सी, बाइशे, शेली और जेरेमी बेन्थम भी शाकाहार का विशेष आग्रह करनेवालों के रूप में जाने जाते हैं। इस सूची में सबसे शीर्षस्थ हैं काउण्ट तोल्सतोय और जार्ज बर्नार्ड शॉ। जानकर थोड़ा आघात लग सकता है पर बात सच है कि हिटलर शाकाहारी तो था ही और इसके साथ ही दूसरों से आग्रह करने में भी तत्पर रहता था। शाकाहार का वैज्ञानिक और जागरूक संदर्भ समझ में आ जाय तो महावीर की वास्तविक मौलिकता का भी थोड़ा अन्दाज हो सकता है। महावीर का क्रान्तदर्शन सदियों की मंजिल तय करके भी आज के विश्व के लिये कितना उपकारक बना हुआ है यह बात समझने के लिये आज की परिस्थिति की अनेक धाराओं को समझ लें।

स्पार्टा के लोग अपने खरतलपन के लिये मशहूर थे और श्रेष्ठ ग्रीक खिलाड़ी तथा ओलेम्पिक खेलों के संस्थापक भी शाकाहारी थे यह बात

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सब जानते हैं। विकासवाद के प्रणेता और जीवविज्ञान में क्रांति लानेवाले चार्ल्स डार्विन का वक्तव्य विचारणीय है : 'द मोस्ट एक्स्ट्राडिनरी वर्कर्स आई एवर साॅ, द लेबरर्स इन द माइन्स आफ चिली, लिव एक्सक्लूविली आन वेजिटेबुल फूड, इन्क्लूडिंग मेनी सीडस ऑफ लेग्युमिनस प्लांटस्।' (सबसे ज्यादा विस्मयकारक श्रमिक जो मैंने कहीं देखें, वे हैं चिली के खानों के मजदूर, जो पूर्णतः शाकाहारी आहार पर, जिसमें नाना प्रकार की दालें (फलियाँ) शामिल हैं, जीते हैं) एक जमाने के शाकाहारी तुर्कों के लिये श्री एफ० टी० वुड 'डिस्कवरी ऐट एफीसस' में लिखते हैं कि सिमर्ना के तुर्की कुली ४०० से ६०० पौंड का वजन उठाकर पहाड़ी रास्तों पर ऊँचाई तक आगे बढ़ सकते थे। जर्मनी में चल रही सायकिल रेसों में प्रथम आनेवाले सभी प्रतिद्वन्द्वी शाकाहारी रहे हैं, ऐसा सी० डब्ल्यू० लेडबेटर अपनी पुस्तक 'वेजिटेरियनिज्म एण्ड आकल्टिज्म' में सूचित करते हैं। इस प्रकार शाकाहार के समर्थन में अनेक अनुमोदन जोड़े जा सकते हैं, लेकिन इस पुस्तक का विषय 'शाकाहार' नहीं है अस्तु इस बात को लम्बाने के बदले थोड़ी सी धाराओं को देख लें।

फ्रेंच लोग मेढक की टाँग बहुत स्वादिष्ट बानगी मानते हैं। यूगोस्लाविया में तो मेढक शाकाहारी वस्तु ही माना जाता है। भारत में मेढ़कों पर अत्यधिक क्रूरता का व्यवहार करके मेढकों की टाँग का निर्यात किया जाता है और इस बात पर ब्रिटेन के प्राणी प्रेमी बहुत रुष्ट हुए हैं। वहाँ मेढक की टाँग बेचने वाली सुपर मार्केट की शाखा 'सेफवे' का ब्रिटिश गृहणियाँ बहिष्कार करें ऐसी सिफारिश प्राणी-प्रेमी कर रहे हैं। मेढक का मांस अपनी असल गन्ध न खोये इसलिए मेढक जिन्दा हो तभी तीक्ष्ण चाकुओं द्वारा उसकी टाँगे काट ली जाती है और पार्सल द्वारा ब्रिटेन भेज दी जाती है। भारत से प्रतिवर्ष तीन से दस करोड़ के लगभग मेढक इस प्रकार मार डाले जाते हैं। इसके विरुद्ध, प्राणियों के विरुद्ध व्यवहृत निर्दयता को रोकने के लिए संगठित रायल सोसाइटी भी विरोध में उठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खड़ी हुई है। इस बाबत अभियान चलाने वाले लोग कहते हैं कि यदि ब्रिटेन की गृहणियों को पता चल जाय कि ये मेढक किस तरह मारे जाते हैं तो वे निश्चय ही इन्हें खरीदना बन्द कर देंगी।

दुनियाँ में लगभग सभी देशों में शाकाहारी मण्डल अनेक वर्षों से कार्यरत हैं। ईंगलैंड में रायल सोसायटी फॉर प्रोटेक्शन आफ बर्ड्स (आर. एस. पी. बी.) पक्षियों की हत्या का विरोध करतो है और अन्य कई संस्थाएँ भी विविध जीवों की रक्षा के लिए बनी हैं। ह्वेल मछली के प्रेमी अमेरिका और कनाडा में उनके अमानवी शिकार के विरुद्ध दुनियाँ के सभी देशों में अभियान चला रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित अन्तर-राष्ट्रीय संस्था का नाम है—'ग्रीन पीस'। दो वर्ष पहले मैं कनाडा गया था तब 'ग्रीन पीस' के मित्रों से मिला था। इस संस्था के अधिकतर सदस्य शाकाहारी हैं और इनमें से अनेक तो डेयरी निर्मित पदार्थ (दूध, दही, मक्खन, चीज, आइसक्रीम) भी नहीं लेते। व्हेल मछली और शिकारियों की नौका के बीच खड़े होकर वे कहते हैं 'पहले हमें मार डालें फिर ह्वेल को मारें'। इस संस्था ने पश्चिम के कितनों ही देशों की सरकारों को ह्वेल के शिकार पर प्रतिबन्ध लगाने वाले कानून बनाने के लिए दबाव डाला है और कितने ही देशों ने ऐसे कानून बनाये भी हैं। आज अमेरिका में शाकाहारियों की संख्या तीस लाख के लगभग है और निश्चित रूप से बढ़ रही है। पश्चिम के अन्य देशों में भी ऐसा ही हो रहा है। प्राणियों के प्रति प्रेम बढ़ रहा है और मांसाहारी लोग भी इस या उस प्राणी के प्रति विशेष पक्षपात प्रदर्शित करने लगे हैं। यह शुभ शुरुआत है। संत फ्रांसिस ने शेर को अपने प्रेम से जीत लिया यह बात सर्वविदित है। मेघाणी ने 'सोरठीं संतों' में सिंह को स्नेह से बुलाने वाले संत दाता भगत की कथा लिखी है। मद्रास में अडयार क्षेत्र में 'स्नेक पार्क' (सर्प उद्यान) में प्रेम से विषधर सर्प को खेलाते और गले लगाते एक परदेशी को मैंने कई बार अपनी नजरों से देखा है। 'स्नेक पार्क' की स्थापना उसी ने की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थी । इस उद्यान में जहरीले सर्प मुक्त रूप से रहते हैं और उनकी कुदरती देखरेख की जाती है । थोरो के शब्द याद आ जाते हैं, 'इट आफेन हैपैन्स दैट ए मैन इज मोर ह्यूमनली रिलेटेड टु ए कैट आर ए डॉग दैन टु एनी ह्यूमनबींग ।'

अमेरिका के 'टाइम' दैनिक १३ अक्टूबर १९८३ में एक निबन्ध प्रकाशित हुआ था, उसका सार है 'थिंकिंग एनीमल थाट्स' । इसमें एक प्रश्न उठाया गया है—सूप का प्याला तो ठीक है पर भेड़ के पैर का क्या ? यह पैर कभी भेड़ का अङ्ग था और किसी एक क्षण उसे काटकर दुकान में विक्रय की वस्तु बना दिया गया था । इस पैर का धारण करने-वाली भेड़ कभी जीवित थी न । अमेरिका की एक प्रयोगशाला में बन्दूक की गोली से शरीर में जो घाव होता है उसकी बाबत शोधचल रही है । इस प्रयोगशाला का नाम ही है 'वूण्ड लैबोरेटरी' (व्रण प्रयोगशाला) ! यहाँ ८० डालर मूल्य चुकाकर कुत्ते को खरीदकर उसे बेहोश करते हैं फिर उस पर गोली चलाकर घायल किया जाता है जिससे उसके घाव का अध्ययन करके आदमी को कैसे घाव लग सकते हैं इसका अनुसंधान किया जा सके । इस प्रकार आदमी के लाभार्थ होने वाले अनुसंधानों के लिए अनेक कुत्ते, बिल्लियों और विशेष रूप से बन्दरों को मार डाला जाता है । आंकड़े बताते हैं कि प्रतिवर्ष कुल ६ करोड़ प्राणी (जिसमें १,६१,००० कुत्ते और ४७,००० बन्दर शामिल हैं) अनुसंधान के लिए मारे जाते हैं । भारत से बन्दरों का निर्यात मोरारजी भाई की सरकार ने एक समय बन्द किया था वह अब फिर चालू हो गया है । 'टाइम' के निबन्ध में प्रश्न उठाया है :—

'व्हॉट आर एनिमल फॉर' (जानवर किसलिये हैं) लेखक टिप्पणी करता है, 'ह्यमन्स एज्यूम दैट द रेस्ट ऑफ क्रिएशन वाज़ प्रोवाइडेड फॉर देयर कन्विनियेंस' (मानव यह मान बैठा है कि बाकी समस्त सृष्टि की रचना उसकी सुविधा के लिये हुई थी) । इसी पत्रिका के अन्य एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंक में डाइनिंग टेबुल पर बैठे अमेरिकन बालकों से मांस द्वारा बनी चीजों को खाने से पहले, उसके मारे गये जीवों की बाबत विकल करने वाले प्रश्न पूछे जानेका उल्लेख है। संसार में धीमी पर दबायी न जा सके ऐसी आवाज उठ रही है : 'क्या इस पृथ्वी की संपत्ति पर केवल आदमी का ही हक है। यह प्राणी बुद्धि में श्रेष्ठ है केवल इसलिए पृथ्वी के विनाश का हकदार बन जाय क्या यह ठीक है ? अन्य प्राणियों के जीने का मूलभूत अधिकार स्वीकार किये बिना क्या वह अपने जीने का हक सुरक्षित रख सकता है क्या ? मांसाहार अब मजबूरी नहीं रहा है। युद्ध के अन्त में बहुत से लोग मर गये यह जानकर एक नरभक्षी आफ्रिकन आदिवासी ने भोले-पन से पूछा, 'खाने नहीं थे तो इतने सारे आदमी मारे क्यों। ?'

डिस्कार्टीस तो प्राणियों को मशीन मानता था। यह बात अगर सत्य हो तो खौलते पानी में हजामत का ब्लेड डालने और तेलचट्टा डालने में कोई अन्तर ही न रहे। पर यह बात इतनी सीधी नहीं है। संत फ्रांसिस या अल्बर्ट श्वाइट्जर की करुणा में विकास की सीढ़ी के सबसे ऊँचे पायदान पर पहुँचे आदमी की इन्सानियत व्यक्त होती है। महावीर और बुद्ध ने इस इन्सानियत के पोषण करने का उपदेश दिया था। इसी इन्सानियत के कारण खांडवदहन के समय कृष्ण को टिटिहरी के बच्चों पर घंटा रखकर उनके रक्षण की बात सूझती है। बैल मर जाय तब आँसू बहाते किसानों को देखा है। पर्लबक के उपन्यास 'द गुड अर्थ' में भूमिपुत्र वांगलंग भीषण अकाल में भी अपने बैल को मारने को तैयार नहीं होता, क्योंकि बैल के प्रति उसे मोहब्बत है। दूध दुहने की शोध आदमी की इन्सानियत के इतिहास में एक अत्यन्त स्मरणीय शोध थी। गाय को मारे बिना गाय से दूध प्राप्त करने की यह शुरुआत थी। गोपाल-संस्कृति की यह शुरुआत बहुत ही महत्त्वपूर्ण सीमाचिह्न बन गयी। भारत के लोगों ने (विशेष रूप से हिन्दू, जैन और पारसियों ने) गाय के माध्यम से अन्य प्राणियों के प्रति अपना आदर व्यक्त किया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस प्रकार गाय मानव और मानवेतर प्राणियों के बीच आदर भरे सम्बन्ध का प्रतीक बन गयी। कहते हैं कि आदिमानव आदमियों और अन्य जीवों के बीच कोई भेद नही करता था। उसके मन तो सभी जीव समान है। इसी से तो आज भी नागालैण्ड में आदमी का शिकार करने की प्रथा पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई है। अपने को प्रगतिशील मानने-वाले भी निर्जीव और सजीव के बीच भेद न करें तो उन्हे क्या कहा जाय। चिम्पाञ्जी तो अपनी जाति के प्राणी को आइने में देखकर पहि-चान सकता है। कुत्ते के लिये यह संभव नहीं है। पर मेक्स ईस्ट मैन तो कहता है 'कुत्ता हँसता है, पर अपनी दुम के द्वारा।'

फिलीपीन्स से थाईलैंड जाना पड़ा तब मनीला के हवाई अड्डे पर मुझसे कहा गया, 'आपके लिये हिन्दू शाकाहारी भोजन की व्यवस्था हमने सूचना के अनुसार की है।' मैंने जवाब में कहा, 'मैंने केवल शाका-हारी भोजन के बारे में सूचित किया था, हिन्दू शाकाहारी भोजन जैसा कुछ नहीं होता।' बात आयी गयी हो गयी पर विचार प्रक्रिया चालू ही रही। सच पूछे तों हिन्दू धर्म मांसाहार के प्रति गहरी जुगुप्सा व्यक्त करता है क्या ? बहुत से बौद्ध साधु मांसाहारी होते हैं। ऐसा ही ईसाई धर्मगुरु तथा इस्लामी धर्मगुरुओं के लिये भी कहा जा सकता है। दुनियाँ में केवल जैन धर्म ही शाकाहार के प्रति चुस्त आग्रह करता है। जैन शाकाहारी होते हैं और मैं तो यहाँ तक कह सकता हूँ कि जो शाकाहारी नहीं है वह जैन नहीं है। दुनियाँ के सभी देशों में चल रही शाकाहार सम्बन्धी हलचल का नेतृत्व जैनों को संभालना चाहिए। अहिंसा के सिद्धान्तों को स्वीकार करने की व्यावहारिक शुरुआत शाकाहार से हो सकती है।

प्रत्येक जीव को अपनी जान प्यारी होती है। प्रत्येक ह्वेल का अपना अलहदा जीवन संगीत होता है। हम्पबैक ह्वेल मछली का संगीत तो अमेरिका द्वारा अन्यग्रहों पर भेजे गये अन्तरिक्षयान पर रक्खे कैसेट में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संचित है। पानी के अन्दर काम करे ऐसे हाइड्रोफोन द्वारा टेप किया गया यह संगीत मैंने सुना है और मित्रों को सुनाया है। प्रत्येक हम्पवैक ह्वेल का अपना व्यक्तिगत संगीत (आवाज नहीं) होता है और जीवन के दौर में वह एक जैसा नहीं रहता। इस संगीत का टेप बारह गुनी तेज गति से चलाया जाय तो उससे जो ध्वनि निकलती है वह पक्षी के कलरव से मिलती जुलती होती है। शिकारी लोग आफत के समय ह्वेल मछली जो आवाज करती है उसका टेप बजाकर अन्य ह्वेल मछलियों को बचाने के लिये दौड़कर आने का संदेश भेजते हैं और फिर एकत्र हुई ह्वेल मछलियों को फुरसत से एक-एक करके मार डालते हैं।

शाकाहार भी पूर्णरूप से अहिंसक आहार तो नहीं ही है। उत्तम समाज का लक्षण तो यह है कि उसमें हिंसा की मात्रा यथा-संभव कम करने का सतत् प्रयत्न होता रहना चाहिए। इस दृष्टि से शाकाहार का मूल्यांकन करना चाहिये।

पाँच ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर जीव-सृष्टि का सीधासादा वर्गीकरण किया जाय तो कुछ इस प्रकार होगा—

१. पाँच इन्द्रियों वाले जीव या सस्तन प्राणी–(जिसमें आदमी नामक प्राणी भी शामिल है।)

२. चार इन्द्रियों वाले जीव जैसे कि अनेक सरिसृप (साँप, मगर आदि) जिन्हें घ्राणेन्द्रिय नहीं होती।

३. तीन इन्द्रियों वाले जीव : कुछ जाति की मछलियों के पास केवल श्रवण, दर्शन और स्पर्श के अवयव होते हैं। इसी प्रकार संधिपाद वर्ग के (कोड़े-मकोड़े आदि) प्राणियों के पास स्पर्श, गंध और दर्शन के अवयव होते हैं।

४. दो इन्द्रियोंवाले जीव : मृदुकाय वर्ग के बीरबहूटी तथा अष्टभुज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(आक्टोपस) जैसे प्राणी जिनमें केवल स्पर्श और दर्शन के अवयव ही होते हैं।

५. एक इन्द्रिय वाले जीव जिसमें अमीवा और अधिकतर वनस्पतियाँ होती है जिन्हे केवल स्पर्शज्ञान होता है।

उपरोक्त वर्गीकरण का सार केवल इतना है कि जीवन संपूर्ण हिंसा मुक्त नहीं हो सकता। हमारा विवेकज्ञान हिंसा की मात्रा को पीड़ा तथा विकास की दृष्टि से यथा-संभव घटाने की ओर प्रवृत्त होना चाहिये। ऐसी विचार धारा के पीछे जीवन को बनाये रखने के लिये अनिवार्य रूप से करनी पड़ती हिंसा के प्रति समाधान की वृत्ति विद्यमान है। उत्तम समाज में ऐसी वृत्ति का महत्त्व कम करके नहीं आँका जा सकता।

अमेरिका में शाकाहार की बाबत मुझसे अनेक प्रश्न बराबर पूछे जाते थे। गाय दूध देना बन्द कर दे तब उसे कत्लगाह न भेजकर जीवनभर पोषित करना पोसायगा क्या ? मेरा जबाब मात्र इतना होता गाय तो पाँच सात वर्ष दूध देने के बाद कटकर, मरकर भी सभी रूप से उपयोगी सिद्ध होती है पर आप जो कुत्ता पालते है वह न तो दूध देता है न खाने लायक होता है ? तो भी आप जिस प्रकार खर्च उठाकर उसे पालते हैं, लाड़ करते हैं, वह किस प्रकार पोसाता है ? यदि किसी भी प्रकार के भौतिक लाभ के बिना कुत्ता पाला जा सकता है तो फिर जिसने वर्षों तक दूध दिया ऐसी गाय को उसकी निवृत्ति के दौरान पोषित करना क्यों नहीं पोसाता ? और याद रहे कि, इस निवृत्ति के दौरान भी खाद तो वह देती ही है। एक वास्तविकता भी जान लें। प्रतिवर्ष देश में १९.३४ अरब टन खाद बनती है जो २.९४ करोड़टन रासायनिक (एन० पी० के = नत्रजन, फास्फोरस और पोटासियम) खाद जितना काम दे सकती है। हमारी खाद की आवश्यकता एक वर्ष में १.५ करोड़-टन की है। संक्षेप में यदि हम गोबर खाद के प्रति वैज्ञानिक दृष्टि अपनायें और अपव्यय रोकें तो रासायनिक खाद के कारखानों की जरूरत ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न हो। ऐसा होने पर कारखाने द्वारा होने वाला प्रदूषण रुकेगा। और फिर वाहन खर्च का बोझ भी घटेगा। गोबर खाद हर गाँव में बन सकती है और उसी मात्रा में वाहन प्रयोग से उत्पन्न प्रदूषण भी घट सकता है। इन सब बातों का निष्कर्ष यह है कि शाकाहार का व्यापक जीवन दृष्टि से मूल्यांकन करना है। इको–सिस्टम की दीर्घकालिक तन्दुरूस्ती की दृष्टि से भी शाकाहार उपयुक्त सिद्ध किया जा सकता है। शाकाहार को इस प्रकार विश्वगत, संतुलन शास्त्रीय, मानवीय गुण विकास और आध्यात्मिक संदर्भों में देखने की जरूरत है। अमेरिका के एक डाक्टर ने रेडियों पर शाकाहार की महिमा वर्णित करते हुए कहा कि ९० प्रतिशत अमेरिकनों को ९० प्रतिशत के अनुपात में शाकाहार करना चाहिए। उसने मजाक में यह भी कहा कि मांस तो बर्थ डे केक की भाँति साल में एकाध बार खाना ही ठीक होगा। अमेरिकन लोगों के लिए तो यह सलाह भी कठोर ही गिनी जायगी। हमारे देशवासियों के लिए तो शाकाहार सहज है जबकि मांसाहार एक भद्दा फैशन है। शायद ही कोई फैशन इतना क्रूर हो सकता है।

युद्ध की खींचतान के बीच, छोटे-मोटे उपद्रवों के बीच, अद्यतन कत्ल-खानों के बीच और हिंसा की होली के बीच कहीं दूर से आती 'मंगल-ध्वनि' सुन पड़ती है। यह ध्वनि करुणा की, अहिंसा की, जीवमात्र के साथ प्रेम सगाई की और विश्वशान्ति की ध्वनि है। यह ध्वनि महावीर की, बुद्ध की और गांधी की ध्वनि है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बल के विरुद्ध बल के अलावा कोई चीज सामूहिक स्तर पर टिक सके ऐसी संभावना की शुरूआत एकदम खामी बिना की नहीं हो सकती यह शुरूआत मानव इतिहास में एक मोड़ बन जाय ऐसी है। सांसारिक स्तर पर, महात्मा गांधी की जो महिमा है उसका रहस्य, उन्होंने युद्धग्रस्त अतीत और सर्वनाश की संभावना के बीच खड़े होकर मानव जाति को जो नयी अहिंसक प्रयुक्ति भेंट प्रस्तुत की उसमें निहित है। यह मोड़ जैसा तैसा नहीं है। इस मोड़ पर दूसरा कोई नहीं, पर छोटी सी लुँगी पहने, दोनों हाथ जोड़कर पोपला-पोपला पर चुंबकीय निर्मलता से उफनता स्मित बिखेरता एक बूढ़ा खड़ा है, जिसे दुनिया 'गाँधी' कहती है। वह पोपला स्मित दुनिया भूल सके ऐसा नहीं है।

महावीर से महात्मा तक की यह विचार यात्रा मानव जाति की विशाल सम्पदा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धिक्कार के बदले धिक्कार वापस लौटाने में धिक्कार का गुणन होता है और तारक विहीन रात्रि का अंधकार अधिक गहन बनता है। अंधकार कभी अन्धकार को दूर नहीं कर सकता। वह तो प्रकाश द्वारा ही दूर हो सकता है।

धिक्कार का धिक्कार से गुणन होता है।

हिंसा से हिंसा का गुणन होता है।

और

बाहुबल द्वारा बाहुबल का गुणन होता है।

फलतः

यह चक्कर नीचे उतरता रहता है।

और

विनाश का सृजन होता है।

—मार्टिन ल्युथर किंग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महावीर से महात्मा गांधी तक

किसी धर्म का सत्त्व और तत्त्व उसका अनुसरण करने वालों की संख्या पर से नहीं आँका जा सकता। इत्र की सुवास को उसकी मात्रा से क्या लेना देना है ? इस दृष्टि से विचार करें तो जैन विचारधारा का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है। संसार की परिस्थिति ऐसी बनती जा रही है कि विश्वशांति की भूख बढ़े। अणु-युद्ध का दुःस्वप्न विश्व को समूल विनाश की चरम सीमा की ओर ढकेल रहा है तब अहिंसा को परम धर्म माने बिना काम नहीं चलेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो अहिंसा परम धर्म बन जाय ऐसी अनुकूलता बढ़ते हुए औद्योगीकरण, प्रदूषण की समस्याओं, सन्तुलन (इकोलाजी) की जरूरतें, ऊर्जा के संकट, बढ़ते हुए तनाव और सर्वनाश की सम्भावना के कारण बन रही है। महावीर की अहिंसा का ऐसा नया सन्दर्भ स्वीकार न करें तो दोष हमारा होगा। हमारे नगर में पर्युषण के दिनों में जैनों द्वारा नगर के मछुआरों को मछली न पकड़ने के लिए पैसे दिये जाते थे। मेरे घर के पीछे अनाज पीसने की चक्की थी। किसी के अनाज में घुन हो तो उसे देखकर जैन गृहणी का जी जल जाता है और वहीं बैठकर पराया अनाज साफ करने बैठ जाती है। ये जीव दया के उम्दा उदाहरण हैं, पर अहिंसा यहाँ पहुँचकर अटक जाय यह अब नहीं चलेगा।

नयी पीढ़ी जैन विचारधारा में विद्यमान कितनी ही मूलतः अच्छी फिर भी अनाकर्षक बातों को स्वीकार न करे, इससे बुजुर्ग अकुलायें ऐसा हो सकता है। आज की पीढ़ी स्वभावतः थोड़ी सुखवादी (हेडोनिस्ट) प्रतीत होती है। सुखवादी होने के बावजूद सुख माने क्या इसकी अधिक जानकारी उन्हें हो ऐसा नहीं लगता। ऐसी परिस्थिति में महा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वीर की कितनी ही बातें उनके लिए दुर्बोध बनती प्रतीत हों, ऐसा हो सकता है। कायक्लेश, कार्योत्सर्ग, तपव्रत, अनशन, रात्रिभोजन त्याग, इन्द्रिय दमन, और मिथ्यात्व जैसी बाबतें उन्हें युगानुकूल न भी प्रतीत हों। आखिर कोई भी युवक आज दुनियाँ के अन्य युवकों के स्वभाव के साथ सम्वेगिक रूप से जुड़ा है, अस्तु उसकी बैचैनी को क्षम्य मानना चाहिये। उसे शाकाहार का महत्त्व विज्ञान के सन्दर्भ में समझाकर कहा जा सकता है कि दुनियाँ के विकसित देशों के लोग भी अब धीरे-धीरे शाकाहार की ओर उन्मुख हो रहे हैं और भविष्य में दुनियाँ की अधिकाधिक जनसंख्या शाकाहार को स्वीकार करनेवाली है। इसी प्रकार उसे समझाना होगा कि अहिंसा अब धार्मिक आदर्श न रहकर विश्वशान्ति की व्यूह रचना का केन्द्र बन रही है। देरासर (देवाश्रम-जैनमन्दिर) और अपासार (उपाश्रय, जैन साधु निवास) में बन्दी बने विचारों को दुनियाभर के लोगों तक ले जाना होगा।

युवकों पर माँ-बाप प्याज-आलू या लहसुन न खाने की ताकीद करते रहेंगे तो वे ये चीजें चोरी छुपे खाने की लालच नहीं रोक सकेंगे। हमारी तथाकथित, छिछली धार्मिकता कभी-कभी दंभ और दिखावे को बढ़ाने वाली बन जाय ऐसा होता है। याद रहे कि आज की पीढ़ी दंभ और दिखावे को सहन करने के मूड में नहीं है। जैन धर्माचार्यों और श्रावकों को यह बात मन खुला रखकर समझ लेनी होगी।

महावीर की बातें आज के सांसारिक परिप्रेक्ष्य में न रक्खी जायं तो युवकों के गले नहीं उतरेंगी। सभी धर्म इस समय नयी पीढ़ी के सुखवादी मूड के कारण इस प्रकार की संकटावस्था से गुजर रहे हैं। जैनधर्म इसमें अपवाद नहीं है। सभी धर्मों को नये विश्वधर्म और मानव धर्म के साथ तालमेल करके, कुछ छोड़कर बहुत कुछ नया विचार करने को उपलब्ध है। ऐसा करने में पुरोहित, पादरी, मुल्ला और धर्मगुरु नाराज होंगे ही। यहीं थोड़े साहस की जरूरत होती है। बहता पानी ही निर्मल रह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सकता है। धर्म एक सरिता है, सरोवर नहीं है। सरिता बहती है और उसे कहीं पहुँचना होता है। सरोवर बहता नहीं और उसकी कोई मंजिल नहीं होती। कभी-कभी तो लगता है कि धार्मिक संकुचितता के कारण बने पन्थ तो अब सरोवर जैसे भी नहीं रह गये हैं। वे तालाब या चहबच्चे बन गये हैं।

यहीं धर्म मार खाता है। चींटी को बचानेवाली जीव-दया वांछित है, पर ऐसा करने वाला जमाखोरी करे, शोषण करे, कालाबाजारी करे, मिलावट करे, धोखाधड़ी करे यह क्षम्य नहीं बन सकता। प्रच्छन्न हिंसा कभी अधिक घातक परिणामकारी होती है। परिणाम दूरगामी हो या तत्काल आँख के आगे आ जाय इतने प्रत्यक्ष या निकट न भी हो तो इससे कोई बुनियादी अन्तर नहीं पड़ता। व्यवहार शुद्धि बिना जीवन-शुद्धि संभव नहीं है और जीवनशुद्धि बिना अपने अस्तित्व की गहराई में डुबकी लगाना सम्भव नहीं है। जीवन के प्रति, जीवन के मूल्यों के प्रति और जीवन की गति की बाबत सचेतनता रक्खी जाय तभी धर्म का उद्घाटन हो सकता है। बहुत से लोगों के पास जीने के लिए समय ही नहीं होता। वे जीवन के सिवा अन्य सभी बाबतों को प्राथमिकता (प्रायोरिटी) देते रहते हैं। ऐसे लोगों को मैं पुद्गल-प्रेमी कहता हूँ। द्रव्यसंचय के अलावा जीवन में और भी कुछ है ऐसा वे मानते ही नहीं। ऐसे लोगों को महावीर, बुद्ध, मोहम्मद, ईसा या कृष्ण किसी भी तरह से मदद नहीं कर सकते। प्रत्येक धर्म को बाह्याचार के अतिरेकों और लीकपन्थी रूढ़ता से बचा लाने का पुरुषार्थ प्रत्येक सदी में करते रहना पड़ता है, नहीं तो वह नदी न रहकर तालाब बन जाय यह सम्भव है।

कालक्रम में किसी भी धर्म में संकुचितता, गुटबंदी, बाह्याचार की प्रधानता और कंठीबद्धता दाखिल होती है। जैन धर्म इसमें अपवाद नहीं बन सकता। किसी भी धर्म का असली शुद्ध स्वरूप नष्ट करने के लिए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उस धर्म के अनुयायी ही काफी होते हैं, दूसरों की सहायता इसके लिए आवश्यक नहीं होती। देह को भी परिग्रह माननेवाले जैन दर्शन को देरासरो (देवाश्रयो) के ठाठ-बाट में बन्द नहीं किया जा सकता। जैन दर्शन की अहिंसा सांसारिक सन्दर्भ में बहुत ही प्रासंगिक बन रही हो तब महावीर का परिचय संसार को मिले यह अत्यन्त आवश्यक है। सन् १९६६ की जुलाई में जब मैं इंग्लैंड में लार्ड बर्ट्रांड रसेल से मिला तब शाकाहार की चर्चा करते समय मैंने महावीर का 'अहिंसा के विज्ञानी' (साइन्टिस्ट ऑफ नानवायलेंस) के रूप में उन्हें परिचय दिया। बात यह थी कि रसेल ने महावीर का नाम भी नहीं सुना था। यह अपराध हम सब का है, रसेल का इसमें कोई कसूर नहीं है।

अपनी ही नयी पीढ़ी को महावीर का संदेश ठीक ढंग से पहुँचाने में जैन समाज निष्फल रहा है। आश्वासन इतना ही है कि दुनिया के सभी धर्मों की करीब करीब यही स्थिति है। ऐसा क्यों होता है? महावीर जैसा मानव पुष्प केवल जैनों का ही नही बल्कि समूचे विश्व उपवन का गौरव है। यह बात किसी भी धर्म के महामानव के लिए कही जा सकती है। अनुयायी जब यह नहीं समझते तब बहुत से अनर्थ होते हैं। महावीर के संदेश को नयी पीढ़ी को उसकी रुचि का ख्याल रखते हुए सरल भाषा में, नये ढंग से, आज के आधुनिक संदर्भ में पेश करने की अत्यधिक आवश्यकता है। ऐसा न हो तो हानि हमारी है। धर्म को खत्म करने का सचोट उपाय है उसे संकुचित बनाना। सत्य किसी एक पंथ, सम्प्रदाय, जत्थे, पक्ष या जाति के पास नहीं होता। अनेकान्तवाद भी हमें यही सिखाता है। जैन धर्म के पास अभी प्रमाण में सुगठित और अर्थपूर्ण साधु परम्परा है। हजारों जैन साधू और साध्वियाँ देश में पैदल घूमते हैं और चौमासे में चातुर्मास करते हैं। ऐसा त्यागी, दीक्षित, निःस्वार्थ और तपोमय जीवन स्वीकार करके नगर-नगर फिरनेवाले संतजन देश को परिस्थिति पर, जनमानस पर और उसके चरित्र पर बहुत प्रभाव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डाल सकते हैं। ऐसा हो रहा है इसकी प्रतीति नहीं होती। विवाद चलते रहते हैं। नयी पीढ़ी का कोई विचार ही नहीं करता। विचार गौण बने और कर्मकाण्ड प्रधान बने तब किसी भी धर्म की यही दशा होती है। इस बारे में एक भी अपवाद नहीं मिलता। जैन दर्शन हो सकता है थोड़ा दुर्बोध हो, पर उसकी प्रस्तुति यदि ठीक ढंग से हो तो नयी पीढ़ी को वह अवश्य पसन्द आ जायगा। ऐसा नहीं होता, यह हकीकत है। साधुजन जब धर्म की व्याख्या करते हैं तब उस परिभाषा को न समझने वाले सामान्य लोग विवेक के कारण बैठे रहते हैं और फिर नमन करके चल देते हैं। पर्युषण में जो कुछ भी धार्मिक विधि होनी चाहिए वह होती रहे, श्रावक श्रमण का बन्दन करते रहें' और दुकान संभालते रहें। धर्म उसके व्यवहार में अधिक दखल नहीं देता क्योंकि वास्तविक हस्तक्षेप तो विचार द्वारा ही हो सकता है। रेनकोट पर से बरसात का पानी बह जाय उसी प्रकार साधुओं के प्रवचन गृहस्थों के सिर पर से गुजर जाते हैं। गृहस्थ तो कोरा का कोरा ही रहता है। सत्यनारायण की कथा में सत्यनारायण की अपेक्षा चूरन अधिक महत्त्व का बन जाय यही दशा आज सभी धर्मों की हुई है, इसमें जैन धर्म अपवाद नहीं है।

जैन मुनियों और धर्माचार्यों का सबसे बड़ा कर्तव्य आज अहिंसा को अहत्या की सीमा से बाहर निकाल कर विश्व-संदर्भ में रखने का है। इसके लिए आवश्यक हो तो जीव विज्ञानियों की सेवा प्राप्त करके महावीर की अहिंसा और जीव विज्ञान की अद्यतन खोजों के बीच अनुबन्ध ढूँढना चाहिए। इस बाबत मुझे लगता है :—

१. अहिंसा को विश्वशान्ति, इकोलाजी, शोषणमुक्ति, शाकाहार और जीवों के प्रति आदर के साथ अनुबन्धित करना पड़ेगा।

२. अपरिग्रह को ऊर्जा संकट, आर्थिक असमानता, तीसरी दुनियाँ के देशों की गरीबी, प्रदूषण तथा युद्ध की समस्याओं के साथ अनुबन्धित करना पड़ेगा। समणसुत्त में कहा है, 'तमाम किस्म

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के परिग्रह को छोड़कर जो निःसंग (संगरहित) बन जाता है और अपने सुखकारी और दुखदायी भावों पर अंकुश लगाकर निर्द्वंद्व भाव से विचरण करता है उसका यह धर्म आकिंचन्य धर्म कहलाता है ।'

३. स्याद्वाद और अनेकान्त को सापेक्षता (रिलेटिविटी) और विज्ञानी को शोभा दे ऐसे खुले मन से अनुबन्धित करना होगा ।

४. कर्मवाद को विज्ञान के साथ, जगत के असंख्य जीवों के परस्परावलम्बन (सिम्बियोसिस) के साथ, ब्रह्माण्ड (कास्मास) के साथ और व्यवहार शुद्धि के साथ अनुबन्धित करना पड़ेगा ।

यदि ऐसा हो सके तो महावीर का जीवन दर्शन केवल भारत का ही नहीं, संसार का मार्ग दर्शक बन सकने में समर्थ है । पुष्प का कोई मालिक नहीं हो सकता, पर कभी कभी माली ऐसा दावा कर बैठते हैं । पुष्प पर अपना हक प्रस्तुत करनेवाला माली भी पुष्प की सुगन्ध पर ऐसा दावा कैसे कर सकता है ? महावीर जैसे मानवपुष्प की सुवास विश्व के कोने-कोने में पहुँचे इसी में हमारा कल्याण निहित है ।

अन्ततः तो जैन दर्शन की सार्थकता इस दुनियाँ में अहिंसक समाज रचना की स्थापना हो इसी में है । ऐसे समाज में शाकाहार का बोलबाला होगा, प्रदूषण न्यूनतम होगा, शोषण नहीं के बराबर होगा, आर्थिक असमानता एकदम कम होगी और युद्ध सदा के लिये नहीं होगा । छोटे थे तब कितने ही वर्षों तक गांधीजी के प्रभाव में आकर हमलोग अहिंसक चप्पल पहनते थे । अहिंसक चप्पल माने सहज रूप से मरे पशु के चर्म से बनी चप्पल । यह चप्पल बहुत कोमल नहीं होती क्योंकि पशु बूढ़ा होकर मरता है । चप्पल का चमड़ा कोमल हो इसके लिए कोमल प्राणियों की चमड़ी इस्तेमाल करने का आग्रह होता है । इन कोमल प्राणियों की खाल उधेड़ने में भारी पीड़ा तो है ही साथ ही इसमें अपार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिंसा भी निहित है। कभी-कभी ऐसा कोमल चर्म कत्लखाने का बाई-प्राडक्ट भी हो सकता है। यही बात कोमल पर्स की है। हमारी चप्पल कोमल हो और दिल खुरदरा हो यह कैसे चल सकता है? ऐसा ही रेशमी वस्त्रों तथा बड़े कारखानों में बननेवाले माल का भी है। उद्योगों का जहरीला कचरा जब नदी में डाला जाता है तो हजारों मछलियाँ मर जाती हैं। इस प्रकार बहुधा हिंसा अप्रत्यक्ष रूप से होती है, पर इसमें हमारा हाथ नहीं है, ऐसा नहीं कह सकते। शेयर का डिविडेण्ड लेनेवाले को यह शेयर किस चीज के उत्पादन करने वाली कम्पनी का है यह सोचना चाहिए। यह कम्पनी ऐसी चीज बनाती हो जिसमें हिंसा है—तो उसमें हमारा भी हिस्सा है। ऐसा ही हमारे स.बुनों, सौंदर्य प्रसाधनों, टूथपेस्टों या वस्त्रों के लिये भी कहा जा सकता है। खादी में सबसे कम हिंसा विद्यमान है, यह समझना आवश्यक है।

गांधी की अहिंसा का अनुबन्ध महावीर की अहिंसा के साथ सटीक बैठता है। महावीर की अहिंसा को सामाजिक फलक पर कार्य-साधक बनाना हो तो गांधी की बात स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प ही नहीं है। अहिंसा को आगम के साथ नहीं, जीवन के साथ जोड़ना है। गांधी की अहिंसा का दर्शन अहिंसक समाज रचना का दर्शन था। अहिंसा को यदि पोथी का बेठन न बने रहने देना हो और उसका जीवन में विनियोग करना हो तो फिर गांधी द्वारा निर्देशित अहिंसा के मार्ग पर केवल भारत को ही नहीं सारी दुनियाँ को चलना होगा। हिंसा अप्रत्यक्ष हो तो इससे वह क्षम्य नहीं बनती। सच बात तो ये है कि हिंसा अधिकतर अप्रत्यक्ष, अदृष्य और परोक्ष स्तर पर चलती रहती है। मांसाहारी की हिंसा भी अप्रत्यक्ष होती है। दवा लेने में भी हिंसा हो सकती है—होती है। होमियोपैथी की एक दवा तिलचट्टे से बनती है। अहिंसा में विश्वास करने वाले व्यक्ति को प्रत्यक्ष के बाद अप्रत्यक्ष (अथवा छिपी हुई) हिंसा के प्रति बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महावीर से शुरू हुई अहिंसा की विचार यात्रा महात्मा गांधी के जीवनकार्य के फलस्वरूप संसार के फलक पर किस तरह पहुँची इसका ध्यान महात्मा गांधी के निम्नलिखित शब्दों से हो सकता है :—

'अनादि काल से अहिंसा-धर्म का उपदेश हिन्दुस्तान को अवश्य ही मिलता रहा है, पर समूचे भारतखण्ड में सक्रिय अहिंसा पूर्ण रूप से किसी भी काल में आचरित हुई हो तो यह मैंने हिन्दुस्तान के इतिहास में नहीं देखा। तो भी अनेक कारणों से मेरी ऐसी अचल श्रद्धा है कि किसी दिन सारे संसार को हिन्दुस्तान अहिंसा का पाठ पढ़ायेगा। ऐसा होने में भले ही युग बीत जायं, पर मेरी अक्ल तो ऐसा कहती है कि दूसरा कोई मुल्क इस कार्य में पहल नहीं कर सकेगा।'

(हरिजन बन्धु १३।१०।१९३५)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हम ऐसे समाज की परिकल्पना करते हैं जिसमें प्रेम का बन्धन हो, करुणा का कानून हो और अहिंसा की आन हो।

अहिंसक समाज रचना के लिये अनुकूल परिस्थिति बनती जा रही है इसकी प्रतीति हो रही है। इतिहास में शायद पहली बार, युद्ध, घोषित करने के बाद, देश के सर्वोच्च नेता को अपने ही देश के विरोधी लोकमत का सामना करना पड़े ऐसी स्थिति पैदा हुई है। वियतनाम के युद्ध में अमेरिका शामिल हुआ तब राष्ट्रपति जॉन्सन को अमेरिका के युवकों के विरोध से टक्कर लेनी पड़ी। लेबनान पर इजराइल ने बड़ा आक्रमण किया तब इजराइल की प्रजा ने विरोध किया और फौजी अफसरों ने छुट्टी चले जाकर कैद की सजा भुगती पर बाद में प्रधानमन्त्री बेगिन को सत्ता छोड़नी पड़ी। फॉकलैण्ड युद्ध के समय इंग्लैंड की प्रधानमन्त्री मार्गरेट थैचर के इस कदम का विरोध हाउस ऑफ कामन्स में माइकेल फुट ने जोरशोर से किया। निकारागुआ की बाबत राष्ट्रपति रेगन ने शस्त्र खनकाये तभी अमेरिकी जवानों ने रैलियाँ संगठित करना आरम्भ कर दिया।

ये सब संकेत अहिंसक समाज रचना के लिये अनुकूल भूमिका रचने में उपकारक होंगे, ऐसे हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जहां जहां फौजे मुकाम करती हैं,
वहां वहां कांटे और झंखाड़ उगते
हैं।
सच है, शस्त्र दुख के साधन हैं, और सभी
सदा उन्हें धिक्कारते हैं।

—ताओ-ते-चिग में
लाओ-त्सु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जैनं जयति शासनम्

महावीर का दर्शन इतना सूक्ष्म है कि एक सीमा तक पहुँचने के बाद हम उसे समझने में कलैया खा जाते हैं। कभी-कभी उनकी बात दुर्बोध बन जाती है क्योंकि उन बातों में शुद्ध गणित (प्यौर मैथमेटिक्स) का लाघव, व्याकरण की नियम बद्धता और तर्क की सघनता (सालिडिटी) एक साथ देखने को मिलती है। उनके जमाने में ज्ञान ब्राह्मणों के मस्तिष्क में मानों कैंद हुआ था। अर्धमागधी जैसी सरल भाषा आरम्भ करके महावीर ने ज्ञान को लोकाभिमुख बनाया। पुनः स्त्रियों को संघ में प्रवेश देने के बारे में महावीर बुद्ध से आगे थे। श्रमण परम्परा के उस युग के साधक महावीर जितने लोकाभिमुख नहीं थे। वे अपने व्यक्तिगत जीवन में अहिंसा पालने के आग्रही थे। परन्तु समाज में व्याप्त हिंसा की बाबत वे लगभग उदासीन थे। महावीर अहिंसा को पहली बार गृहस्थों के घर तक ले आये। फिर उन्होंने अहिंसा को मात्र अहत्या तक सीमित नहीं रहने दिया और उसका अनुबन्ध मन, वचन, और कर्म के साथ जोड़कर उसे सूक्ष्म और व्यापक सन्दर्भ में रख दिया। कर्म के कानून का सम्बन्ध पुनर्जन्म और जीवमात्र के साथ होने के कारण उसका विस्तार समूचे ब्रह्माण्ड तक फैलता है। अहिंसा का ऐसा भौतिक और चैतसिक दर्शन महावीर की मौलिक देन मानी जायगी।

हिंसा से भरे इस विश्व में हम सब शान्ति की कामना लिये बैठे हैं। हमारी भावी पीढ़ियाँ हमारी आज की संस्कृति को लगभग जंगली अवस्था से थोड़ी ही आगे बढ़ी संस्कृति बतायेंगे। दुनियाँ के कत्लगाहों में रोज हो रही लाखों प्राणियों की निवारणीय हिंसा से और फौजों द्वारा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो रही आदमियों की हत्याओं से पृथ्वी का पर्यावरण भरा हुआ है। इन निर्दोष जीवों का आर्तनाद, चीखें, यातना और असहायता के आंदोलन हम तक नहीं पहुँचते और हमें विह्वल नहीं बनाते क्योंकि हमारी संवेदनशीलता की धार भोथरी हो गयी है। जंगल के निर्दोष प्राणी आदमी से दूर भागते हैं क्योंकि प्रत्येक प्राणी के साथ प्रेम का प्रत्यापन अभी हम स्थापित नहीं कर पाये हैं। कत्लगाहों में कटकर मरते प्रत्येक प्राणी में मोह, जीने की लालसा और मृत्यु का भय होता है। शिकागो जाते समय मिसेस ऐनी बेसेंट को वहाँ पर्यावरण में विद्यमान हिंसा और भय के आन्दोलनों का अनुभव हुआ था। उन्होंने पूछा, 'हम कहाँ आ गये हैं। हवा में ऐसी भयंकर मोहाकर्षकता किस कारण है?' हमारी संवेदनशीलता विकसित न होने के कारण कत्लगाहों के आसपास की हवा में हिंसा, भय और पीड़ा के स्पन्दन हों तो भी हमें विकल नहीं करते। प्रत्यक्ष या परोक्ष हिंसा से भरा हमारा जीवन इसी तरह बदस्तूर चल रहा है। पड़ोस के सैनिक की मृत्यु में हमारा भी अंश है ऐसा हमें अनुभव नहीं होता। इसी प्रकार जब नदी में कारखाने का विषैला उच्छिष्ट डाला जाता है तब लाखों मछलियों की हत्या में उस कारखाने के शेयर-धारकों, हिस्सेदारों का भी हिस्सा है यह बात तुरन्त समझ में नहीं आती। ऐसी हिंसा चालू रखकर भी हम रोज नियमपूर्वक देवाश्रय में जाते हैं तो थोड़ी राहत मिलती है। शोषण भी हिंसा है और परिग्रह भी हिंसा है, समझने में चूक हो जाती है। हिंसा प्रत्यक्ष (इन पर्सन) हो या अप्रत्यक्ष (इन-एबसेंशिया) हो इससे क्या, हिंसा तो हिंसा है और उसकी जिम्मेदारी सामूहिक हो तो भी हम उसमें से बच के नहीं निकल सकते।

दुःख की बात है कि महावीर की अहिंसा का संदेश दुनिया की अन्य भाषाओं में जितना चाहिये उतना नहीं पहुँचा है। उदाहरण के लिये अंग्रेजी, फ्रेंच, या रूसी भाषा में महावीर की बात अधिक प्रकाश नहीं पा सकी है। एक नया जैन देवालय बनाने के लिये बड़े उत्साह से करोड़

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रुपया खर्च करनेवाला जैन समाज महावीर के विचारों का विश्व की सभी भाषाओं में प्रचार हो इस हेतु खर्च करने में उतना उत्साह नहीं प्रदर्शित करते, यह दुख का विषय है। पश्चिम के देशों में और एशिया के देशों में लोग बुद्ध की बाबत जानते हैं, परन्तु महावीर एकदम अज्ञात रह गये हैं। यह परिस्थिति शोचनीय मानी जायगी। हम सब इसके लिये जिम्मेदार हैं और जैन विशेष रूप से जिम्मेदार माने जायेंगे।

जैनों का प्रिय सूत्र है 'जैनं जयति शासनम्', इसी प्रकार बौद्ध विचार-धारा में बुद्ध का अनुशासन सुख्यात है। सामान्यतः 'शासन' के साथ भय, तनाव, हिंसा, बरजोरी और युद्ध अपने आप चले आते हैं। क्या महावीर और बुद्ध का 'शासन' ऐसा भेड़चाल हो सकता है? तो फिर जिन शासन के लक्षण क्या हो सकते हैं? इस शासन का अर्थ है प्रेम, करुणा और अहिंसा का शासन। ऐसा अनोखा शासन ही आज की दुनियाँ को रिझा सकता है और विदग्ध जीवों को चन्दनलेप की शीतलता का अनुभव करा सकता है। ऐसे शासन में शासक कौन हो सकते हैं? ऐसा शासन करनेवाले यदि राजा, नेता या राजनीतिज्ञ हुए तो फिर गये काम से। प्रेम, करुणा और अहिंसा का शासन माने अर्हतों का, सिद्धों का, आचार्यों का, उपाध्यायों का और सभी साधुओं का शासन। अस्तु इन सभों को नमस्कार करके बात पूरी करें।

अर्हतों को नमस्कार

सिद्धों को नमस्कार

आचार्यों को नमस्कार

उपाध्यायों को नमस्कार

लोकवर्ती सभी साधुओं को नमस्कार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सत्व सहूणं !
एसो पञ्चणमोक्कारो सळपावघणा सणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ्मं हवइ मंगलम्) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट १

महावीर की अंतर्यात्रा

हम समुद्र को देखते हैं तो हमारी नजर उसकी लहरों पर ही टिक जाती है। समुद्र के गहरे जल में, पाँच सात किलोमीटर गहरे तल में क्या पड़ा है इसका ध्यान हमें नहीं आता। हमारे विचार से तो समुद्र माने उसकी अनन्त लहरें। उन लहरों पर सवार हुए स्टीमर के यात्रियों को समुद्र में डुबकी लगाने वाले सबमरीन की गतिविधियों का शायद ही ख्याल आता होगा। महावीर प्रभु की जीवन यात्रा को समझना आसान नहीं है। जीवन यात्रा के दो विभाग हैं—बहिर्यात्रा और अन्तर्यात्रा। कैवल्य प्राप्त होने से पहले और उसके बाद की यात्रा अन्तर्जगत में विशेष रूप से चलती रही। साधना के बारह वर्षों के बीच उन्होंने अभय, अहिंसा और मैत्री के बहुत प्रयोग किये। इस दौर में वे शायद पचास घण्टों के लिए निद्राधीन हुए थें। ऐसा ही आहार के लिए भी कहा जा सकता है। जीवन के रहस्य को सूक्ष्मतम दर्जे तक प्राप्त करने की उनकी चेष्टा का अनुमान आसानी से नहीं हो सकता। हमारा सारा जीवन बाहरी सृष्टि की झंझट में बीत जाता है। अन्दर झाँकने का बहुत कम मौका मिलता है। हमारी इस सीमा के कारण महावीर की अन्तर्यात्रा समझने में हम गोता खा जाते हैं।

महावीर अकेले घूमते रहे। किसी भी प्रकार के भय या ठाठ के बिना वे अपरिचित लोगों के बीच पहुँच गये। उनका जीवन मानो पराक्रम, कर्म, पुरुषार्थ, वीर्य और ऊर्ध्वमूल साधन का मङ्गलमय यात्रा-पथ। उनके इस यात्रा पथ पर उन्होंने चाण्डालों का स्वागत किया। स्त्रियों को आध्यात्म पथ पर सक्रिय रूप से निदेशित करने वाले वे प्रथम महामानव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थे। इसी प्रकार लोगों को समझ में आवे ऐसी भाषा का आग्रह रखने में भी उन्होंने पहल की। जीवन एक सहज घटना है, परन्तु उसे ऊर्ध्वगामी बनाने की चेष्टा करना एक कला है, ऐसा करने में सफल होना महाकला है और वह पूरी हो इससे पूर्व कैवल्य प्राप्त करना परम-कला है। निद्रा-विजय, भूख-विजय और स्वाद-विजय के बाद की उनकी साधना का थोड़ा बहुत अनुमान हो सके इस हेतु कुछेक प्रसङ्ग यहाँ दिये हैं। परम-अस्तित्व के साथ एकाकार के लिये उन्होंने अपने व्यक्तित्व को मानो पूर्णरूप से पिघला डालने का तप किया। ऐसे तप के अन्त में उनका व्यक्तित्व शून्य बनता गया और विराट महाशून्यता के साथ एक रूप हो गया। यहाँ महावीर प्रभु की जीवनलीला की झाँकी करायें ऐसे कुछ प्रसङ्गों द्वारा थोड़ी सी झलक दी गयी है। एक मच्छर आकाश को समझने का प्रयास करे ऐसी ही हमारी स्थिति है। महावीर को 'महा-मानव' कहने का आशय सिर्फ इतना है कि उनके जीवन की इन झलकियों से हम भी अपने अन्दर छिपी विशाल सम्भावनाओं का अनुमान कर सकें। ऐसा न हो तो, उनकी प्रतिमा का चरणस्पर्श करके छूट निकलने की हमारी आदत बहुत पुरानी है।

प्रसंग १

अभय की साधना के लिये जोखिम जरूरी है।

साधना का दूसरा वर्ष चल रहा था। महावीर प्रभु दक्षिण वाचाला से उत्तर वाचाला की ओर जा रहे थे। कनकखल आश्रम से गुजरते मार्ग पर वे थोड़ा आगे गये तो ग्वाले मिले। ग्वालों ने कहा :

भंते, इस मार्ग से न जायँ।'

'क्या यह मार्ग उत्तर वाचाला नहीं जाता ?'

'जाता है।'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'क्या यह मार्ग बाहर से जाते रास्ते जैसा सीधा नहीं है ?'

'सीधा है।'

'तो फिर मैं इस रास्ते से क्यों न जाऊँ ?'

'भंते, यह मार्ग सुरक्षित नहीं है।'

'इस मार्ग में किसका डर है ?'

'भंते, इस मार्ग में चण्डकौशिक नामक सर्प रहता है। वह विष-दृष्टि है। वह जिसकी ओर देखता है वह मर जाता है। अस्तु कृपा कर इस मार्ग से वापस लौटें।'

महावीर का मन पुलकित हो उठा। वे अभय और मैत्री की कसौटी पर अपनी परीक्षा करना चाहते थे। यह मौका उन्हें अनायास मिल गया।

बेचारे ग्वाले देखते रह गये और महावीर प्रभु आगे बढ़े।

प्रसंग २

गुस्सा न करे, वह भी कोई आदमी है ?

एक बार भगवान पूर्व दिशा की ओर मुँह करके खड़े सूर्य की धूप सेवन कर रहे थे। इतने में अनेक व्यक्ति आ पहुँचे और सामने आकर खड़े हो गये। महावीर भगवान ने उनकी ओर देखा तक नहीं इससे उन सबको क्रोध आया। वे महावीर पर थूक कर चलने लगे। महावीर तो शान्त खड़े थे। उन्हें एकदम शान्त खड़े देखकर एक व्यक्ति ने पूछा, 'अरे यह कैसा आदमी है। थूकने पर भी गुस्सा नहीं होता।' दूसरा बोला, 'देखो मैं उसे गुस्सा दिलाता हूँ।' फिर उसने महादीर की आँख में धूल झोंकी। महावीर ने न तो आँख मीसी और न क्रोध ही किया। धूल फेंकने वाले का प्रयत्न निष्फल हुआ। फिर तो उसने महवीर को जोरदार मुक्के मारे। पर महावीर शान्त रहे। फिर उसने हड्डियाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फेंकी, पर महावीर तो शान्त ही रहे। अन्त में उसने भाले से प्रहार किया। लोग खड़े खड़े हा-हा करने लगे। महावीर तो जैसे थे वैसे ही मौन और शान्त बने रहे। उनके चेहरे से प्रसन्नता टपक रही थी। उस व्यक्ति ने कहा, 'चलो यार, यह भी भला कोई आदमी है। आदमी होता तो अवश्य गुस्से में आ जाता।'

प्रसंग ३

गधा चंदन का भार वहन करे, तो क्या

श्रावस्ती की रंगशाला बेचैन हो उठी थी। महाराज ने नाटक का आयोजन किया था। नट मण्डली की कला की सर्वत्र चर्चा चल रही थी। मण्डली के प्रधान ने भगवान महावीर को देखा और उन्हें रंगशाला में पधारने का आग्रह किया। भगवान सहमत न हुए।

'क्या आप नाटक देखने को उत्सुक नहीं हैं ?' नट ने कहा

'नहीं', महावीर ने कहा।

'क्या नाटक आपको अच्छा नहीं लगता ?'

'अपनी अपनी दृष्टि होती है।'

'क्या ललित कला के प्रति दृष्टिभेद हो सकता है ?'

'ऐसा कुछ भी नहीं है जिसकी बाबत दृष्टि-भेद न हो।'

'ऐसा अज्ञानियों के लिये कहा जा सकता है। आप तो ज्ञानी है।'

'ज्ञानी सत्य की शोध में व्यस्त रहता है। वह तो पृथ्वी के कण-कण में अभिनय का अनुभव करता है। वह तो अणु-परमाणु में कंपन और गतिशीलता का अनुभव करता है। उसकी रसिकता इतनी व्यापक बन जाती है कि उसके लिये नीरस कुछ भी नहीं होता। अन्य सभी शास्त्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जानने वाला क्लेश का अनुभव कर सकता है, पर आध्यात्म को जानने वाला रस का अनुभव करता है। गधा चंदन का भार वहन करता है, जबकि भाग्यशाली मनुष्य उसकी सुगन्ध और शीतलता का उपभोग करता है।'

ऐसे सुन्दर वचन सुनकर नट नतमस्तक हो गया। उसने भगवान को प्रणाम किया और रंगशाला की ओर चल दिया।

प्रसंग ४

ध्यान द्वारा कामना पर विजय

भगवान महावीर का शरीर सुडौल, सशक्त और सुन्दर था। उनके सिर के बाल काले और घने थे इस कारण बहुत ही आकर्षक और सुन्दर लगते थे। उनकी आँखें नील कमल जैसी कमनीय थी। उनकी देह की सुकुमारता के कारण अनेक सुन्दरियाँ उनपर मोहित हो जाती थीं।

एक बार उनके पास तीन सुन्दर स्त्रियाँ आ पहुँची।

एक बोली, 'कुमार, आपकी स्त्री कौन है, ब्राह्मणी या क्षत्राणी ?'

महावीर बोले, 'कोई नहीं'

'हम बन सकती हैं। आप किसे पसन्द करते हैं ?'

'किसी को नहीं।'

'अरे यह कैसा जवान है, जो हम जैसी सुन्दर ललनाओं को भी पसन्द नहीं करता।' दूसरी रमणी आगे आकर बोली, 'आप लोग जरा ध्यान से देखिये तो, यह पुरुष तो है न' तीसरी रमणी बोली, 'मुझे तो लगता है, यह कोई नपुंसक है। यदि पुरुष होता तो हमारी उपेक्षा कैसे कर सकता था ?'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फिर तो तीनों रमणियाँ एक साथ महावीर से कहने लगीं, 'कुमार अभी तो तू जवान है। ऐसे यौवन को वनवासी की भाँति क्यों नष्ट कर रहा है। लगता है कि तुझे प्रकृति ने रूप का वरदान तो दिया है, पर परिवार अनुकूल नहीं मिला। इसी से तूँ उन्हें छोड़कर अकेला फिर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है। हम तुम्हारे लिये सर्वस्व निछावर करने को तैयार है। तब यह मोम का गोला अग्नि के प्रभाव से पिघलता क्यों नहीं ?'

तीनों के हाव-भाव, विलास और चक्कर बढ़ते गये। उन्होंने रति-प्रणय की सभी चेष्टाएँ की। पर भगवान महावीर पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वे ऊर्ध्व, तिर्यक और अधः-तीनों प्रकार का ध्यान करते थे। ऊर्ध्व ध्यान की साधना के कारण उनकी कामवासना कब की समाप्त हो चुकी थी।

मिट्टी का गोला अग्नि के कारण प्रदीप्त भले हो जाय पर पिघलता नहीं।

प्रसंग ५

सच्चा चक्रवर्ती कौन ?

पुष्प उस युग का ज्योतिषी था। उसका ज्ञान विशाल था। दूर-दूर से लोग अपना भविष्य जानने के लिये उसके पास आते थे। उसे अपनी सफलता पर गर्व था।

एक दिन वह घूमता-घूमता गंगा तट पर पहुँच गया। वहाँ उसकी नजर किनारे पर पड़े चरण चिन्हों पर पड़ी। उन चरणों को देखकर वह आश्चर्य-सागर में डूब गया।

उसने मन ही मन विचार किया। यह पदचिन्ह जिसके है वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। वह कोई साधारण राजा भी नहीं है। यह तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई चक्रवर्ती ही होना चाहिए। चक्रवर्ती अकेला कैसे हो सकता है? चक्रवर्ती पैदल चलने वाला कैसे हो सकता है? चक्रवर्ती नंगे पैर कैसे हो सकता है? मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ?

फिर तो उसने पदचिन्हों का अनुसरण करने का निश्चय किया। या तो मेरा शास्त्र झूठा है या फिर मेरे गुरू ने मुझे मिथ्या पाठ पढ़ाया ऐसा विचार करके वह कदम-कदम चलने लगा और थूणाक आ पहुँचा। देखा वहाँ एक व्यक्ति ध्यानमुद्रा में खड़ा है। वह तो भगवान महावीर के सामने खड़ा रह गया। उसे लगा कि पदचिन्ह इसी व्यक्ति के ही होने चाहिए। उसने भगवान के शरीर पर एक अर्थसूचक दृष्टि डाली और सिर से पैर तक देख लिया। वह फिर से अचम्भे में पड़ गया। इस आदमी के लक्षण इंगित करते हैं कि वह चक्रवर्ती है और उसकी स्थिति पर से प्रतीत होता है कि वह पदयात्री भिक्षुक है। कुछ देर के लिए वह भ्रान्ति में खो गया।

भगवान जब ध्यान से विरत हुए तब पुष्प बोला, "भंते आप अकले कैसे हैं?"

"इस दुनियाँ में जो भी आता है अकेला ही आता है और अकेला ही जाता है दूसरा कौन साथ देता है।"

"भंते मैं तत्त्व की चर्चा नहीं करता। मैं तो व्यवहार की बात कर रहा हूँ?"

"व्यवहार की भूमिका में भी मैं अकेला कहाँ हूँ।"

"भंते आप परिवार विहीन हैं, तो भी अकेले नहीं है ऐसा कैसे कह सकते हैं?"

"मेरा परिवार मेरे साथ है।"

"कहाँ है, भंते। यही तो मैं जानना चाहता हूँ?"

"संवर (निर्विकल्प ध्यान) मेरे पिता हैं, अहिंसा मेरी माता है, ब्रह्मचर्य मेरा भाई है, अनासक्ति मेरी बहन है, शांति मेरी प्रिया है,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवेक मेरा पुत्र है, क्षमा मेरी पुत्री है, उपशम (संयम, वैराग्य या शांत होने की क्रिया) मेरा घर है, सत्य मेरा मित्र समूह है। मेरा समूचा परिवार मेरे साथ निरन्तर घूमता रहता है, तब भी मैं अकेला कैसे हूँ।"

"भंते मुझे घोटाले में मत डालिये मैं अपने मन की उलझन आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ उसे ध्यान से सुनें। आपका शरीर सूचित करता है कि आप चक्रवर्ती हैं और आपकी दिनचर्या बताती है कि आप साधारण मनुष्य हैं। मेरे ज्ञान की सच्चाई का प्रश्न है, जीवन-मरण का प्रश्न है।"

"पुष्प तू ही बता चक्रवर्ती कौन हो सकता है?"

"भंते जिसके आगे-आगे चक्र चलता हो।"

"चक्रवर्ती कौन हो सकता है?"

"भंते जिसके पास बारह योजन में फैली सेना को आश्रय देनेवाला छत्र हो।"

"चक्रवर्ती कौन हो सकता है।?"

"भंते जिसके पास चर्म रत्न होता है, जिससे सबेरे बोया बीज शाम तक पक जाता है।"

"पुष्प तू ऊपर, नीचे, बायें, दायें सब ओर देख ले। धर्म का चक्र मेरे आगे-आगे चल रहा है। आचार मेरा छत्ररत्न हैं, जो समग्र मानव-जाति को आश्रय देने में समर्थ है। भावनायोग मेरा चर्मरत्न है। उसमें जिस क्षण भी बीज बोया जाता है उसी क्षण पक जाता है। क्या मैं चक्रवर्ती नहीं हूँ? क्या तेरी ज्योतिष विद्या में या सामुद्रिक शास्त्र में धर्म-चक्रवर्ती का अस्तित्व ही नहीं है?"

"भंते बहुत ही अच्छा हुआ। मेरा सन्देह दूर हो गया। अब मैं स्वस्थ होकर जाता हूँ।"

भगवान महावीर ने राजगृह की ओर चलना शुरू किया। पुष्प जिस दिशा से आया था, उसी दिशा में वापस लौट गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट : २

पशु-पक्षी बोल पाते तो

किसी भी कृषि-प्रधान देश में खेतों की सम्पदा की रक्षा हेतु पक्षियों का होना वहुत ही जरूरी है। ये पक्षी छोटे-छोटे कीड़ों को खाकर फसल की रक्षा करते हैं। प्रकृति में जब फल पकने आते हैं, तब सुग्गों के झुण्ड निकल पड़ते हैं और वे जीव-जन्तुओं से फलों की रक्षा करते हैं।

महाराष्ट्र का अकोला जिला सुन्दर और चपल सुग्गों के लिए विख्यात है। यहाँ मगरुलपीर के सुग्गे केवल भारत में ही नही सारी दुनियाँ में अपनी विशेषता के लिए जाने जाते हैं। परन्तु अब ये आदमी की लालच के शिकार बन गये हैं। अरब देश के धनवानों को ये सुग्गे इतने प्रिय हैं कि वे उसके लिए मुँह माँगे पैसे देते हैं। ये अरब इन सुग्गों पर जो इतने फिदा हैं वह उनके मांस के लिए नहीं बल्कि उनकी मीठी बोली के लिए। यह बात एक घटना से स्पष्ट हो जायगी। सन् १९८३ में तटस्थ राष्ट्रों का शिखर सम्मेलन पूर्ण हुआ उसके बाद विदेशी मेहमान दिल्ली के बाजारों में घूमने निकले। किसी ने यहाँ की मिठाइयाँ पसन्द की तो किसी ने सुगन्धित इत्र खरीदा। फिर किसी ने होठों को लाल बनानेवाले बनारसी पान खरीदे, पर ईराक से आये प्रतिनिधि मण्डल को जामा मस्जिद के पास एक सुग्गा इतना पसन्द आ गया कि उन्होंने दो हजार रुपये चुकाकर उसे खरीद लिया। यह सुग्गा आदमी की भाँति 'अजान' दे सकता था। नमाज से पहले की घोषणा, 'अजान' देने में तकरीबन दो मिनिट लगते हैं। शुद्ध अरबी भाषा में समूची अजान, बीच में रुके बिना सुग्गा बोलता रहा। यह दृश्य आये हुए प्रतिनिधि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मण्डल के लोगों के लिए आश्चर्यजनक था। मगरुलमीर के इस सुग्गे को चाँदी के पिंजरे में बन्द कर वे उसे विमान में वैठाकर ले गये। लेकिन ४ अप्रैल १९८३ को 'बगदाद पोस्ट' में बड़ी सुर्खियों में उसकी मृत्यु के समाचार छपे। वह सुग्गा ईराक की गर्मी और स्वदेश का विरह सहन न कर सका और उसने अपने प्राण-त्याग दिये।

बम्बई में महात्मा फूले बाजार भारत में सुग्गों के लिये सबसे बड़ा विक्रय केन्द्र है। अकोला, मुर्तिजापुर से सूटकेस में बन्द करके सुग्गे लाये जाते हैं। वाल-सुग्गे जल्दी बोलने लगते हैं। इससे ये बन्द पेटियों में लाये जाते बाल-शुकों में से अनेक तो रास्ते में ही मर जाते हैं। जो जिन्दा रहते हैं उन्हें खरीदकर व्यापारी बोलना सिखाते हैं—'रामराम' या 'अल्लाहो अकबर' आदि। एक महीने में सुग्गा बोलने लगता है। उसके बाद उसे बेच दिया जाता है। इसमें से अधिकतर विदेश पहुँच जाते हैं। दुनिया में भारती-पक्षियों की इतनी अधिक माँग है कि सिंगा-पुर में इन सुग्गों का एक विशेष बाजार है।

पर यह विवरण देनेवाले श्री मुजफ्फर हुसेन पूछते हैं कि "मनुष्य की भाषा में ये पक्षी तो बोल सकते हैं, परन्तु पशु-पक्षियों की भाषा मनुष्य के लिए आज भी अगम्य है। यदि कभी उसे यह भाषा समझ में आ जायगी तो पशु-पक्षियों की ओर से एक बात उसके कानों में पड़ेगी— 'अरे, ओ दो पैर वाले आदमी! तू निर्दयतापूर्वक हमें मार मत डाल। हम तेरे मित्र हैं। कोई भी वुद्धिमान प्राणी अपने मित्र की हत्या कभी भी नहीं करता। हमारी यह बात तू नहीं समझ सकेगा तो कुदरत तुझे विनाश की भाषा में समझा देगी।'"[१]

●

---

१. मराठी दैनिक 'महाराष्ट्र टाइम्स' में प्रकाशित श्री मुजफ्फर हुसेन के विवरण के आधार पर 'भूमिपुत्र' में प्रकाशित लेख से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

डा गुणवंत शाह की अन्य कृतियाँ

कहीं दूर जब दिन ढले (ललित निबन्ध)

गद्य में काव्य, पंक्ति-पंक्ति में सूत्र, चुभता हुआ व्यंग्य, सराबोर कर देने वाला रस प्राप्त करना हो तो इन ललिताओं को पढ़ें ।

करुणामूर्ति बुद्ध

जीव मात्र के प्रति करुणा पर आधारित भगवान बुद्ध के जीवन, धर्म और दर्शन की मर्म कथा ।

सरदार माने सरदार

सरदार बल्लभ भाई पटेल सरलता, समर्पण, त्याग, दृढ़ निश्चय और ओज की प्रतिमूर्ति थे । लेखक ने सरदार पटेल के व्यक्तित्व की उज्ज्वल रेखाओं को इस छोटी सी पुस्तक में चित्रित किया है ।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi